।। श्री गोवर्द्धननाथो विजयते ।।

।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।।

श्री हरिरायजी कृत

बसंत होरी की भाव भावना

अब बसंत पंचमी के दिन प्रथम काम को जन्म भयो है, ताते बसंत रितु और कामदेव आपुस में परम मित्र हैं। जहाँ कामदेव प्रथम मोहिवे को जात है, तहाँ बसंतरितु को प्रथम प्रकास करत हैं। तातें बसंत पंचमी ते खेल द्वारा काम को प्रागट्य है। तातें होरी में सबको ममता होत है तहाँ बसंत के खेल प्रथम दिना १० को खेल और महीना १ ताको अभिप्राय यह है, जो बसंत दिन १० में उद्दीपन लीला है, और महीना १ आलंबन क्रीडा है, तथा बंसत सूँ पूनम ताँई दस दिन में दस प्रकार के भाव हैं तथा बसंत पंचमी के भाव हैं, सो काम को पूजन करत हैं, बहुतक'कामलोक विषे हू अध्यात्मक कौ महादेव जी ने जराइ दीयो, आदि दैविक कामरूप भगवान आप हैं साक्षात् मनमथ के मनमथ। ताते दस दस दिन चारो भक्तन को मनोरथ है, ४० दिन तातें बसंत के दिन दस सात्विकी भक्तन के हैं पाछे फागुन वदि १० तांई दिन दस

राजसी भक्तन के हैं, पाछें दिन दस तामसी भक्तन के फागुन सुदी ५ तांई ता पाछे दिन दस निर्गुन भक्तन के तातें बसंत ते भारी खेल के गुन कहे न जाँइ। डांडों रोपनो सो कंदर्प कों आरोपनो है, सो आगें कहेंगे। फागुन वदी १ ते उतरे दिन १५ तांई। १ मस्तक २ नेत्र ३ अधर ४ कपोल ५ कंठ ६ कुक्ष ७ युग्म ८ उर ९ नाभि १० कटि ११ गुह्य १२ जंघ १३ घोंटु १४ चरण १५ पदांगुष्ट या भाँति उतरे, और फागुन सुदी १ ते बढ़े १ पदंगुष्ट २ चरण ३ घोंटु ४ जंघा ५ गुह्या ६ कटि ७ नाभि ८ उर ९ युग्म १० कुक्ष ११ कंठ १२ कपोल १३ अधर १४ नेत्र १५ मस्तक।

या प्रकार अलौकिक भावात्मक हैं, लौकिक बुद्धि सर्वथा न राखनी आलंबन क्रीडा हे, तातें महीना १ धमारि गवत हैं, और दुपहर के समय पास केसर गुलाल अबीर इतनो ई पास रहे चोवा नांहि, ताको भाव यह है, जहाँ तांई क्रीडा भक्ताधीन हती, सैया पास क्रीडा भगवताधीन तातें चोबा को वस्त्र सब श्वेत यातें जो मुख्य निर्गुन को कर्ता हैं, पाछे अलौकिक गुण संयुक्त के मनोरथ ते भरो दिन दस बसंत झारी में बनाय धरत हैं, सो प्रबोधिनी ते अंकुरित है, भक्त भारी सीतकाल में अनेक मनोरथ करत है, अब बंसत में पुष्प ९ तुफलुक्त भरो होरी में अंगीकार भयो, बसंतरितु को अलौकिक सामग्री सों काम को पूजन करत हैं, सो बसंत रितु भक्त हें कामरूप प्रभु को पूजन करत हैं। तामें सामग्री कहत हें, खिलाइवे की गुलाल पाँच प्रकार को लाल, श्वेत, पीरचो, हरचो, स्याम, श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग वर्ण श्री स्वामिनीजी के श्री मुखचन्द्र ते प्रगटें है, तातें श्री चन्द्रावलीजी नाम हें, तातें श्वेत अबीर गुलाल

को श्री स्वामिनीजी को हास्य कहत हैं, यह भाव हे। हस्यो समस्त गोपीजन को श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी में भाव हैं। तामें दोउ के वर्ण रूप हैं। स्याम स्यामलाजी अष्टसखीन में परन्तु भगवद् सम्बन्धी प्रभु के पक्षपाती हैं, श्रीस्वामिनीजी के काका की बेटी हैं, परम चतुर लीला संबंधी हैं चोबा श्री यमुनाजी को अंग वरण हैं। जिनके प्रभाव ते खेल में विरोधता होइ नांहिं, परम स्नेह परस्पर वढ़े, नाना प्रकार की कंचन की रतन जटित छोटी बड़ी पिचकारी हैं, तातें जिनको केसरि को रंग हैं, तोकों श्री स्वमिनीजी के हृदय को निर्मल प्रेम हें, सो जिनकों भिजावत हैं, सो प्रेमसूं रसबस होई परस्पर खेलत हें।

कुमकुम हे सो काम को अंकुर है। जामें गुलाल भरिकें मारत हें, तिनको काम रूप स्नेह श्री ठाकुरजी में बहुत हे और रोरी हे, सो होरी में मुख मांडत हैं, व्याह कृत करिकें, तातें श्री स्वामिनीजी की सखी विसाखा रूप हैं। और हरदी हू पीसि के लगावत हें, सोउ व्याह संबंधनी हें, सो भामा सखी रूप हें। और तेल फुलेल श्रीस्वामिनीजी कों स्नेह सचिंकन हें, और जो गेंद फूलन की सो अपने अपने जूथ में हू होत हें, सो परम चतुर हें जहाँ जात हें। तहाँ खेल को परस्पर आनंद रूप लराई ही करावत हैं। और नवविलासी हैं सो परम कोमल सुकुमारता की अवधि हैं, सोऊ खेल में आई हैं, और फूलन की छरी डंडा हें, सो परम निकट श्री ठाकुरजी ब्रजभक्तन के जूथ एक ठोरे होत हे, तब तिनको काम परत है परस्पर मार मार करिकें धूम मचावत हैं, और ब्रजभक्तन के हाथ में बाँस हू हें, सो बड़े बड़े जोधा गोप हें, सो हाथ में जेरी

लीए ठाढ़े हैं, सो रंग पिचकारी गेंद छरी ते रंचक नांही डरपत, तिनको बांस लेकें स्थल सूं भजाई देत हैं, या प्रकार होरी में जितनी सामग्री हैं, सो सब भावरूप ही हैं। परम अलौकिक पदारथ हैं।

अब अनेक बाजे को भाव कहत हैः-

१.बीनः- श्री स्वामिनीजी के संयोग समें कुंज में **२. मुरलीः**- श्री स्वामिनीजी के वियोग समें **३.अमृत कुंडलीः**- श्रुतिरूपान के वियोग समें **४.जल तरंगः**-श्रुतिरूपान के वियोग समें **५.मदनभेरिः**-श्रुतिरूपा राजसी **६.थोंसाः**- श्रुतिरूपान तामसी **७.दुंदुभी** - श्रुतिरूपा सात्वकी **८ निसांन** - कुमारिका सात्वकी **९** घंटाः- कुमारिका सात्वकी **१०.संखः**- कुमारिका सात्वकी **११.घंटाः**- कुमारिका सात्वकी **१२.मुखचंगः**-कुमारिका सात्वकी **१३.श्रृंगभेरिः**- कुमारिका राजस **१४.खंजरीः**- कुमारिका राजस सात्वक **१५.राय गिरगिरीः**- कुमारिका राजस तामस सात्वक **१६.तालः**- कुमारिका राजस तामस **१७.कठतालः**- कुमारिका राजस **१८ मजीराः**-कुमारिका तामस सात्वक **१९.महूसरिः**- कुमारिका राजस तामस जो कुमारिका में तामस तामस नांहीं हैं **२०.थारीः**- श्रुतिरूपासात्वक राजस **२१.झालरिः**-श्रुतिरूपा सात्वक सात्वक **२२.ढोलः**- श्रुतिरूपा सात्वक तामस **२३.डफः**- श्रुतिरूपा सात्वक **२४.डिमडिमीः**- श्रुतिरूपा राजस सात्वक **२५.झांझिः**- श्रुतिरूपा राजस **२६.राय गिरीगिरीः**- श्रुतिरूपा तामस सात्वक **२७.पित्रकः**-श्रुतिरूपा तामस राजस **२८.रबाबः**- श्रुतिरूपा तामस राजस सात्वक **२९.जंत्रः**- श्रुतिरूपा तामस राजस सात्वक

३०.मृदंगः- श्री ललिताजी रास में **३१.सहनाईः-**श्री यमुनाजी मधुरेसुर **३२.श्रीमंडलः-** विसाखाजी सुर देत हें **३३.दुधाराः-** स्यामलाजी सखी **३४.करतालः-** श्री भामाजी **३५.सारंगीः-** चंपकलता सखी **३६.तुरहीः-** काम सखी **३७.किंनरीः-** सहचरी आदि।

या प्रकार अनेक बाजे लीला संबंधी हें। होरी में सर्व वस्तु भावात्मक हें, महारास रूप अलोकिक जो कोउ सखी नंदरायजी के बसंत को साज करि आवत हें। कोउ सखी वृषभानजी कीरतिजी को जाचत है, तहाँ कीरतिजी के पास जाइ ललिता विसाखा आदि अत्यन्त मधुर वचन सों कहत हें, जो हे श्री कीरतिजी आज बसंत को दिन प्रथम खेल को हैं, अपने अपने घरते हम तुमारे पास विनती करन आई हे, तातें अपनी बेटी को हमारे संग भेज देहु तो हम सखीन में परस्पर होरी खेलें तब श्री कीरतिजी हु प्रसन्न होइकें श्री स्वामिनीजी को अभ्यंग स्नान कराय नव नौतन बसन आभूषन पहराइ पाछे नाना प्रकार के भोजन सखीन संग कराई खेलन की साज गुलाल अबीर केसरि को रंग आदि पिचकारी आदि सबन सों दैके पाछें ललितादिक अष्टसखीन सों कही, जो देखियो मेरी बेटी परम सुकुमार अत्यंत भोरी है, खेल में कहूँ अकेली मत छोड़ियों। तब सब ने कह्यो जो हे श्री कीरति जी यह तुम्हारी बेटी है, सो हमको प्रानप्रिय हें, तातें तुम रंचक हू बेटी की चिंता मति करो, हम अपने प्रान की नांई आछी भाँतिसों राखेंगी।

या भाँति अष्टसखीयाँ श्री कीरतिजी को भलीभाँति समाधान करिके पाछें श्री स्वामिनीजी को ले चली, सो बसन्त को साज सिद्धि

करिकें श्री नंदरायजी के घरकों समाज सहित चलीं हें। एक कंचन को कलस जामें जल कुंज रूप तापर खजूरि की डार सो हस्त रूप। तामें बोर सो आभूषण रूप, तापर सरस्यों के फूल मुखारविंद रसमें फूल आदि तथा भारी भक्तरूप और ऊपर लाल वस्त्र वेष्टित सारी रूप और ऊपर गुलाल अबीर छिरकें हें, ऊपर पीरो वस्त्र अपने अंचल सों कुच रूप ढापे हे, जो केवल प्रभु अंगीकार करिवे योग्य हें, यह बसन्त की सामग्री प्रभु को दिखाई अपने हृदय को अभिप्राय जनायो।

या प्रकार गोपीजन श्री स्वामिनीजी कों आगें पधराय श्री नंदरायजी के घर को चले हें, इहाँ श्री रोहिनीजी पहले ही जानत हती, जो आजु गोपी बसंत खिलाइबे कों आवेंगी, तातें रात्रि में उठि राजभोग की सामग्री सिद्धि करि राखी हती, पाछें प्रातः काल श्री यसोदाजी श्री ठाकुरजी को बहुत विधि सों जगायें, हे वत्स ! हे लाल ! भोर भयो है, चिरैया बोली, गाय, बछरा, सखा सब तुमारो मारग देखत हें, सुंदरवदन कमल मोकों दिखावो नाना प्रकार की मंगला की सामग्री सिद्धि करि राखी है, ऐसे अनेक जतन किये। परि तोहू श्री ठाकुरजी जागे नांही, तब श्री यसोदाजी ने कही, जो आज बसंत पंचमी हें, गोपी बसंत कों आवेगी, तातें हे

पुत्र स्नान श्रृंगार करों, इतनों सुनत ही श्री ठाकुरजी चोंकि परे सो उठिकें बैठे, और कहें मैया गोपी कब बसन्त खेलिवे कों आवेंगी, तब श्री यशोदाजी आप गोद में उठाइ हृदय सों लगाई मुख चुंबन करि सुंदर सिंधासन पर पधराइ मंगला भोग आगे राखें पाछें स्नान

की त्यारी करी ताही समय श्री स्वामिनीजी ब्रजभक्तन के जूथ सहित आबत भई, तब श्री यसोदाजी रोहिनीजी अत्यन्त आनन्द सों परम प्रीतिसों सबन कों अपनें घर में पधरायें, पाछें श्री स्वामिनीजी नें श्री हस्त सो श्री ठाकुरजी कों अभ्यंग करिकें स्नान कराइ पाछें कोमल वस्त्र सों श्री अंग अंगोछि नाना प्रकार के श्रृंगार धराये स्वेत वागा कुलह पाग चुन्नी के आभूषन पहरे, या प्रकार श्रृंगार करि पाछें श्रृंगार में गोपी बल्लभ अपने मनोरथ की सामग्री आरोगे। पाछें तत्काल ही राजभोग श्री रोहिनीजी सिद्व करिकें लाई तब श्री यसोदाजी श्री रोहिनीजी पर बहुत प्रसन्न भई। कह्यो तुम्हारो स्नेह मेरे कान्हा पर बहुत हैं, मैं जानत हों। पाछे श्री नन्दरायजी श्री ठाकुरजी कों श्री बलदेंव जी को गोद में ले नाना प्रकार के मनुहार करि जिमावत हें। और नन्द उपनन्द आदिक गोप सब श्री नन्दराइजी के संग बेठि कें भोजन करत हें। या प्रकार भोजन करि हाथ धोइ बीरी आरोगावत हें।

पाछें श्रीयसोदाजी श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी सबरे ब्रजभक्त भीतर भोजन परम भाव संयुक्त करि जल अचवाय बीरी देत हैं। आरती करत हैं। पाछे श्री नन्दरायजी बड़े आंगन रतन खचित हे। तहाँ श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी श्री नंदरायजी श्री यसोदाजी गोपी ग्बाल सब पधारे हें, तहाँ श्रीयसोदाजी अपने पुत्र को गोद में लीये हैं

श्रीस्वामिनीजी अपने संग की सखी आदि बसन्त को साज ले श्री ठाकुरजी कों खिलावत है। तब श्री यसोदाजी के आगें रंच रंच बागा पें खिलाइकें कुंमकुम को तिलक कीयो हें। पाग पर रंचक गुलाल छिरकि कछु थोरो श्रीजसोदाजी पर छिरकें हें। तब श्री जसोदाजी नें

कही प्रथम खेंल सब गोपी ग्वाल सब मेरे आँगन में खेलो।

तब श्री बलदेवजी सहित नंदरायजी आदि नो नंद अनेक गोप गोपी श्री बलदेवजी को आगें करिकें खेलन लागे। श्री यसोदाजी सो एक ओर सब गोपी श्री स्वामिनीजी को आगें मुखिया करि खेलन लागी। श्रीयसोदाजी सबते बचिकें न्यारी ठाढ़ी भई। एक छोटी सी कनक पिचकारी रंग सो भरिकें श्रीठाकुरजी के हाथ में रही तासों सखीन को निकट बुलाइ के श्री ठाकुरजी सों छिरकाई। तब श्री ठाकुरजी कहें मैया मैं सब गोपीन को छिरकिवे कों जाऊ। तब श्री यसोदाजी नें बरजें कही, पुत्र भीर बहुत है, या भाँति समुझाइकें राखे। पाछै श्रीनंदरायजी, श्रीबलदेवजी सब गोप गोपी आछी भाँतिसों बसंत खेलें तब ललिताजी नें श्री स्वामिनीजी सों पूछी। तुम क्यों न्यारी ठाढ़ी हों ? बसंत खेलो । तब श्री स्वामिनीजी ने ललिताजी सों कह्यो मैं तो तबही बसंत खेलोंगी। तब ये श्री नंदरायजी के पुत्र जो श्री यसोदाजी की गोद में है, सो खेलेगें। तिनके संग खेलोंगी, ब्रज में चलोगी तबही बसन्त होरी खेलन को सुख होयगों तब ललिता बिसाखा दोऊ श्री यसोदाजी के निकट आइ हाथ जोरिकें बिनती करन लागी जो आज बसन्त को प्रथम दिन खेल को आरम्भ हें। तातें हे श्री जसोदाजी सर्व प्रथम

तुमकों छिरक्यों चाहत हें काहे ते तुमने ऐसो पुत्र जायो। यह तुम्हारो पुत्र सबकों प्रानप्रिय हें, ओर परम सुकुमार हें, अत्यन्त सूधो भोरो है, कुछ छल चतुराई नांहीं जानत हें। सो मैं आछी भाँतिसो जानत हों, तातें तुम अपने पुत्रको मौको देहु तब सब

तुमको छिरकेंगे। काहे ते ? तुमारे पुत्र ऊपर बहुत रंग न परेगों यासों इनको सीत न लगेगो। यह सुनिकें श्री यसोदाजी बहुत प्रसन्न भई, कही ललिता तू मेरे मन की जानत हैं, और मैं जानत हों, तू मेंरे पुत्र को आछी भाँति सों राखत है तब श्री यसोदाजी ने ललिता की गोद में श्री ठाकुरजी को दीये । तब ललिता दूरि लेकें ठाढ़ी भई।

पाछें सब सखीन सहित श्री स्वामिनीजी ने श्री यसोदाजी को आछी भाँति सों छिरकें, तब श्री नंदरायजी बहुत प्रसन्न होइकें गोपीन को मेवा वागा आभूषन बसन पहराये, पाछें श्री यसोदाजी अत्यन्त प्रसन्न होइकें नाना प्रकार की मेवा मिठाई नाना प्रकार के वस्त्र आभूषण श्रीस्वामिनीजी को सब सखीन सहित पहराई तहाँ श्री बृषभानजी के गोप हू हते। सो श्री नंदरायजी को बहुत छिरके आछी भाँतिसों इतने में ललिताजी नें श्री यसोदाजी सों विनती करी जो आज परम उत्सव को बसन्त पंचमी को दिन हैं ताते तुम अपने पुत्र को आज्ञा देहु तो ब्रज में बसन्त खिलावें। और तुमारे पुत्र को रंचक हू श्रम न होइगो। उसी भाँति राखेगें काहेते तुमारे पुत्र ते हमारी परम सोभा होत हे, तातें हम तुम सों विनती करत हैं। तब श्री यसोदाजी नें प्रसन्न होइके कही । जो हे ललिता तू मोहू को परम प्रिय हैं। तातें तेरो वचन टारचों नाहीं जात है, और मैं यह जानत हों, मेरे कन्हैया को तुम आछी भाँति राखोगी, या भाँति श्री यसोदाजी ने ललिताजी सों कहीं पाछें श्री ठाकुरजी को मुख चुंबन करिकें पूछें, अहो मेरे लाल ! प्रान के जीवन, मेरे हदय के भूषन, मेरे नेनन के तारे, मेरे ग्रह के दीपक, अहोवत्स ! यह

ललिता बसंत खेलिवे को ब्रज में कहत हैं, तुमारो मन होय तो तुम मेरे पास रहो, और तुमारो मन होय तो तुम ललिता के संग बसन्त खेलिबे को जाओ, तब श्री ठाकुरजी ने कही मैया मैं ललिता के संग बसन्त खेलूँगो। मोकों ललिता बहुत आछी भाँति राखत हैं। यह श्री ठाकुरजी के वचन श्री यशोदा सुनि कर श्री बलदेवजी को निकट बुलाइकें कही, जो तुम मेरे कन्हैयाँ के संग जाओ। गोपी बसन्त खेलिवे को ब्रज जात हैं, तुम मेरें कन्हैयाँ को लीये न्यारे ठाढ़े रहियो। बड़े बड़े गोप गोपी खेलेंगे तहाँ भीर में लेके मति जइयो । तब श्री बलदेबजी ने कही मैं कन्हैयाँ के संग जाऊँगो तुम कछु चिंता मति करो, मैं आछी भाँति राखूँगों। पाछे श्री यसोदाजी अन्तरंगी सखी बुलाइकें मेवा मिठाई देंके कही, जो उहाँ मेरां पुत्र भूखो होइ तब अरोगाइयो। और आछी भाँति सों राखियो तुम्हारे भरोसे मैं अपने कान्हा को पठावति हों, पाछे श्री यसोदाजी ने बड़े बड़े गोपन को बुलाइके कही, जो मेरो कन्हैयाँ या ब्रज में बसन्त खेलन जात हैं। सो गोपी नव जोवन उनमत हैं। और कन्हैयाँ मेरो परम सुकमार हैं। अत्यन्त चंचल हैं, कहूँ भीर में न जाय ऐसे राखियो कोई गोपीन को निकट मति आइवे दीजों,मेरे पुत्र की रक्षा कीजियों। तुम अपने ही संग खिलाइयों या प्रकार श्री यसोदाजी ने सबन ते कही, पाछें श्री नंदरायजी ने अपने सस्त्रधारी गोप श्री ठाकुरजी के संग दीये रक्षा करनार्थ।

या प्रकार गोप गोपी सखा श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजी सहित गोकुल की गलिन में पधारे, किलकार सुनत ही अपने अपनें द्वार तें स्त्री पुरूष बसन्त खेलन को निकसे । तब श्री ठाकुरजी

ललिताजी की गोद में ते उतरिकें श्री बलदेवजी के पास आइकें कहीं, अरे भैया हो मेरे बाबा की ओर के सखा जो हों सो मेरी ओर आवो, और बृषभान पुरा की गोपी सो सगरी एक ओर होउ, तब बसन्त खेलिंगे।

इतनो सुनत ही श्रीस्वामिनीजी अत्यन्त प्रसन्न होइकें अपने सखीन के झुंड सहित श्री ठाकुरजी के सनमुख ठाढ़ी भई और इत माहू श्री ठाकुरजी श्री बलदेवजी सखान सहित अपने जूथ में ठाढ़े भयें, तब श्री ठाकुरजी ने प्रथम केसरि की पिचकारी भरिके चलाई, पाछें अबीर गुलाल की पोटरी चलाई पाछे, श्री बलदेवजी नें सखान सहित गुलाल उड़ायो, उनकी ओर श्री स्वामिनीजी नें सखीन सहित गुलाल उड़ायो, उनकी सो गगन में मानो अरूण स्वेत पीरे बादर छाइ रहे है। ऐसो गुलाल उड़ायो सो सूर्य छिप गयों, तब श्री ठाकुरजी नें अपने श्री हस्त की छोटी पिचकारी जो श्रीयसोदाजी नें दई हती, सो धरिकें श्रीदामा के हस्त में बड़ी पिचकारी हती, सो लेकें झट गोपीन के झुंड में बेठि गए, सो काहू के हार तोरे, काहू की चोली फारी, काहू की भुजा मरोरी, काहू के कपोल चुंबन कीए, काहू के कपोलन में गुलाल लगायों, काहू के अंचल उलटे कीये फारे, काहू को केसर रंग सो भिजाय, काहू को आलिंगन दीये, काहू को अधरामृत पान कराये। पाछें अपनें जूथ में फेरि आइ ठाढ़े भये। गोपीन नें बहुत जतन कीये परन्तु काहू के हाथ न आये। अत्यन्त चंचल ? सो श्री बलदेवजी के पास आइ ठाढ़े भये, तब श्री बलदेवजी नें पूछें जो तुम कहाँ गये हते? तब श्री ठाकुरजी कहे, जो श्रीदामा पास मेरी पिचकारी हती सो लेन गयो हतो। यह

सुनिके श्री बलदेवजी चुप होइ रहे। और गोपी वचन की चातुरी सो सुनिकें मुसिक्यानी तब श्री स्वामिनीजी नें कही देखो ललिता यह नंद को ढ़ोटा अत्यन्त चपल हैं अपनो दाव यह ले गयो है। अब ऐसो जतन विचारो जो श्री ठाकुरजी कों और श्रीबलदेवजी कों दोउन को संग पकरि लाइये यह सुनिकें गोपी सगरी कोपी।

इहाँ श्रीठाकुरजी ने श्रीबलदेबजी सों कह्यो जो - हे दाऊजी ! अब साबधान रहियो, हम तुम पर गोपी कोपी हैं, कहू पकरेगी तो अनेक नाँच नचावेगी। तब श्री बलदेवजी ने कह्यो जो में सावधान हों, तुम अपने को सावधान रहियों ,इहाँ श्रीस्वामिनीजी की एक सखी सुबल को भेष बनि सुबल सखा होई श्रीबलदेवजी के कान में कह्यो जो तुमारे ऊपर सखी आवत हैं। सो तुम श्रीकृष्ण के भरोसे मति रहियो। यह तो बड़ो छली है। तुमको पकराइकें आपु भाजि जाइगों। तातें तुम मेरे संग चलों तो मैं तुमको बचाउँगो तब श्री बलदेवजी कहे- है भैया सुबल तू मोकों बचाई कृष्ण तो बड़ो छली हैं, मोकों पकराइकें आपु भाजि जाइगो तातें तू मोको आपने साथ ले चलि भंग की तरंग में मस्त भये श्रीबलदेवजी कों या प्रकार सखियन नें अपने जूथ में ले जाइकें पकराये।

इहाँ श्री ठाकुरजी श्री बलदेवजी को ढूंढ़न लागे, इतने में ललिता परम चतुर अत्यन्त चंचल है, सो पीछे से आयकें श्री ठाकुरजी को पकरिकें अपनें जूथ में ले गई, सखा सब दूरि भाजि गये। तब श्री स्वामिनीजी नें श्रीठाकुरजी को मुख रोरी हरदी गुलाल सो मांड्यों केसरि के बेंदा दीये सर्वांग परस कीए। एक

सखी ने श्री बलदेवजी को मुख मांड्यों। केसरि के रंग सों छिरके पाछें श्री चन्द्रावलीजी ने श्रीस्वामिनीजी सों कह्यो जो आजु तो पहलो दिन है प्रथम खेल को हे ताते वोहोत छिरको मती । जो कहूँ श्री यसोदाजी सूनेगी तो कल तें खेलिवे को न पठावेंगीं। यह सुनिकें श्री चन्द्रावलीजी सों श्री स्वामिनीजी बहुत प्रसन्न भई। पाछें श्री मुख मांड्यों हो सो अपने अंचल सों पोछयो। एक कुमकुम को तिलक कीये वस्त्र वागो छिरके हे, सो सब दूसरे पहराये, जैसो प्रथम पहरे हते, तेसो श्रृंगार करि श्री स्वामिनीजी के मनोरथ की सामग्री सो श्री ठाकुरजी को अरोगाई ताही भावते बसंत पंचमी के उत्सव को भोग आवें, पाछें सिंघासन पे ही खिलावें, यह भाव हें। इतनें ही में ललिताजी आइके एक ओर श्री स्वामिनीजी को गोद मे उठाइ लीये। पीछे सबन सों कही जो अब बहुत बेर भई है, श्री जसोदाजी खीजेगी, सबेरे फेरि खेलन को न आवन देंइगी। ऐसे कहि श्री यसोदाजी के पास कों परम प्रेंमवस होकें होले होले चलत हे। और श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी परस्पर मन्द मन्द मुस्किात है। सखी आगें नृत्य करत जात हें आस पास सखी नाना प्रकार की गारी ऊँचे सुर सो देत हे, और चली जात हें, दोऊ ओर के बाजा ताल, मृदंग, झांझ, डफ, सहनाई ,ढोल, दुंदुभी, बांसुरी, मुखचंग नफीरी, इत्यादिक बाजत हें। परम आनन्द के रस में सगरे ब्रज के लोग हें, या प्रकार श्री नन्दरायजी के घर पधारत हे सो कैसी उपमा भई, मानो एक नोतन कोटानिकोटि दामिनी ने चन्द्रमा घेरयो है।

सो कुलाहल सुनिके श्रीयसोदजी परम आनन्दायइकें आरती उतारी,राई लोन वारि अनेक न्यौछावरि आभूषन वस्त्र अनेक

जाचकन को देत हे। पाछें श्री ठाकुरजी को और श्री स्वामिनीजी को गोद में ले श्री बलदेवजी को गोद में ले मंदिर में पधरायें। सुदंर सिंघासन पर श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी को पधराइ दोऊन को नानाप्रकार की सामग्री प्रेम पूर्वक आरोगाये, तब ताही समय ललिताजी नें श्री यसोदाजी सों कह्यो जो हे जसोदाजी तुमारे पुत्र को में बहुत आछी भाँतिसों राखत हों। देखो सबके वस्त्र भीजे हे, तुमारे पुत्र के सूखे हें, तब श्री यसोदाजी प्रसन्न होइकें बोली -जो हे ललिता ! मैं तुमारे भरोसें अपनें पुत्र को पठावति हों मैं जान्नत हो, तुम्हारो स्नेह कन्हैयाँ पर बोहोत है, तब श्री बलदेवजी बोले -- हे मैया ! तुम्हारे पुत्र को तो मैंने आछे राख्यो हो, ललितादिक गोपी जो मोहुको तथा श्रीकृष्ण कों हू पकरि ले गई, सो बोहोत छिरके और मुख मांड्यों और अनेक भाँति की खोटी खोटी गारी दीनी हे। ताते यह ललिता तो झूँठी है, तुम्हारे आगें बात बनावति हैं, तब श्री जसोदाजी नें ललिताजी सों कही, जो तू मेरे कन्हैयाँ को बोहोत श्रम करायों हे, मै तुमको अपनो जानिकें पुत्र को तुम्हारे भरोसे पठायो हो, अब मैं अपने पुत्र को कबहूँ न पठाउँगी। मेरो सुकुमार भोरो बालक हे, तब ललिताजी श्री ठाकुरजी की और देखिके स्नेह में कह्यो जो अब तुम हमको साँची करो, नांहीं तो ऐसे होरी कलि ते कैसें खेल बनेगो। तब श्री ठाकुरजी कहे जो मैया दाऊजी तो झूँठो हैं। दऊजी सो और गोपिन सों खेलन में परस्पर झगरो भयो है, ताते ललिता को दोष झूँठो ही देत है, इतने में मधुमंगल बोल्यो -जो हे श्रीयसोदाजी ! तुम श्री बलदेवजी के वचन कों भलो बिसवास कीयो। इनकों अपने सरीर की सुधि हू तो रहे नाही है, श्री

ललिताजी श्री ठाकुरजी को तुम्हारे आगें गोद में लीये आई है। इतने में और सखी गोप कहे, जो जसोदाजी ललितादिक गोपीन सों तो तिहारे पुत्र को बहुत स्नेह है, ताते ललिता साँची है।

तब श्री यसोदाजी ललिता पर बहोत प्रसन्न भई, पाछें मेवा मिठाई वस्त्र आभूषन नाना प्रकार के गोपीन गोप सहित पहराय विदा किये, और वोहत विनती किये जो धन्य भाग्य हमारो है। जो तुम सगरी गोपी हमारे घर आवत हो, मेरे कठिन के बचन को बुरो मति मानियों, मैं तुम्हारी सबकी आज्ञाकारिनी हो । कल फेरि इन गली खेलन को आइयों, कीरतिरानी बृषभान राजा सों हमारी पालागन कहियों। तब श्री स्वामिनीजी श्री यसोदाजी के पांइ छुइकें उठी तब श्री यसोदाजी असीस दीये, जो अचल तुम्हारो सुहाग होइ, या प्रकार श्रीस्वामिनीजी सखीन सहित अपने घर पधारी, तहाँ श्री कीरतिजीनें द्वारा पर आई आरती करि घर में पधराइ नाना प्रकार की सामिग्री अरोगाइकें सैन कराये।

इहाँ श्री बलदेवजी, श्री ठाकुरजी सो कहे जो तुमने मोको श्री यशोदाजी के आगे झूठो कीयो। मैं तुम्हारे संग अब कबहू खेलन को न चलूँगो तब श्री ठाकुरजी ने श्री बलदेवजी सो कही - जो हे दाउजी ? तुम तो सदाँई साँचे हो, परन्तु तुम घर के हो, दोइ बात कही तो चिंता नांही परि बहिर सों आवें ताको सनमान करचो ही चाहियें। मोकों तो तुमही आछे राखत हो, हम तुमतो सदाँ इकही है। यह सुनिकें श्री बलदेवजी मुसिकायकें चुप होइ रहे। पाछें श्री यसोदाजी सखीन को गोपन को भोजन कराय विदा कीये। अष्टसखी आदि अंतरंगी पास रही तब अन्तरंगी सखीन को बोहोत भाँति

सनमान करि आइ, पाछे सुन्दर सैज्या बिछाइकै श्री ठाकुरजी कों गोद में ले बैठी, पाछे श्री यशोदाजी, श्री ठाकूरजी को गोद में ले बैठी, पाछे श्री यसोदाजी, श्री ठाकूरजीको मुख चुंबन करि अनेक प्रकार सों पालम करि पूछे - हे पुत्र ! तुम्हारो मन गाय चरावन को है कि होरी खेलन को है ? श्री ठाकुरजी बालभाव सो श्री यशोदाजी के ग्रीवा में हाथ मेलिके कहें - मैया मै बसन्त होरी खेलूँगो, गाय चरावन को बसन्त होरी के दिन मैं नांय जाऊँगो। तब श्री यशोदाजी, श्री ठाकुरजी सों मुख चूमिकें बोली जो बोहोत आछो। गाय होरी ताँई और कोई चरावेगो, तुम ललिता संग होरी खेलियों, तब श्री ठाकुरजी बोले, मैया जब गोपी जन बसन्त होरी खेलि चुकत हैं, तब मोपे फगुवा माँगत है, सो मेरे पास तो कछु हे नांही, सो मोको बहुत खिजावत है, जो नन्द यसोदा राजा रानी कहावत है परन्तु बड़े कृपन है ! एक पुत्र बड़ें भागिन ते पायौ है ताहूको कछु देत नांही, या प्रकार तुमको और बाबा को गारी देत है, और मोकों बहुत खिजावत है, तब श्री यशोदाजी आपने आगें भण्डार की कूची ले श्री दामा को बुलाईके, कूंची हाथ में देकें कही जो होरी बसन्त खेलन को जो जो मेरी कन्हैयाँ ते कछु कहें सो मेरे बिना पूछे आभूषण वस्त्र मेवा मिठाई जो चाहे सो ले जइयो। तब श्री ठाकुरजी और श्रीदामा सखा श्री यसोदाजी पर तो बोहोत प्रसन्न भये, पाछें श्री दामा अपने अपने घर आये श्री ठाकुरजी सयन किये । पाछें रात्रि को हू कुंजन में बसन्त होरी खेलत है, यह मनमें अनुभव करनो जोग्य है। तातें प्रकास नाहीं कियो है।

अब पुनः ब्रज खेल वरनन करत है। पाछें फेरि प्रातः काल

भयौ तब सगरी सखी वृषभानपुर की इकठोरी होइकें श्री कीरति रानीजी के निकट गई, तब श्री कीरतिरानी सखीन सहित मिलिकें अपनी वेटी कों स्नान कराय नाना प्रकार की सामिग्री सखीन सहित आरोगाई। पाछे परम आनन्द सो सखीन के संग बिदा करी ,तव श्री स्वामिनीजी सखीन सहित श्री नन्दरायजी के घर गई । तब श्री यसोदाजी मंगल भोग अरोगाइ आरती कीये पाछे श्री स्वामिनीजी सखीन सहित मिलिकें अस्नान कराय अपनी रूचि को श्रृंगार बनाये। पाछे राजभोग आरोगाइ श्री यशोदाजी ने आरती करिकें खेलन को साज सब सखीन को सौपिकें कही, जो मेरो पुत्र अत्यन्त सुकुमार है,बालक है, यामें कछु छल चतुराई नहीं हैं, ताते याकी बहुत ही सावधानी राखियौ तब ललिता ने श्री यशोदाजी सों कही - जो तुम अपने पुत्र की चिन्ता मत करौ, मैं आछी भाँतिसों राखोंगी, तब श्री यशोदाजी ने प्रसन्न होइकें बिदा किये, तब श्री ठाकुरजी ब्रज में आइकै कहे जो आजु माह सुदी ६ है, सों छैहों रितु बसन्त संयुक्त श्री वृन्दाबन में खेलेंगे। तब सगरे श्री वृन्दावन में पधारे। तहाँ नाना प्रकार के फूल फूले हैं। भँवरा गुंजार करत है, गिरिराज में ते अनेक झरना झरति है, तहाँ सदांई बसन्त ऋतु बसत हैं। तहाँ बसन्त रितु कहावत है, जहाँ की महिमा ब्रह्मा,शिव, इन्द्र, सरिके नांही पावत हैं, तहाँ श्री ठाकुरजी पधारिकें यह मनोरथ कीयौ, जो आज दाव पाऊँ तो अरून गुलाल गोपीन के मुख में मेलों और श्री राधा है तिनकें मुखारबिंद में लगाऊँ, और श्री स्वामिनीजी ने उहाँ अपने मन में मनोरथ कियौ, सो मैं आज दाव पाऊँ तो श्री ठाकुरजी के मुखारविन्द में पीरो गुलाल लगाऊँ। या भाँति दोऊ

मनोरथ करि पाछे मिलिकें परस्पर बसन्त खेलन लागे,इतने ही में श्री रेवतीजी जूथ सहित पधारीं तहाँ यह संदेह होइ जों इनकों ब्याह तो द्वारिका लीला में भयों है, यह ब्रज में कैसे आई ? तहाँ समाधान करत है। जो इहाँ ब्रज में सगरे आधिदैविक पदार्थ है। इहाँ की छटा ते सगरे त्रिलोकी में पदार्थ भयौ है। श्री ठाकुरजी अंतरध्यान लीला करें, पाछें ब्रजनाभ द्वारिका के भक्तन को लैके आए है, तब श्री कालिन्दीजी द्वारा सबको आदिदैविक स्वरूप दो स्वरूप देखें हैं, उद्धव कुमसमोखर पर प्रगट होइ श्री भगावान ते कहे सो ब्रज में आधिदैविक उद्धवजी हू हैं। अध्यात्म से बद्रिकाश्रम गऐ, तैसे ही पुष्टि श्रुति रूप ब्रत में श्री बलदेवजी के भक्त तातें श्री रेवतीजी द्वारिका में है। तिनकों आधिदैविक श्री रेवतीजी अपने जूथ सहित मर्चादा श्रुतिरूप ब्रज में है, तिनसों नित्य श्री बलदेवजी सो बिहार है, ओर ओतारादिक हूँ आधिदैविक है, नरसिंघ, परशुराम, श्री रामचन्द्रजी, श्री बाावन, सब हरि मर्यादा रूप है याही भाँति द्वारिका की लीला हूँ मर्यादा रूप है। तातें गारी में सर्व द्वारिका की लीला कहिकें गारी देत है। ताहू में संदेह न करनों इहां सुभद्रा आदि अर्जुन सब है सतिभामा रूक्मिनी रसरूप है। तब श्री ठाकुरजी, श्री रेवतीजी को देखिकें दोउ हाथ सों तारी बजाइकें कहे, जो आछो भयो, भाभी होरी खेलन आई है अब दाऊजी भाभी के संग बसन्त खेलेंगे। और में ब्रजभक्तन के संग बसन्त खेलूँगो। या भाँति श्री ठाकुरजी कहे, तब यह बानी सुनिके सगरे गोप गोपी हँसे, तब श्री बलदेवजी क्रोध होइकें बोले- हे मुग्ध कृष्ण ! तोको लाज नांही है। तू मेरी हू हँसी करत हैं, तब

श्री ठाकुरजी नीचो मुख करिके चतुराइ से कहें जो भैया तुम्हारी हँसी मैंने कहा करी है ? जो मेरो विवाह भयों होतो तो में हूँ अपनी बहू के संग खेलतो। अब मैं अपने ब्रज भक्तन के संग खेलो यामें दाऊजी तुम भाभी संग खेलो हँसी काहे की। यामें तो हमारी तुमारी परम सोभा है, यह सुनिकें श्री बलदेवजी, श्री कृष्ण कूं भोरो जानिके हृदय सों लगाइ लियो । तब सगरे गोप गोपी हँसें तब श्री रेवतीजी सकुचाइकें न्यारी ठाढ़ी भई, तब ललिता ने श्री रेवतीजी के निकट जाइकें कह्यों जो बसन्त होरी के दिनन में ऐसी लाज नाहीं चाहियें, तातें आछे प्रसन्न होयके खुलिकें बसन्त होरी खेलो जो न्यारे खेलत लाज लागे तो तुम हमारे संग मिलिकें परम आनंद सो बसन्त होरी खेलो, तब श्री रेवतीजी सखीन सहित जूथ में आइकें खेलन लागी तहाँ कोई सखी-सखा गोप रंग सों छिरकी गुलाल लगाई नाना प्रकार के नाच नचाय तब छोड़त है, और कोई गोप सखा सखीन के झुँड मे जाय परे है। तिनके गोपी वस्त्र छीनके गुलाल लगाइ सारी लँहगा पहराय नेंत्रन में अंजन दैके छोड़त है, ताई समय मधुमंगल होरी खेलि समाज देखिके प्रेम में उनमत होय नाचत -नाचत गोपीन के जूथ में जाइ परयौ, तब सब गोपी प्रसन्न होइके मधुमंगल को अरगजा गुलाल सों छिरकन लागीं, तब एक सखी बोली जो यह मधुमंगल सखा बड़ौ छैला है, याहि अरगजा सों क्यों छिरकत हो, याने माखन चोरी लीला में श्री ठाकुरजी के संग हमारे घर में बहुत विगार कियौ है। ताते याकी देह में घी, माखन इत्यादिक लगावों। तब सब सखी हँसिके मधुमंगल के कपरा छीन घी, माखन देह सो

पोतन लागी, तब मधु-मंगल सखा नें श्री ठाकुरजी सो पुकारि के कही, हे भैया श्री कृष्ण ! तुम मोको छुड़इयो मोको गोपी घी लगावत है।

तब प्रेम में बूड़ि गयो कहीं मोको धी खबावत हैं तब श्री ठाकुरजी आदि सब हँसे, तब श्रीठाकुरजी पुकारिकै, जो भलो भैयो तोको गोपी घी न खबावति हैं, तो आछी भाँति सो खाइयौ, हमको ऐसो धी न चाहियें। तब मधुमंगल अपने मनमें विचारचौ जो ये सब मेरी हँसी करें है, और ये मोको नाहीं छुड़ावेंगे, तातें मै ही कछु अपने छूटिवे को उपाय करूँ। तब मधुमंगल बोल्यो - जो सुनो गोपीयों जो तुम मोकों छोड़ देउ तो मैं श्री कृष्ण को तुमारे झुंड में लाइ देहूँ, इतनी सुनिकें श्रीस्वामिनीजी ने हँसिकें छोड़ दियों। और मेवा मिठाई खाईवें को देकें कही जो तुम ब्राह्मण हो जो साँच बचन बोलोगे तो तुमको और बोहोत कछु देइंगे, अब जाइकें श्री कृष्ण को बात में लगाइकें पकराइ देहु, पाछें मधुमंगल श्रीठाकुरजी पास आई सगरी अपनी बात कहिकें कह्यो, जो भैया श्री कृष्ण ! सगरी गोपीन नें तिहारे पकरिवे को विचार कियो है, सो तुम सावधान रहियों, मैं तुमको बचाउँगों और श्री बलदेवजी को आगे करिके पकराइ देउँगो तुमको काँधे पर चढ़ाइकें ले भजूँगो, या प्रकार मधुमगंल चतुराई करि दैरि करि श्रीकृष्ण को अपने काँधे पर चढ़ाय दोउ हाथन सो पकरि दौरि करि गोपीन के झुंड में जाइकें बैठि गयों तब सगरी गोपीन नें दोरिकें श्री कृष्ण कों पकरि लियो, तब श्री ठाकुरजी ने मधुमंगल सों कह्यों, अरे भैया मोहि सों छल कियों, तब मधुमंगल नें कह्यों, तुम मोको छुड़ायों

नांही उलटी मेरी हँसी करिकें कह्यो घी खाऊँ तातें मैं तुमकों पकरायों सो तुमहू को मन में भावत हैं, तातें में छल कीयो है, पाछें गोपीन ने चारों ओरते श्री ठाकुरजी घेर लीऐ, आस पास तो सब गोपी तिनके मध्य में श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी अपने मनोरथ को पीरो गुलाल अपने श्रीहस्त कमल सों भाव पूर्वक श्री ठाकुरजी के मुखारविन्द में लगायों। तब श्री ठाकुरजी बहुत प्रसन्न होइ अपने मन में विचारी जो इनतो अपनो मनोरथ पूर्ण कियो, और अब मेरो हू मनोरथ सिद्व भयो चाहियें, तातें गुलाल की पोटरी गोपीन के झुंड में चार्यों ओर चलाए, सो ऐसो गुलाल चलायों। जो सगरे गोप गापी न्यारे दूरि ठाढ़े भए, और अन्ध्यारौ होय गयौ। कछु सूझे नांही तब श्री ठाकुरजी अपनो पीताम्बर को अंचल बिछाई तापर गलवांही दैकें श्रीस्वामिनीजी को संग बैठाए। पाछे अत्यत अरूण गुलाल हतो सो अपने श्री हस्त कमल सों श्री स्वामिनीजी के मुखारबिंद में लगाायौ और बोहोत गुलाल उड़ाय अंध्यारो करि विहार आदि परस्पर अधरामूत पानहू कीए। दोउ स्वरूप परस्पर बोहोत प्रसन्न प्रेम मगन भए, ताही समय श्री स्वामिनीजी ने श्री ठाकुरजी के हृदय में अपनें प्रतिबिंब देखि मान को अंगीकार कियो, सो उठिकें क्रोध सहित बोली - जो तुमतो परम कपटी हो, छलसों भरें हो मोको ऊपर सो सनमान करत हो, यह कहि अपने मानिकुँज मंदिर में मान मंदिर है तहाँ ताही समय पधारी, सो श्री ठाकुरजी तो चकित होय रहे, भय करिकें कछु वचन जुबाब निकस्यों नांही, विरह बस होइके देह की दिसा भूलि गए, इतने में गुलाल की अन्ध्यारी मिटि गई, तब श्री बलदेवजी सखान सहित श्री ठाकुरजी के निकट आइकें

कहे हैं- हे श्री कृष्ण ! तोको कहा भयौ जो उदास होइकें मुख सूखि गयौ हैं, तब श्री ठाकुरजी कहें जो दाऊजी ! गुलाल की पोटरी खेल में बहुत लागी है, तातें मोरो मन अबही ठिकाने नांही हैं अबही तुम मोसों बोलो मती तब सखा सब आइकें दोऊ हाथ चापन लागे कोउ पाँव चापन लागे। कहें भैया कृष्ण कों पोटरी लागी हैं जों अब आछे हो, श्री ठाकुरजी तो काहू सों बोलत नांहीं हैं। सो सुबल सखा ने श्री वलदेवजी सो कह्यो - जो तुम नेक दूरि ठांढ़े होउ तो मैं श्रीकृष्ण सों पूछों, जो कहाँ पोटरी लागी है। तुमनें चार्‌यौ ओर ते घेरि लीयौ हैं। ताते यह खरोई घबराय गयौ है, तब श्री बलदेवजी और सगरे सखा न्यारे ठाढ़े भए, तब सुबल सखा ने श्री ठाकुरजी के कान में कह्यौ, जो अपने हृदय को दुःख मोसो कहो, तो मैं जतन करों तब श्री ठाकुरजी कहे - जो भैया सुबल तोसों कहा कहिये तू तो सब जानत ही हैं मेरे बिना अपराध कै स्वामिनीजी मान करिकें उठि गई है, अब मैं तोते कहा कहों मोयतो उन बिना रह्यौ जात नांही है, तब सुबल नें कह्यौ जो तुम चिन्ता मति करो मैं और ललिता दोऊ मिलिके अबही लिवाई लावेगें, तब सुबल सखा सखी को भेष बनाई ललिता को संग लैकें दोऊ मिलिकें श्री स्वामिनीजी के निकट गए, तब स्वामिनीजी नें ललिता सो कही तू इहाँ क्यों आई है ? तब इनने कही, सखीन ने श्री ठाकुरजी घेर लीयों है, और इहाँ तू मान कीये बैठी है, कोई सखी श्रीकृष्ण को भुलायले जाइगी, एक वेर कों मान होइ तो समझें, इहाँ तो घरी घरी को मान होत है, कहाँ ताँई समुझाइयें। तब ललिता नें कह्यौ मेरी स्वामिनी मेरी परम हितकारनी सखी है, तातें मैं

इनकी सखी हों, एक बार बिनती करी चाहिये, श्री ठाकुरजी श्री राधाजी सिवाय काहूसों बोलत नांही, सो मोको बिनती कहिके पठाई है। यह सुनिकें श्रीस्वामिनीजी सों रह्यौ न गयो। तब अपने नेत्रकमल खोले श्रीस्वामिनीजी को प्रसन्न जानि पास जाइ अनेक भाँतिसों सनमान कीयो है, जो मेरी प्रानप्यारी तुम बिना श्री कृष्ण चन्द्र कुं कछु सुहावत नांही हैं, और तुम बिना चले उहाँ अनेक स्वामिनी लागि रही हैं, जो भली भई मान भयो। हम अपनी कुंज में पधराइ ले जाईगीं, तातें अनेक जतन करि श्री कृष्ण को अनेकन सों ढुढ़िवाई, तुमारे पास आई हों, ऐसें अनेक चतुराई के बचन कहि भुजा पकरि उठायके, लैकें अपने खेल के जूथ में ले आई। तब सुबल सखा को भेष करि श्री ठाकुरजी सो कान में कही, जो मान छुड़ाय खेल में पधराय लाये हैं। अब विरह क्यों करत हों तब श्री ठाकुरजी नें नेत्र उघारि दसो दिस देखे। सों जूथ में श्री स्वामिनीजी को देखिकें सुबल सखा के ऊपर बहुत प्रसन्न होइकें अपने कंठ में गजमुक्ता की माला हती सो उतारिकें सुबल को पहराई फेरि परस्पर खेल होन लाग्यो।

तब एक सखी श्रीदामा को स्वरूप करिकें श्री बलदेवजी के निकट आइकें कह्यौ - हे दाऊजी ! तुमारे ऊपर गोपी बहुत कोपी है, ताते तुम सावधान रहियों तब श्रीदाऊजी बोले - हे श्री दामा ! तू मोको बचाइयों तब वा श्रीदामा ने कहयौ तुम मेरे संग चलों तो बचाऊँ। या प्रकार सखी हती सो श्री बलदेवजी को बातन मे लगाइ राख्यौ है। रेवतीजी सो जाइ मिलाए खेंचिकें तब श्री रेवतीजी तो लाज पाइकें बैठि गई, तब सगरें गोपी ग्वाल हँसे। सो श्री

बलदेवजी तो सकुचाय कें भाज आए। तब गोपीन नें जीत के बाजे बजाए है, बड़ो कुलाहल भयौ सों श्री यशोदाजी ने सुन्यो तब एक सखी को मेवा मिठाई देकें कही, मेरो कन्हैयाँ भूखो होइगो तू जाइके अरोगाइ आइ, और जो बसन्त को खेल होइ चुक्यो होय तो श्री ठाकुरजी को पधाराइ लावो। सो वह सखी सामग्री लेके चलीं, सो श्रीठाकुरजी को, श्रीबलदेवजी को अत्यन्त प्रेम सों अरोगाई। सो वह सखी भोरी हती सो कह्यौ मोकों गोपी छिरकेगी तो नाही ? मै गोपीन के जूथ मे जांऊ, तब श्री ठाकुरजी कहे जो तुम सुखेन जाओ तुमको गोपी नांहीं छिरकेगी, काहे ते तुम श्री यशोदाजी के पास की हो, ताते आनन्द सो गोपीन के पास जाइकें मिलि आवो।

तब वह सखी गोपीन के जूथ में गई। तहाँ श्रीस्वामिनीजी ने पूछी जो तुम कहाँ ते आई हो, तब वा सखी ने कही जो मैं श्री नंदरायजी के घर श्रीयशोदाजी के पास रहित हों, सों श्री यशोदाजी ने सामग्री पठाई है, सो श्रीठाकुरजी के पास ले आइ हती, यह सुनत ही सखीन नें पकरिकें छिरकी, तब वा सखी ने विनती करी, जो श्री यशोदाजी मोपे क्रोध करेंगी। जो तू यह कहा करि आई हैं ? इतनी सुनत ललिता विसाखा ने लहँगा सारी चोली छिनाइ लीनी । पाग पटुका बागा पुरूख को स्वरूप बनाइकें छिरकी, आछी भाँति मुख माँडि गुलाल लगाइकें कही जो अब जाउ, श्री यशोदाजी सों मेरो पालागन कहियों, तब वह सखी अत्यन्त डरपती लाज सहित अत्यन्त दीन होइकें श्री ठाकुरजी सों कही जो तुमनें मोइ पठाई सो मेरी यह दसा भई । अब मैं श्री यशोदाजी कें निकट कैसों जाऊँ ! वो मेरे ऊपर क्रोध करेगी,

तब श्रीठाकुरजी श्रीदामा सखा सों कहे जो भंडार ते सारी, लहँगा, चोली ले आवो, तब श्रीदामा लेकें आयों तब श्री ठाकुरजी अपने हस्तकमल सों वा गोपी कों पहरावन लागे। तब वह सखी प्रेम में विहवल ह्वे गई। सो देह दिसा नांही रही तब श्री ठाकुरजी लहँगा, सारी, चोली, पहराई वागा, पटका, उतारि लिए और पाग रहन दीए ओर कही - मैं, दाऊजी बसन्त खेलिकें आवत है, मैया सों कहि दीजों।

सो वह सखी प्रेम में मग्न ह्वै श्री यशेदाजी पास आई, तब श्री यसोदाजी वा सखी की ओर देखि चकित होइ रही, जो कौन आई तब वा सखी ने कही मै तुमारे पुत्र को सामग्री अरोगाइ आई हो, अब कोई घरी में बसन्त खेल होइ चुकेगो, तब श्री ठाकुरजी, श्री बलदेवजी, सहित घरको पधारेंगें। यह सुनिकें मुसिकाइ के श्री यशोदाजी नें कहीं जो तू मेरे कन्हैयाँ के पास तो नांही गई। के तो तू अपने पति के पास गई हैं, सामिग्री हू अपने गोप को खबाइ आई है, तब वह सखी बोली जो श्री यशोदाजी तुम मोकों गारी देत हों सो जब श्रीठाकुरजी, श्रीबलदेवजी पधारेंगे, तब पूँछि लीजियो मैं कबहूँ तुमारे आगे झूँठ बोलत हो ? और तुम कहो तो मैं सोह देऊँ तब श्री यशोदाजी बोली जो तू सोह कहा देइगी। गोप की पाग माथें पर पहरे हैं सो तेरी चोरी प्रगट करत है। तब सखीने माथे पर हाथ डारयो सो साँची बात है, तब तो अत्यन्त लाज पाइकें कही, जो श्रीयशोदाजी ये तुमारे पुत्र के काम हैं, सो मोको वस कीनी। और मेरी लाज हू लीनी, तब श्रीयशोदाजी ने कही जो मेरे कोई ऐसी सखी नांही हैं जों मेरे कन्हैयाँ को सामिग्री अरोगाई आवें तब

सगरी सखी सोलह हजार मिलिकें कही, जो श्री यशोदाजी उहाँ भीर बहुत हैं सो एक दोय सखी को काम नांही हैं, जो सगरी सखीन को पठावों तो उहाँ जाँइ तुमारे पुत्र कों सामिग्री अरोगाई आवें, ओर भीर में एक दोइ की बात कौन मानें यह सुनि श्री यशोदाजी बोहोत प्रसन्न होय, छाक सिद्व करिकै सखीन के हाथ पठाई, तब सब सखी छाक लैकें श्री ठाकुरजी के सनमुख आईं सो जा सखी को जैसो मनोरथ हतो, ताको ताही भाँति मिले। पाछै श्री ठाकुरजी ग्वाल मन्डली करिकें बैठे।

तब श्री ठाकुरजी ने मधुमंगल सों कह्यो - जो हे भैया हम अकेले भोजन कैसें करें उहाँ सगरी गोपी भूखी हैं उनहूँ को बुलाइ लावें, तब मधुमंगल आन्नद पाइ गोपनी सो जाइकें कह्यो - जों तुम सगरी वेगी चलो, श्री यशोदाजी ने छाक पठाई है सो तुम बिना श्री ठाकुरजी अरोगत नांहि है। यह सुनिकें गोपी बोहोत ही आनन्द पाइकें कही जो श्री ठाकुरजी हमसों ऐसी प्रीत राखत हैं तब श्री स्वामिनीजी सखीन सहित वहाँ पधारत हैं, अपने जूथ सहित बराबरि मंडलाकार ब्रज, मध्य में श्री स्वामिनीजी तिन पास अष्ट सखी आदि अष्ट सखा और दूसरे मण्डल में श्री बलदेवजी, श्री रेवतीजी उनके संग के सखी-सखा सबन सहित अपनी अपनी फेंट में पिचकारी धरिकें बेठै, मति कोई ले जाइ । या प्रकार सों परम प्रीतिसो भोजन करन लागे पाछै भोजन करि आचमन करि सब बीरा अरोगें, तब ललिता जी नें कह्यो जो अब साँझ को समय भयों हैं। ताते वेगी चलो नांही तो श्रीयशोदाजी बोहोत खीजेंगी। तब दोऊ जूथ अपने - २ घर कों आनन्द पाइकें पधारें।

तब श्री यशोदाजी नें आरती करिके नित्य की रीति सो सेन आरती करिकें पोढ़ाये। पाछे माह सुदी ७ के दिन फेरि सखा ब्रजभक्त श्री स्वामिनीजी, श्रीयशोदाजी के घर पधारें, सो श्रीठाकुरजी को पधराइकें श्री यमुनाजी के तीर खेलको आरम्भ कीनों। तब श्री ललिताजी नें कह्यो, जो यह भलो श्री यमुनाजी को घाट है, यही ठौरपे श्री ठाकुरजी श्री बलदेवजी को पकरचो चाहिये। यह सुनिकें श्रीस्वामिनीजी बोहोत प्रसन्न होय सेंन ही में सब सखीन सों कह्यो, जो मारग सब रोकों, सो सखीन ने जितने मारग हते, सो सब रोकें, तब ललिता नें झूठे ही आइके श्री ठाकुरजी सों कह्यो जो श्री स्वामिनिजी घरकों पधारत है, तब श्री ठाकुरजी ने ललिता सों कह्यो - जो ऐसो मेरो कहा अपराध है, सो आप घरको पधारत हैं, तब ललिता नें कही जो तिहारे हाथ की पिचकारी माँगत है, सो तुम चलिकें दे आवो, तब श्री ठाकुरजी ललिताजी के संग पिचकारी देनकों चले है, सो जब श्री स्वामिनीजी के पास ठाढ़े भये, तब श्री स्वामिनीजी सों श्री ललिताजी नें कही, जो इनकी पिचकारी बोहोत सुन्दर है, सो तुम लेउँ, तब श्रीस्वामिनीजी देह एड़ाइकें गजमत की नाँई उठिकें, श्री ठाकुरजी के हस्त में पिचकारी हती सो पकरे, तब श्री ठाकुरजी छोड़े नांही, दोऊ ओरसों परस्पर बल होन लाग्यो। तब ललिता ने कही जो श्रीकीरतिजी की और मेरी तथा अपनी बात मत खोंइयो। अब पिचकारी मति छोड़ियो, और इत ओर मधुमंगल ने कह्यो - जों भैया श्री कृष्ण ! श्री यशोदाजी की श्री नन्दरायजी की अपनी मेरी हँसी मति कराईयों काहेतें ! जो पिचकारी मति छोड़ियों।

या प्रकार श्रीस्वामिनीजी और श्रीठाकुरजी की फैंट में ते मुरली गिरी, सो काहू ने देखी नांही, एक श्री चन्द्रावलीजी ने देखी तब अपने श्री हस्त के रतन खचित कंगन भूमि पर गिराय दीनों। पाछें कंगन के मिस कंगन मुरली दोऊ लेइकें अपने निकुँज मन्दिर में पधारी, और मनमें बड़ो आनन्द मान्यों, जो अब मुरली के मिस प्रभू मेरी निकुंज में पधारेगे, सो कुँज रचना करन लागीं, फुलन की सिज्या अनेक अनेक सामिग्री फूलन की माला, अरगजा वीरा सामिग्री सिद्व करि द्वारपै विराजिकें श्री ठाकुरजी को मारग देखन लागी।

इहाँ श्रीस्वामिनीजी ने अेसो झटका दिया। सो पिचकारी श्री ठाकुरजी सों छीन लई, तब मधुमंगल बोल्यो जो भले भैया मेरो नाम खोयो, जो मेरो मित्र होयके हार्‌यो, तब श्री ठाकुरजी कहें जो मेरो जितनो बल हतो। सो कीनों मैं गोपीन सो तो सदा ही हार्‌यों हों। तब सब हँसे तब ललिता ने जायकें श्रीबलदेवजी को पकरिके, छिरकिकें मुख माँड़यो और श्रीस्वामिनीजी ने श्री ठाकुरजी को पकड़िकें मुख मांडयो, तब श्री ठाकुरजी अपने मन में विचार कियो श्री चन्द्रावलीजी मुरली ले गई तब श्री ठाकुरजी नें श्रीस्वामिनीजी सों कह्यो, जो तुम मोकों छोड़ो तो मै तुमको मुरली लाइ देहूँ। एक वनमें धरिकें भूल आयो हूँ तहाँ मैं जाऊँ तो मिले। तब श्री स्वामिनीजी ने कही जो तुम बचन देऊँ, जो कब आओगे तो मैं तुमकों छोड़ों। श्री ठाकुरजी ने बचन दीयों जो मै अब कोई क्षनमें आऊँगो, ऐसे वचन दे श्रीठाकुरजी, श्रीचन्द्रावलीजी की कुँज में पधारे। तब श्री चन्द्रावलीजी श्रीठाकुरजी को देखि बहुत आदर

सन्मान कीयों, सैज्या पर पधराय नाना प्रकार की सामग्री अपने मनोरथ की अंगीकार कराय, नाना प्रकार की रीति विपरीति आदि दरसानादिक कराय मनोरथ पूर्ण कियो।

इहाँ सखा सब श्री ठाकुरजी को पुकारन लागे। सो श्री चन्द्रावलीजी की कुँज में ऐसी सघनता है, जो कोई को कोऊ देख न पावे। सब सखान को शब्द श्रीठाकुरजी ने सन्यों, सो श्री चन्द्रावलीजी सो पूछ्यों जो मोकों कोई पुकारत है। तब श्री तब श्री चन्द्रावलीजी ने कह्यो जो यहाँ काहूको गम्य नांहीं है। तुम यहाँ निर्भय सों विराजो। इहाँ के ये मेरे पशु, पंछी, हंस, सारस, मोर, कोकिला इत्यादिक मनुष्य की बोली बोलत हैं। ताते कछु संदेह मत करो यह सुनिकें श्री ठाकुरजी हँसे और मनमें कहें जो मोकूं राखिवे कूं वचन बनाय के कहत हैं। पाछें श्री चन्द्रावलीजी के जितने मनोरथ हते, सो सब पूरण कर मुरली लैकें श्रीठाकुरजी श्री चन्द्रावलीजी की चिंता हरि पधारकें अपने सखान के जूथ में आये। तब श्री बलदेवजी ने पूछ्यों जो हे कृष्ण ! तू कहाँ गयो हतो, तोकों सब सखा ढूढँत है, तब श्री ठाकुरजी कहें, मैं गोपीजन कों फगुआ लेंन गयों हतो तहाँ बीच में श्री नन्दरायजी मिले, तिननें खेलकी वार्ता पूछी, सो उनसों मैने सब कही, तासें मोको बहुत अबेर लागी है।

पाछें सुबल को घर फगुआ लेन पठायो। सो सुबल देखे तो भंडार आगे श्री यशोदाजी ठाढ़ी है तहाँ श्री यशोदाजी ने सुबल सों पूछी तब सुबल ने खेल की सब वार्ता कही, तब श्री यशोदाजी परम आनन्द पाय नाना प्रकार की सामिग्री सखी सों लिवायकें

आपहू संग पधारी, तब मारग में यशोदाजी ने सुबल सों कह्यो,जो तुम मेरे कन्हैयाँ को आछी भाँति सों राखियों वो मेरो प्यारो है, तब सुबल ने कही, जो मैं अपने प्राननते अधिक रक्षा करत हों तुमारो पुत्र सब ब्रज के बनन में प्रसन्न रहत हैं तब दूरिते गोपीन ने श्री यशोदाजी को आवत देखिकें श्री ठाकुरजी , श्री बलदेवजी को छोड़ि मुखमें गुलाल लग्यो हतो, सो सब अंचल सों पोछिकें वागा और पहराय सबइ ठाड़ी ह्वै गई ।

इतने में श्री यशोदाजी, श्रीठाकुरजी के निकट आइकें अपनी गोद मे लेइकें मुख चुम्बन करि, बहुत ही प्रेम सों सनमान कियो। पाछे अपने श्री हस्तसों सामिग्री श्री ठाकुरजी को अरोगाये। तब सगरी सखी गोप सखा आयेके कहें जो श्री यशोदाजी तुमारे पुत्रको बहुत छिरकें नांही है, तब श्री यशोदाजी गोपीन के ऊपर बोहोत प्रसन्न होई मेवा मिठाई दे नाना प्रकार के आभूषण वस्त्र पहराए। सो ये गोपीन के वचन सुनिकें श्री बलदेवजी सों रह्यो न गयों, तब कही जो - हे यशोदाजी ! अबही तुम आई हों, तब हमकों और श्रीकृष्ण कों छोड़ ही नांही तो दोऊ बँधे हते। यह सुनिकें श्री यशोदाजी ने गोपीन पे कोप कियो।

तब श्री ठाकुरजी यों कहें, जो तुम गोपीन के ऊपर कोप क्यों करत हो। दाऊजी तो भाभी ने झिड़के हैं, और मुख माँड़यों हैं, ताते दाऊजी को लाज लागी है। ताते भाभी सों तों कछु चलत नांही है। गोपी तो मोकों बोहोत आछी भाँति सो राखत है। तब श्री यशोदाजी श्री ठाकुरजी को चुम्बन करिकें कही जो तू साँचो है। दाऊजी तो झूँठो है। यह सुनिकें माता पूत कों स्नेह देखिकें

श्री बलदेवजी हँस दीये, सो यह बात श्री नन्दरायजी ने सुनी जो श्री यशोदाजी खेल में पधारी है, यह सुनत ही श्री नन्दायजी सों हू रह्यो न गयों, सो आपहू खेल में पधारें, जो दूरि ते देखिकें श्री ठाकुरजी तारी बजाय कहन लागे जो बाबा आवत हैं, सो श्री यशोदाजी तो चादरि को धूँघट देइके बैठी ओर श्री नन्दरायजी श्रीठाकुरजी को मुखारविद देखत ही देह की सुधि भूलि आनन्दमग्न ह्वै गयें। सो श्री यशोदाजी के पास जाइ श्री यशोदाजी की गोद में ते श्री ठाकुरजी उठाय मुख चुम्बन कीऐ, तब श्री ठाकुरजी ने कह्यो, बाबाजू मैयाजी ने तो आभूषन वस्त्रादि समस्त गोपीन को दीए हैं तब श्री नन्दरायजी नें प्रसन्न होइकें कह्यो, जो मैं तुमकों बलदाऊ को तथा समस्त सखान को पहराऊँगों। ऐसो कहि अत्यन्त सुन्दर आभूषण वस्त्र श्री नन्दायजी ने श्रीठाकुरजी, श्री बलदेवजी तथा समस्त गोपन कों पहिराये और गोपीन कोहू दोहरो फगुआ दीयो, आभूषन वस्त्रादि मेवा मिठाई आदि सूँ ब्रज के समस्त बाल वृद्व तरून जाके जो मनोरथ हो, वाकों तेसे ही पहिरायो।

पाछे श्री नन्दायजी, श्रीठाकुरजी को गोद में लइके श्री बलदेवजी को अँगुरी सो लगाय लीयो, तब समस्त ब्रज गोपी गीत गावन लागीं, मधुमंगल नित्र्य करन लाग्यो, दोउ दिस सों बाजे बाजन लागे। मानो परमानन्द आपुही आइकें सबन के हदय में होइकें खेलत है। तब श्रीनन्दरायजी और श्रीयशोदाजी के मनमें यह भावना उत्पन्न भई जो याही भाँति हमारे कन्हैयाँ को ब्याह होय तो आनन्द होइ पाछें मनमें विचार्यों जो अब ही हाल हमारो कन्हैयाँ

बालक हैं, कछु समुझत नाहीं, मुख में दुध की सुगन्ध आवत हैं रंचक बड़ो होय कछु समुझन लगे तो सगाई करिये। या प्रकार श्री नन्दरायजी श्रीयशोदाजी श्रीरेवतीजी तथा समस्त सखा समाज सहित घर को चले, पाछें मंदिर में पधराय सिंघासन पे श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी पधरायें एक सिघासन पे श्रीबलदेवजी, श्रीरेवतीजी, को पधराये।

या प्रकार होरी बसन्त खेलत हैं, कबहु होरी में श्री ठाकुरजी यह लीला करत है, जो गोपन के घर अर्द्ध रात्रि समय छिपकें ब्रजमें पधारत हैं। तहाँ ब्रजभक्त परम चतुराई सो गुप्त अनेक भेष करिकें दीये बुझाय न्यारे घर में सयन करि श्री ठाकुरजी के मिलन को स्मरण करत हैं, तातें श्री ठाकुरजी भक्तन के मिलनार्थ पिछवारे ते घर में आइकें किवार खोलें, सो पहले दिन भक्त बताय राखत भऐ, जो फलाने ठिकाने कूंची धरी है, बाहिर ते खोलिकें आइयों, सो श्री ठाकुरजी कूंची सूं होले सूँ किवार खोलिकें पाछें किवार लगाइ भक्तन के निकट पधारें, सो भक्त भारी निद्रा में पोढ़े हैं, तब श्री ठाकुरजी भक्त के पाँब को अँगूठा मरोरके जगावत हैं, तब भक्त चौकिकें मधुर बचन कहे जो कौन है ? तब श्री ठाकुरजी कहें, जो चुप होय रहों यह तो मैं ही हों, ऐसी श्री ठाकुरजी की मधुर बानी बहुत ही प्यारी भक्तन कूँ लागी। यासूँ समस्त अंग शीतल होय गयो, तब श्री ठाकुरजी नें अपनी गोद में बैठारिके नाना प्रकार की लीला करि हृदय को ताप निवारन कियो। तब सबेरो होन लाग्यो, तब श्री ठाकुरजी भक्तन के घरसू निकसिकें पिछवारें ते आय निज मन्दिर में पोढ़े, कोई ठौर या प्रकार खेलत हैं, औरहू बहुत सी

लीला करत है जो यज्ञोपवीत धरण करि चन्दन को तिलक लगाय, धोती उपरना पहरिकें खड़ाऊँ पर चढ़िकें तुलसी की माला गरे में धरण करि, तथा एक सुमरनी हाथ मे लेइकें और पुस्तक बगल में दबाइकें ब्राह्मण को भेष धारण करि, ब्रज मे कौतुक देखन को पधारत हैं, या प्रकार सूँ श्री वृषभानजी की पोरी पर पधारे, सो तहाँ यह रीति हती जो ब्राह्मण को श्री वृषभानजी की पोरी पर कोहू टोकत नाँय हतो कहूँ चल्यौ जाय, सो आप श्री कीरतिजी की पोरि छोड़िके श्री स्वामिनीजी अनेक मनोरथ विचारिकें सखीन सहित श्री ठाकुरजी मे मिलन को बिचार करत हती, तहाँ ही विप्र भेष में पधारें, सो विप्र भेष देखिकें श्री स्वामिनीजी सखीन सहित पालागन करि ऊँचों आसन बिछाइ तापर बैठाय धूप दीप नैवैद्य सो पूजन कीयों, तब ललिता बोली - जो विप्रजी तुमारो भेष तो बड़ो सुन्दर हैं, कछु गुणहू तुमारें में हें ? बड़ी-बड़ी पोथीमाला लीए भये हो, तब श्री ठाकुरजी बोले जो मेरे में सबरे गुन है, जो तुम कहो सोई सिद्ध करि दिखाऊँ, तब ललिताजी नें कही - एक दो गुन तो तुम अपने कहों तब श्री ठाकुरजी बोले, जो प्रथम तो मोमें यह गुन हैं कि जा काहूकू वस्तु की आकांक्षा होय सो वाकूँ तुरन्त मिलाय देऊँ, और कोहू को मन कहूँ जायेवो को होय ताकूं तहाँ एक क्षन में ले जाऊँ, और कोहूँ जानेहू नांहि, और तीनों काल की बात बताइ देऊँ, तब श्री स्वामिनीजी बोली - जो हमको तो तीन्यों काल की बात बताय देऊँ हम कहा हते ? अब हम कहा करत हैं ? और आगे कहा होइगो ? यह बात बताओ तो साँचे ब्राह्मण हो।

तब श्री ठाकुरजी ने कह्यो जो पहले तो तुम श्री नन्दरायजी के पूत सों सगरी मिली हो, और अब वाही सामरे सूँ मिलन को सगरी बिचार करत हो। ओर आगें वह ही कृष्ण तुमको मिलेगो ऐसे सुनत ही श्री स्वामिनीजी रंचक लज्जित भई और मनमें बहोत प्रसन्न होइ। विप्र के निकट आइकें चरण पकरिकें फेरि पूछत भई, हे पण्डित ! तुम बड़ें ज्ञानी हो कहो हमारी प्रीतिसो श्री नन्दरायजी के पुत्रसों सो लागी है, परन्तु वाकू सब कारो कपटी कहत है, सो वो साँची प्रीती हम पर राखत हैं कि नाँय ? सो कहों, तब श्री स्वामिनीजी नें नाना प्रकार के वस्त्र पहिराय सामग्री अरोगायें फेंरि पूछी जो अब श्रीकृष्णजी कब मिलेगें ? तब श्री ठाकुरजी नें कही, जो अब ही सैज्या मन्दिर में चालो अब ही मिलाय देऊँ, तब सैज्या मन्दिर मे पधारिके ब्राह्मण को भेष उतारिकें नाना प्रकार की लीला करि सगरे ब्रज भक्तन को आनन्द दियो।

या प्रकार श्री ठाकुरजी ब्रज में लीला करत है। कबहु मनिहार को भेष धरि नाना प्रकरनी चूरी रंग-बिरंगी लेइकें वृषभानपुरा की गलीन में आवाज लगावत है। और नव कुमारिका ब्रजभक्तन कूँ पहिरावत है, सो श्रीस्वामिनीजी की सखी सुनिके कीरति रानी सूँ कहत है, जो चूरी बारो आयो है, तुमारी बेटी की पुरानी चूरी हैं गई है, सो नई पहिराय देऊँ, तब कीरितीजी कहत है- बुलाय लावो, तब इह भीतर जाइ छोटी छोटी चूरी श्रीस्वामिनीजी कूं लाइकें दिखाई, तब श्री कीरतीजी अपनी गोद में ले पहिरावन लागी, श्री स्वामिनीजी को श्रीठाकुरजी ने नैनन में ही समझायो, तब श्री स्वामिनीजी बाल भाव करिके रूदन करिके कही, जो मैया मैं चूरी

नांहि पहरूँगी, मेरो हाथ दूखेगो, ताते हे ललिता तू मैया कूँ समझाई, तब ललिताजी ने कीरतिजी सो कही, जो यह तुमारे पास चूरी नांहि पहिरेगी, तब कीरितीजी ने कही, जो हे ललिता तू पास बैठिके, किबार लगाइकें चूरी पहिरवाइयो, कोई आवे नाहि, तब ललिताजी किबारि लगाइकें श्रीस्वामिनीजी को लेइके बैठी, तब श्री ठाकुरजी चूरी पहिरावन लागे, और अनेक भाव श्रीहस्तसों करन लागे, तब काम की उत्पत्ति भई, तब ललिता सों श्रीस्वामिनीजी ने कही जो यह चूरी पहिरावत है, सो तो नन्दकुमार है, तू किबार खोलिकें बाहिर बैठि, तब ललिता किबारि खेलिके बाहिर आई, तब दोऊ स्वरूप नाना प्रकार की लीला करि, भाँति भाँति की चूरी पहिराय पाछे विदा होय घर को पधारे।

कबहु काजर बेंदी लगाय लँहगा फरिया चोली पहरिकें नायन को भेष धरि काँगसो, महावर ले वृषभानपुरा में जाइ, मनिहारिन की नांई लीला करि श्री स्वामिनीजी के केस सुधारिकें महावर चरनन में लगायकें नाना प्रकार के बिहार कीए याही प्रकार सूँ भावना करनी, कबहु दान के मिसते दानघाटी श्री गिरिराज पे सखान सहित आप बैठत है, दधि को दान मांगत है, कबहुँ साँकरीखोर इत्यादिक ठिकानें, ब्रजभक्तहू, दानके मिस करिकें सुमुधर मिष्ठान गोरस लेकें अनेक भाव सहित बाँह जोटिकें श्री कृष्ण लीला गान करत पधारत हैं, तब साँकरीखोर में आय सगरी धसीं, तब चार्‌यो औरते श्रीठाकुरजी अैठमा फेंटा बाँधे सखान सहित पीताम्बर पहिरें, बैजयन्तीमाला चरणारविंद में खड़ाऊँ धारण करें, मस्तक पर मोर चन्द्रिका, मकरामृत कुण्डल कपोलन पर झलकत है, श्री हस्त में

लकुट मुरली है, मारग में लष्टिका आड़ी करि श्री स्वामिनीजी श्री चन्द्रवलीजी आदि सबनकों रोके और श्री मुखसो कह्यो हमारो दान दिये बिना सदां निकसि जाति हो, सो आज सगरे दिन को माँगत हो। तब श्री ठाकुरजी कहें जो श्री नन्दरायजी ब्रज के राजा है, सो हमको सगरे ब्रज को राज दीयों हैं, यह सुनिकें सगरी हँसी, और कही वह ही नन्द जो हमारे बन की घासन की रखवारी को राखे है, कंस के डरके मारें नन्द यशोदाहू आइ हमारे पिता की छाँह बसे हैं तिनके ही तुम पूत हो, सो यह तो कुल की रीत है, तिनको पालन करिये, जो तनक बढ़ाई पाइकें माथे चढ़ें ताते बोहोत ढिठाई सो मति बोलो तब श्रीठाकुरजी ने कह्यो जो सूधे दान देइंकें, पाछें जाय पुकारियों। यहाँ वन में बोलोगी तो सबके आभूषण वस्त्रादि भली-भाँति सूँ लूटि लेइंगे, और जा कंस को जोर जतावत हो सो आपुही मरि रह्यो हैं, कछुक दिना और जीवेगो। यह सुनिकें श्री स्वामिनीजी हँसिकें कह्यो जो अब कंस को गारी देत हो और अर्द्धरात्रि को भाजे डोलो हो, इतनो बल दिखावत हो और महावन ते भाजिके श्री गिराज की कंदरा में छिपे फिरत हो। तनक दही माखन के लिए घर में चोरी करत फिरत हो, ऐसी तुमारी बढ़ाई है। तब श्री चन्द्रवलीजी बोली जो अब जान देऊ, हम अब कहा किरानो माल लैके जात हैं। सो तुम दान माँगत हो। तब श्री ठाकुरजी बोले जो तुमारे पास माल इतनों है, इतनों काहूके नाँहिं कोई के पास श्रीफल, कोई के पास सुपारी, कोई पास नारियल, कोई के पास दाडिम, कोई के पास केई-२ प्रकार के रतन मेवा फल कमल इत्यादिक सब हमारे लायक हैं,

सो हम लैके जान देहिंगे। तब श्री स्वामिनीजी बोली जो तुम बोहोत ढीट होइकें बोलत हों, हमारे आभूषनन की ओर मन राखत हो, सो हमारे एक नग को ऐसो मोल है, जो सब गाय नन्दालय की वैभव एक ठौर करोगे तोहूँ पूरो नाहीं परेगों तातें जैसों तुमारे माँ-बाप जा रीति सों चले है, ताही रीति सो तुमहू चलो। और जो तुम भूखे भए होउ ? तो विनती करिकें माँगो तो हम कहें सो करो तुमको थोरो सो दही दे देंहि, तब श्रीठकुरजी कहें, जो मोको भूख बोहोत लागी हैं तुम कहो सो करें, तब ललिताजी नें कही जो हमारी प्यारी जू के आगें नौतन नाँच नट की नाँई, नाँचो तो हम तुमको देंहि, तब श्री ठाकुरजी ने अनेक तान-तरंगन सो नित्य करिके सबको मोहित किये, कबहू लोटिकें दही दूध पीवत हैं, तब श्री स्वामिनीजी, श्रीचन्द्रावलीजी सहित नाना प्रकार की सामिग्री अरोगाइकें संग के सगरे सखान को दूध को भोजन देत है, और कही नीचे जाइ सगरे जल के पास अरोगो तब सगरे सखा दही अरोगन जात हैं।

इहाँ श्री ठाकुरजी सगरी स्वामिनी के संग नाना प्रकार की बिहार लीला करन लागे, इत्यादिक भाव दान ही को विचारनो, कबहू जमनाजल के पनघट पर कबहूं कुँआ के पनघट पर जाइके काहू की इढुंरी चोरत है, काहू की गागरि काँकरी से फोरत है। काहूकी गागरि भरके उठाय देत है। और कानमें मधुर बचन कहत हैं, जो हारी आई है कोई ब्रजभक्त के लिए आप श्री यमुनाजी मे पेठिकें कहत हे "ओरी भट् सीत बोहोत हे तू जल को परस मति करि मोकों गागिर दे मैं भरि देहूँगो"।

या प्रकार गागिर भरि अंग परसं करे हैं, और कोई ब्रजभक्तन के आगे होइकें काँकरि वान डारत है, तिरछे कटाक्ष चलाइकें मन हरि लेत हें, काहू की बलाई लैकें अंचल वारत हैं, काहू की बलाई लेकें बातन में लगाय चुम्बन करत हैं तहाँ कोई भक्तन में है जो तो प्रसन्न होत ह श्रा ठाकुरजी को पकरिकें भली भांति आलिंगन करि संर्वाग परसत है, तनकी ताप मिटावत है, और कोई ब्रजभक्त लज्जामान होइके गुरूजन के डरतें अत्यन्त डरपत है, बोलत नांही है, जव श्री ठाकुरजी अत्यन्त हँसी करत है भरी गागरि ढोरत है पीछे तें चोली के बन्द तोरत है कुछ कान में बचन कहत है तैंब मनमें तो अत्यन्त सुखी होत हैं, ऊपर तें भोंह चढ़ाइ रिसाइ बाँकें बचन बोलत है, जो हम श्री नन्दरायजी सों श्री यशोदाजी सों, दाउजी सों कहि देइंगी। हमसों हँसी मस्करी मति कियों करों। या प्रकार अनेक बाँके बचन भक्तनके सुनत हैं वे कहत हे तिन भक्तन के पीछे श्री ठाकुरजी बहुत फिरिकें अनेक बाँके वचन सुनिकें मन में प्रसन्न होत हैं, कबहू श्री स्वामिनीजी सों कहत हैं जो तुमको वेगि मैया ने बुलाई हैं सुन्दर आभूषण वस्त्र देइंगी । या प्रकार भुलाइकें ललितादिके सखी सहित श्री यशोदाजी के घर पधारत है तहाँ वाग में अनेक हास्य विनोद करत जात है, काहे ते होरी के दिन है, तातें कछुक निर्लज्जताई है, कहूँ कुँज में बैठिकें नाना प्रकार की बिहार लीला हूँ करत हैं, सबन कें मनको हरत है, या प्रकार सगरे ब्रजभक्तन को होरी में सुख देत है। रात्रि दिन यही परम रस हैं।

पाछें यशोदाजी ने घर एक सिंहासन पर श्रीठाकुरजी श्री

स्वामिनीजी को पधराये, एक सिंहासन पर श्रीबलदेवजी, श्री रेवतीजी की पधराइ नाना प्रकार की सामिग्री सैन भोगादि अरोगाई सब गोपी-गोपन को भोजन कराइ, सब गोपी गोपन को विदा करन लागे। तब गोपीन नें नंदराय यशोदाजी सो कही जो श्री वृषभानजी ने विनती करिकें कह्यो है, जो कलि होरी डांडो रोपनो हैं, सो कृपा करिकें तुम पधारेंगें और हमहु आवेंगे। तब श्री नन्दराइजी नें कह्यो जो हम अवश्य आवेंगे, तब या प्रकार गोपीजन विदा भई, पाछें श्री नन्दरायजी ने श्री यशोदजी सों कह्यो - जो कन्हैयाँ को श्रम बोहोत भयो है तातें अब सैन कराइयो, इहाँ कीरतीजी ने आरती घर पर करि सैन भोग अरोगाइकें सैया पर पोढ़ाये। पाछें प्रातःकाल भयो तब श्री यशोदाजी, श्री ठाकुरजी जागें नांही पाछें कहें जो आज होरी डाँड़ो रोपनो है। देखिये कौन जीते कौन हारे ? तातें वेगि उठो इतनी सुनिकें चोंकि उठे, और कहें मैया मेरी पिचकारी कहाँ है आज वेगि क्यों जागायो। तहाँ या पद को भाव जानिये। ।

राग-रामकली

जागि कह्यो जननी सो मोहन।
आजु कहा मोहि वेगि जगायो सो कारन कहिये सब सोहन।। १।।
तब जसुमति कह्यो आज पूरण दिन पून्यौ सुख की रासी।
डांडो रोपन नन्द जायेंगे संग लिए ब्रजवासी।। २।।
उत वृषभान इतें नन्दराय होड़ परेगी भारी।
इत प्यारी उत प्यारी को दल को जीते को हारी।। ३।।
तातें तुम मोहन बलदाऊ संग कहि लीजै।
और गोप लेंउ रखबारी गोपी सब वस कीजै।। ४।।

यह सुनि उठे गिरवरधर तब कहिं पयन भावें।
देखों आजु खेल होरी को माखन मोहि खबावें।। ५।।
तब जसुमति अपने गोपाल लाल कों उवटि न्हवायो प्रीत।
करत सिंगार परम रूचिकारी ब्रजवासीन कें मीत।। ६।।
यह सब वात जानि ब्रज वनिता चली सिंगार सिगारी।
मान हरसित सोभित अति सुन्दर कोटि काम बलिहारी।। ७।।
सब मिलि एकठोर ह्वै आइ जसोमति ग्रह के द्वार भीतर जाई।
आइ लालन मुख निरखत ह्वै रहे लोचन चाई ।। ८।।
सेंनन में सब भेद कह्यो तब मुसिकाइ मोहन मन लीयों।
रसिकप्रीतम जो जानत अन्तरंग तिन मन भायों सब कीयो।। ९।।

यह भाव विचारनों तब श्रीयशोदाजी, श्रीठाकुरजी को मंगला भोग अरोगाय स्नान कराय श्रृंगार करि पलना झुलावन लागी। इतने में सब गोपी ग्वाल ब्रजभक्त श्री यशोदाजी के घर आए, तब श्रीस्वामिनीजी नें सेन ही में कह्यो, जो अब तुम पालने ही में झूलोगे के होरी खेलोगे ? सो यह सुनत ही श्री ठाकुरजी, श्री यशेदाजी सों कहे - जो मैया राजभोग कब अरोगावैगी, तब ताही समय श्री यशोदाजी, श्री रोहिनीजी राजभोग थार में साजिकें लें आई सखीन सहित श्रीस्वामिनीजी सहित आछी भाँति अरोगाय पाछें बीरा दीए, तब श्री नन्दरायजी श्री ठाकुरजी को गोद मे उठाय लैकें श्री बलदेवजी कों अँगुरी सों लगाइ लीए उप नन्दादिक नो नन्द और गोप अपने प्रोहित ब्राह्मण को लैकें, आगे वेद धुनि होति चली, या प्रकार सों श्रीनंदरायजी पधारें और श्री यशोदाजी गोपीन कें जूथ में सबकें संग भेली होइ श्री स्वामिनीजी को गोद

में लीए वात्सल्य भाव में मग्न होइ होरी को डांडो रोपन गाँव के खेडें पें आए। उततें श्री बृषभानजी, श्री कीरतीजी आछें बसन आभूषन पहरिकै गोप ब्राह्मण कें जूथ में मिलिकें पधारें, और कीरती जु गोपीन कें जूथ में, ब्राह्मण वेद धुनि करत जात है।, होरी कों साज सब लेइकें होरी पास आए। ताही समय एक ब्राह्मण दोउ ओरके मिलिकें एक बड़ो काष्ठ लंवों हतो, सो ता काष्ट को होरी कें मध्य में ठोड़ो कियों। तार्कें ऊपर धुजा बाँधी हैं कहे तें अपनी जीत हार जानिवें के लिए, वहाँ ब्राह्मण सों वेद मन्त्र को उचारण करत है, श्रीनन्दरायजी, श्रीबृषभानजी पूजन करि उठिकें प्रार्थना करि चोवा चन्दन अरगजा छिरकि अवीर गुलाल सों छिरकिकें पाछें श्री नन्दरायजी श्री वृषभानजी परस्पर मिले। उप नन्दादि आठ भाई श्री वृषभानजी सों मिले, पाछें श्री यशोदाजी, श्री कीरतीजी अत्यन्त प्रीति सों परस्पर मिलीं, सो कैसी शोभा भई हैं, मानो आनन्द और प्रेम दोऊ स्वरूप पधारिकें आपुस में मिले हैं। और श्री नन्दराय जी के घर के गोप और श्री वृषभानजी के घर के गोप मिले। पाछें ब्रजभक्त कुमारिकर ओर गोपी मिलन लागीं। सो सबन को मिलन देखिकें, श्री स्वामिनीजी और श्री चन्द्रावलीजी सखीन सहित रोमाँच होइ आई। जो हम श्री ठाकुरजी सों मिलेंगे।

ताही समें श्रीठाकुरजी नें जितनी गोपी हती तितनें स्वरूप सखी कें धरिकें सबन कों मिले। सबन को ताप दुरि कियो। पाछें श्री ललिताजी नें श्री यशोदाजी कें आगें श्री ठाकुरजी को थोरों सा छिरकिकें श्री यशोदाजी सों विनती करी, जो श्री यशोदाजी, श्री ठाकुरजी को मेरी गोद में देऊँ तो तुमको छिरकों। तब श्री

यशोदाजी नें श्री ठाकुरजी कों ललिताजी की गोद में दीये। ताही समय श्री स्वामिनीजी नें सखीन को आग्या दई। सो श्री यशोदाजी और श्री नन्दरायजी श्री बलदेवजी आदि सबन को छिरकों। तब गोपी सब दैरिकें श्रीनंदरायजी, श्रीबलदेवजी, सम्बन्धी जितने गोप हते ते सबनको छिरकें। सो श्री ठाकुरजी ने जान्यों ये सखी सब मेरी मैया की हँसी करेंगी। यह जानिकें मधुमंगल, श्रीदामा इत्यादिक सबन सों कही जो तु जाइकें श्री वृषभानजी की और श्री कीरतिजी की गांठि जोरो, तब सखा हते सो श्री वृषभानजी कूँ और कीरतिजी को दोउन को छेरि पकरिकें खेंचिकें गाँठि जोरी, इहाँ सखीन नें श्री नन्दरायजी और श्रीयशेदाजी की गाँठि जोरी। तब श्रीनंदरायजी श्रीयशोदाजी रंचक लज्जित भए, पाछें मनमें प्रसन्न भए जो श्री प्रभुजी ने हमको कन्हैयाँ जैसो पुत्र दीयों, तब हमकों इतनो सुख भयों है, तातें अपने परम भाग्य मानिये।

तब श्री स्वामिनीजी ने श्री ठाकुरजी सों कह्यो जो तुमारे पिता श्रीनन्दरायजी और श्रीयशोदाजी बडे ही निर्लज्ज है, जो यहाँ सबके आगें गाँठ जोरी हैं, तब श्री ठाकुरजी कहे, जो हमतो दस गाम कें छोटे जमीदार है, परन्तु श्री वृषभानजी तो ब्रज में बडें राजा कहावत हैं, सों आज उनहूने निर्लज्ज होयकें गाँठि जोरी है। और हमारे संगकें सखान सों हँसी मसखरी करत हैं तब श्री स्वामिनीजी पाछें देख लजाय सबन सों कही जो यह ते उचित है, जो श्री नन्दरायजी की और श्री यशोदाजी की गाँठि जोरी हैं यामें तो हँसी पूरी नांहि परत। यासों श्री यशोदा जी और मेरे पिता की गोठ जोरी तो बडी हँसी होइंगी, सब सखी हती जो श्री यशोदाजी

के पीछें चली, सों यह भेद श्रीठाकुरजी नें जान्यो, जो मेरी मैया की हँसी करेंगी।

यह जानिकें अपने सखानसों समुझाइकें कही जो अब ऐसो करो, मेरे पिता ओर श्री कीरतिजी की गाँठ जोरो, तब सखा श्री की किरतिजी को लेन चले, और सखी हती सो श्री यशोदाजी की लेन चली, इतनें में श्री वृषभानजी के पास जाइकें, इतनो गुलाल उड़ायो सो चारो ओर अँधियारों होई गयो, कछु अपनो परायो काहुकूँ सूझें नांहि तब मधुमंगल श्री कीरतिजी कूँ पकरिके होरी डांड़े के पास लायकें खड़ी करी, तहाँ उनको श्री यशोदाजी को भेष बनयों और मधुमंगल श्री नदरायजी सो कह्यो जो तुमको श्री कृष्णजी बुलाबत है,सो वेगि होरी डांडे के पास चलो, काहेतें जो श्री यशोदाजी तुमारे ऊपर कोप कियो है, जो कहत है जो मैं तो मेरे कन्हैयाँ को लेइकें न्यारी रहूँगी। यह सुनिके श्री नन्दरायजी कहे जो या कन्हैयाँ को मैं राखूँगों वह तो तनक माखन कें लिए ही कन्हैयाँ को बाँधत हैं वो सुखेन मेरे घरसो न्यारी होइके रहे, या प्रकार श्री नंदरायजी नाना प्रकार के वचन कहन लागे, तब मधुमंगल ने श्री नंदरायजी कें कान में कह्यो, जो अब ताँई ब्रज में जो तुम्हारो नाम है जो सब ब्रजवासी यह जानत है, जो श्री नंदरायजी, और श्री यशोदाजी में परस्पर स्नेह रहत है, इनके इहाँ कबहुँ विरोध नांहि। ताते हूँ तो तुमारे घर को ब्राह्मण हूँ, सो तुमारो भलो चाहत हो, सो तुम श्री यशोदाजी को कछु बोलियो मति, ओचका भुजा पकरिकें घर ले चलो, पाछें घर चलिकें हम तुम समझाय लेइगें।

यह वार्ता मधुमंगल की सुनिकें श्री नंदरायजी कहें, जो मधुमंगल

तू परम है, हमारे घर को है वेगि चलि तू जैसे कहेगो वैसों ही करेंगें। या प्रकार मधुमंगल और श्री नन्दरायजी होरी डांडे के पास आऐ, तब श्री कीरतिजी नें श्री नन्दरायजी को घूँघट में ही हाथ जोरि कह्यो, जो इहाँ मत आओ, पाछे श्री कीरतिजी नें मनमें संदेह करयो जो आज कहा श्री नंदरायजी बाबरे भये है ? जो मेरे निकट चले आवत है, तब मधुमंगल नें श्री नन्दरायजी सों कह्यो , जो देखो यशोदाजी तुमकों देखिकें हाथ फिरायकें कहत हैं, जो इहाँ मति आओ मै न्यारी रहूँगी, तब श्री नंदरायजी औरहू वेंगि चले, तब श्री कीरतिजी चार्‌यो ओर चादर लपेटिकें बैठि गई, इतने में श्री नन्दरायजी ने श्री कीरतिजी भुजा उठायकें ठाड़ी करि लीनी, तब कीरतिजी डरपिकें भुजा छुड़ावन लागी, तब श्री नन्दरायजी ने कीरतिजी को दोनों भुजा पकरिकें उठाय ठाडी करि लीये। और कहें जो मेरे तनमें तुम जैसो बलि नांहि, या प्रकार श्री नन्दरायजी, कीरतिजी कूँ खीचत है, और श्री कीरतिजी मारे डरकें काँपति, है और मनमें विचारत है जो आज श्री नंदरायजी मेरे पीछे क्यों परत है ?

इहाँ सखीन ने श्री यशोदाजी, और श्री वृषभानजी को मिलाइकें गाँठि जोरी, सो श्री वृषभानजी तो पतरे सूक्ष्म अंग है, ओर श्री यशोदाजी बहुत भारी पुष्टि हैं, और श्री यशोदाजी में बलहू बहुत है, सो ज्यों ज्यों श्री यशोदाजी चलें, त्यों-त्यों श्री वृषभानजी संग खिचत चले आवें। या प्रकार श्री वृषभानजी और श्री यशोदाजी को देखिकें श्री स्वामिनीजी ने श्री ठाकुरजी सों कही जो तुम अपनी मैया तें कहो, जो मेरो पिता तो बिचारो दूबरो है, बाके पीछें काहेकूँ परी है ? रंचक अपनी मैया को बरजो तो सही

उनकूँ रंचकहू लाज नांहि ? तब श्री ठाकुरजी हँसिकें कहें, जो होरी के डांडे के पास अपनी मैया कूँ तुमहूँ देखो, तब श्री यशोदाजी ने हूँ देख्यों, और श्री स्वामिनीजी ने हूँ देख्यों, तब श्री यशोदाजी प्रसन्न होइ श्री वृषभानजी की भुजा पकरिकें होरी डांडे पास ले आई। तब मधुमंगल सखा ने श्री कीरतिजी की और श्री नन्दरायजी की गाँठि जोरि दीनी, तब श्री नन्दरायजी, श्री यशोदाजी को श्री वृषभानजी के निकट देखे, तब श्री नन्दरायजी, मधुमंगल सो कहे, जो श्री यशोदाजी तो वृषभानजी के निकट हैं, तू मोको भूलाय के किनके पास लायो है ? यह कौनकी स्त्री सो गाँठि जोरि है ? तब मधुमंगल ने कह्यो जो सुनो श्रीनन्दरायजी जब श्रीयशोदाजी को पकरिके सखीन ने श्री वृषभानजी सों गाँठि जोरी, तब में जानी मेरे श्रीनन्द, यशोदाजी की हँसी होइगी। तब मैं इतनो छल करिकें श्री वृषभानजी की बहू कीरतिजी है तिनसों गाँठि जोरी है। काहे ते मैं तुमारे घरको ब्राह्मण हों ताते तुमारे घरको भलो मोको कीयो चाहियें। यह सुनिकें श्री नन्दरायजी, मधुमंगल ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्री नन्दरायजी प्रेम मगन होइकें हाथ जोरिकैं श्री वृषभानजी सों विनती कीये, आज होरी के दिन में अपराध मेरो क्षमा करियों। तातें आजु पलटो करों। यह मेरे कन्हैंयाँ पुत्र की माता कों तुम घर ले जाऊ, और कीरतिजी को हमारे घर पठाइ देहु, तब यह सुनिकें सब वृजवासी हँसे । तब श्री वृषभानजी हूँ होरी के खेल में मगन होइकें श्री नन्दरायजी सों कहें, जो बोहोत आछी बात हे ! हम इन श्री यशोदाजी कें संग श्री कृष्ण कों हूँ राखेंगें, तब श्री नन्दरायजी हूँ प्रेम आनन्द पाइके कहें जो श्री कीरतिजी की बेटी श्री राधाजी

हैं,तिनहूँ को हम राखेंगे यह सुनिकें श्री वृषभानजी कहें जो बोहोत आछी कही और कीरतिजी यह सुनिकें साँची मानिके डरपिकें कहीं जो इहाँ ऐसी भीर में श्री नन्दरायजी ने मेरी भुजा मरोरी है, सो मैं इनकें घर में कैसे रहोंगी। या भाँति मन में डरपिकें लाज छोडी के कही जो मैं श्री नन्दरायजी के घर में कबहूँ न रहोंगी। मेरी भुजा अब ही मरोरी है। यह सुनिकें सब ब्रजबासी हँसे तब श्री नन्दरायजी हँसे के श्री कीरतिजी सो कहे, जो तुम डरपो मति तुमकों घरमें भली भाँति राखेंगे। यह सुनिकें कीरतिजी ने लाज पायकें फेरि कही जो अब मैं श्री नन्दरायजी सों कौन भाँति बचोंगी, तब श्री यशोदाजी ने कीरतिजी सो कही जो मैं तो श्री वृषभानजी सों नांही डरपों, तुम क्यों श्री नन्दरायजी सों डरपत हों ? तब कीरतिजी नें कही तुम काहे को डरपों मेरी राधा के पिता में रंचक हू वल नांही हैं,अत्यन्त सूक्ष्म अंग है। ताते मेरी राधा को पिता तुमते डरपत हैं। ताते तुम नांही, और मेरो सरीर अत्यन्त सूक्ष्म है। सो मैं डरपति हों जो तनिक हूँ में श्री नन्दरायजी मेरो प्रान लेंय, अबही मेरी भुजा मरोरी है तातें मै श्री नन्दरायजी कें घर कबहू न जाऊँगी । यह सुनिकें सब ब्रजवासी हँसे और श्री नंदराजी हँसे और कीरतिजी की भुजा पकरें हते सो ढीली करी तब कीरतिजी भुजा छुड़ायकें भाजिकें दूरि जाइ ठाडी भई। तब अत्यन्त ही सब हँसे। या प्रकार होरी डांडे रोपन कों यह भावना जानकर खेल भयों, डाँडों रोपों सो अलौकिक ब्याह को सूचक हैं।

पाछें ललिताजी ने रेवतीजी, श्री बलदेवजी की बहू रंचक दूरि

ठाढ़ी हती सो वह होरी के कौतिक देखि-देखिकें हँसत हती, सो वहाँ ललिताजी जाइ श्री रेवतीजी सो कही । जो तुमकों श्री यशोदाजी बुलावत है कहत है। जो देखो श्री बलदेवजी की बहू मोकों पालागन करन नांही आई हैं, ऐसी निठुर निर्लज्ज होइकें ठाढ़ी है सो यह राजा की बेटी है, सो याके हृदय में अभिमान है। या प्रकार ललिताजी नें श्री रेवतजी सों कही, तब श्री रेवतीजी ने कही, जों मोकों अभिमान तो नांही है, परन्तु यह डरपत हो जो जैसे श्री यशोदाजी की और श्री नन्दरायजी की गाँठि जोरी है। तेसें मति कहूँ मेरी हूँ जोरे तो मे कहा कहूँ ? मोकों तो लाज बोहोत ही लागत है। तब ललिताजी ने कही, जो तुम या बात को संकोच मति करों। ऐसी सामर्थ कोनकीं हैं, जो तुमसों हँसी करेगो। ये तो ब्रजबासी अहीर है, सो आपुस में हँसी करत है और तुम तो बडें राजा की बेटी हो, दूसरे श्री बलदेवजी की बहू हो, सो श्री बलदेवजी कें क्रोध को सब जानत है, तुमसो हँसी कोई न करेगो और मैं तो तुमारे संग हूँ सो काहू को हँसी न करन देऊँगी। या प्रकार ललिता ने कही, तब श्री रेवतीजी आछी भाँति चादरि औढ़िके ललिताजी के संग चली, इहाँ मधुमंगल ने सबसों बड़े उपनन्द हैं तिनकें कानमें कह्यो, हे बाबाजी तुमारे घर की डोकरी है सो ढूढ़त फिरत है, तुमारे लीए कछु सामिग्री लाई है। सब बनमें सगरें ढूँढयों, यह विचारिकें आई जो उपनन्द बृद्ध हैं, उनकों भूख लागी होइगी तातें तुमकों बोहोत खोज्यो है, तातें यह डोकरी को बोहोत श्रम भयों हैं सो बन में ललिताजी को मिली, सों ललिता लिवाई लाइ हैं तातें अब इतनी दूरि चलो तो तुम आछो, तब उपनन्द नें कही जो वेटा मोंकों तो भूख बोहोत

लागी है, तातें मोंको कछु सुरति नांही है। मैं कौन प्रकारसों चलों ? तब मधुमंगल नें कही, चलों मैं लिवाइ ले चलों तब मधुमंगल कों काँधों पकरिकें उपनन्द चलें, तब मधुमंगल समझावत है, सुनों बाबाजी वा डोकरी कें पास सामग्री है, सों मै माँग्यों सो मोकों दीनी नाँही, तातें मै तुमको डोकरी को हाथ पकराय देहुँगों। सों वाकी कांख में तें सामग्री तुम लीजों तब उपनन्द नें कही तू मोकों डोकरी सों मिलाइ दे, मै डोकरी सों सामग्री ले लेहुँगो ऐसी डोकरी में कहा सामर्थ है, जो सामिग्री न देइगी।

या प्रकार मधुमंगल सखा उपनन्द को श्री रेवतीजी के पास ले आयों तब घूँघट मारें देखिकें उपनन्द नें कह्यों जो अरी बाबरी डोकरी तेरे स्वेत बार ह्वे गए हैं, दाँत टुटि गए है तोहू तेने बड़ो घूँघट मारनों नाँही छोड़ो मोकों भूख बोहोत लागी है, ताते मोकें सामिग्री दे। अब तू कहा बहू वेटी की नाँही लाज करत हे ? तब श्री रेवतीजी अपने मनमें डरपी, जो यह कौन मेरे निकट बोलत हैं तब मधुमंगल नें कही जो ये डाकरी बनमें बोहोत फिरी हैं तातें याकों सरीर की सुधि नाँय, तातें योको पूछो मती याकी काँख मे सामिग्री है सो तुम लेहु तब उपनन्दजी कहे बेटा याकों हाथ तू मोय पकराय दे, तब ललिता ने श्री रेवतीजी को हाथ उपनन्द को पकराय के कही, जो उपनंदजी तुमारी डेकरी श्रम करि मांदी होइ गई है, हाथ आछो गाढ़ो पकरियों तब उपनंद बहुत ही गाड़ो हाथ पकरयों, तब श्री रेवतीजी नें कही जो ऐसो कठिन हस्त कौन को हे ? तब रंचक घूँघट में तें देख्यों । सो उपनंद की डाड़ी स्वेत देखिकें कही जो यह कौन हे, पाछें ललिता सों श्री रेवतीजी नें कह्यो

जो ललिता तुम मोसों छल कीयों, मोको बहुत दुःख दियो मेरी लाज खोइ, तब ललिता ने कही चिंता मति करो होरी के दिन है, बोलो मती, तब श्री रेवतीजी बहुत लज्जा पाइ छुड़ावत हैं, तब ललिता नें उपनन्द के उपरना सों श्री रेवतीजी को साड़ी की गाँठि जोरी। तब उपनन्द सामग्री के लिए काँख में हाथ डारन लाग्यों, तब गोपी ग्वाल सब श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी सहित हँसे, पाछें श्री ठाकुरजी श्री बलदेवजी सों कहें जो दाऊजी ! तुम अपनी बहू कों वरजों । उपनन्द बिचारो डोकरा तातें पीछें परी है, उपनन्द सों हँसी करत हे, सो यह तुमारी हँसी होत है, तब यह सुनिकें श्री बलदेवजी उपनन्द के पास जाय अपनी बहूसो तो सबन के आगें लाज करिकें कछु बोले नांही, ओर क्रोध करिके उपनन्द सों कहें जो उपनंद ! तू वृद्ध सबन में बड़ौ कहावत हें तातें तोकों छोड़त हों। नांय तो मारतो, पराई बहू बेटी सौं हँसी क्यों करी है, या प्रकार श्री बलदेवजी नें उपनंद को डरपायो, तब उपनन्द मारे डरके काँपन लाग्यो और बोल्यो जो श्री बलदेवजी तुम मेरे ऊपर क्रोध क्यों करत हों यह तो मेरी डोकरी है सो कहा जानिये आजु याकों कहा भयों है ? तब ललिता नें श्री बलदेवजी सों कह्यो जो तुम उपनन्द के ऊपर इतनें क्रोध क्यों करत हो ? यह डोकरी तो उपनंद की बहु है, सो उपनन्द को भूख बोहोत लागी है। तातें इनकें पास सामग्री माँगत हे इतने में मधुमंगल नें श्री बलेदेवजी सो कह्यो जो मैं जानत हो, तुमसों श्री कृष्णजी ने कह्यो होइंगो। सो दाऊजी तुम श्रीकृष्ण के बचन को भलो विश्वास करत हो, वह तो लराई करावत है, ताते यह डोकरी तो उपनंद की बहु है, तुम

उपनंद सों क्यों क्रोध करत हो या प्रकार मधुमंगल नें श्री बलदेवजी सो कह्यो, तब श्री बलदेवजी नें उपनंद सो कही जो बाबाजी तुम मेरो अपराध क्षमा करियो, जो मै जान्यो नांही जो डोकरी तुम्हारी बहू है, श्री कृष्ण मोसों तुमसों लराई कराबत है यह श्री बलदेवजी के सुधे बचन सुनिके सब ब्रजवासी हँसे और श्री रेवतीजी ललितासों रिसाइकें कही, जो मेरी लाज खोई है, पाछे उपनन्द श्री रेवतीजी की भुजा पकरिकें श्री यशोदाजी के पास ले गया,और कह्यो श्रीयशोदाजी तुम मेरी ड़ोकरी कों समझावों मोंको भूख बोहोत लागी हैं सो यह मोकों सामिग्री नाँही देत है, तब कह सुनिकें श्री यशेदाजी घूँघट खेलिकें देखें तो श्री रेवतीजी हैं, तब श्री रेवतीजी ने लज्जित होइके कही, जो यह उपनन्दनें मोको बोहोत दुःख दीयौ है, तब श्री यशोदाजी नें उपनन्द सो कह्यो जो तुम सबन ते बड़े चतुर होइकें ऐसे बाबरे होइ गए हो, यह तो श्री बलदेवजी की बहू है, यह सुनिके उपपनन्द लज्जा पाइकें कह्यो जो मैं जान्यो नांही, मोकों तो मधुमंगल ने कह्यो झूँठेई इतनी मेरी हँसी कराइ हैं तब श्री ठाकुरजी, श्रीबलदेवजी सो कही, जो तुम मेरो कह्यो नांही मान्यों। उलटी मोकों झूँठो कियों सो देखों तुमारी बहू निकसी के नांही ? तब श्री बलदेवजी रंचक रूखें होइ क्रोध मे बोलो जो श्री कृष्ण ! अब तु या समे बोले मती अब तो मेरी लाज जाइगी। अब मैं कहा करों ताते अबही तू मोसों बोलें मती या प्रकार श्री बलदेवजी कहि पाछें श्रीदामा सखा की गोद में माथों धरिके अपनी मुख कमल अपने उपरना सों ढाकिकें पौढ़ें।

इतने में मधुमंगल सखा हो सो श्री नन्दराइजी कें घर गयों।

सो रोहिनीजी तहाँ सगरी सामिग्री सिद्व करिकें श्रीयशोदाजी को मारग जोवति हैं, जो अब श्री ठाकुरजी पधारें तो अरोगाईयें तब मधुमंगल नें कह्यो जो तुमकों श्री यशोदाजी वेगि बुलाबत हैं आज उत्थापन सैन भोग पर्यन्त तहाँ होइगी, ताते वेगि चलो या प्रकार मधुमंगल नें कह्यो तब रोहिनीजी ने कही, जो मैं तो सब सामिग्री सिद्व करि राखी है, अब कैसे करों, तब मधुमंगल नें कही एक बड़ी गांठि बाँधिकें मोको देउ मै ले चलूँगों, और तुम मेरे संग चलो सो रोहिनी जी एक बड़ी गांठि बाँधिकें मधुमंगल सों कही जो यह गांठि बाहोत भारी है। सो कोन प्रकार चलेगी, तब मधुमंगल नें श्री कृष्ण को सुमिरन करिकें बल करिकें माथें पर गाँठि उठाइकें ले श्री रोहिनीजी सों कह्यो जो वेगि चलो श्री यशोंदाजी उहाँ बैठी है। यह सुनिकें श्री रोहिनीजी आभूषन वस्त्र पहरिकें चादरि कें ऊपर ते आछो घूँघट मारिकें चलों, इतनें में घरकें बाहिर श्री वृन्दावन तें संकेत आस पास जब आई, तब श्री स्वामिनीजी ने देखी सो श्री ललिताजी सों और श्री चन्द्रावलीजी सों कही, जो तुमतो परम चतुर हों, श्री रोहिनीजी आवत हैं, सो इनहू की हँसी करी चाहिये, तब यह श्री स्वामिनीजी की आग्या मानिकें श्रीललिताजी , श्री चन्द्रावलीजी ने दूरि ते श्रीरोहिनीजी कों घेरि अबीर गुलाल उड़ाय अंधियारी करि दीनी, इतने ही में कीरतिजी ने ललिताजी सों कही, जो मेरी सखी होइकें मोको श्री नन्दरायजी सों नांही बचावत हों, यातें तू मोंको एकान्त ठोर बताइ देकें पाछे तू इहाँ खेलनकों आइयों। मोकों श्री नन्दरायजी सो डर लाग्यों और श्रम हूँ बोहोत भयो हैं तब यह सुनिकें ललिताजी नें श्री कीरतिजी सों कही जो तुम मेरो निकुँज

मंदिर है, तहाँ चलों, उहाँ ऐसी लता सघन है, सो कोई जानत नांही, तब श्री कीरतिजी ललिताजीसों कही जो वेगिही मोकों ले चलि जब ललिताजी नें श्रीस्वामिनीजी सों और विसाखाजी सों कही, जो तुम रोहिनीजी कों घेरे रहियों मैं श्री कीरतिजी को एकान्त दैठारि आवति हो। एसें श्री ललिताजी नें कहि श्रीकीरतीजी कों संग लेकैं अपने निकुँज में ले जायकें कही, जो तुम श्री यशोदाजी को भेष धरिके इहाँ पोढ़ि रहों। सो मेरी सखी देखें तो यह जानें जो श्री यशोदाजी पौढ़ी है।

या प्रकार ललिताजी नें कहो, तब श्री कीरतिजी ने श्री यशोदाजी को भेष धरयों पाछें ललिता अपनी सैया बिछाय तापर पधराइ सामग्री अरोगाइ सैयापर सैन कराई । तब सोबत ही नींद आइ गई। श्रमित हती, तासों पाछें ललिताजी होरी खेलमें आई। सो यह भेद श्री ठाकुरजी नें पायो। जो श्री ललिताजी की कुँज में पौढ़ी है, तब श्री ठाकुरजी, ने नन्दरायजी सों कहें जों बाबाजी तुमकों श्रम बोहोत भयों होइंगो ताते तुम चलों तो एकाँत ठौर बताऊँ तहाँ तुम निर्भयतासों बैठो। तब श्री नन्दरायजी, ठाकुरजी सों कहे, जो मोंके श्रम बोहोत भयो है, तातें तुम मोको ले चलो। या प्रकार श्री नन्दरायजी को श्री ठाकुरजी संग ले ललिताजी की कुँज हती, तहाँ कदमन की कदमखन्डी में तहाँ ले आए। तहाँ नाना प्रकार की सघन लता है, फल फूलन के कदमन के रासमण्डल हू अनेक है। नाना प्रकार के पक्षी शब्द करत हैं ताके भीतर निकुँज मन्दिर है तहां श्री ठाकुरजी, श्रीनन्दरायजी को ले जाय पिता पुत्र नाना प्रकार की सामिग्री अरोगे। तब तहाँ देखे तो श्री यशोदाजी सैज्या ऊपर

सोवत है। तब श्री नन्दरायजी ने श्री ठाकुरजी सो पूछी जो यह ज्या ऊपर कौन सोवत है ? तब श्री ठाकुरजी कहें, जो मैया को बहुत श्रम भयो हतो । सो मैया को सामिग्री अरोगाइ के सैन कराइ हैं तब श्री नन्दरायजी, श्रीठाकुरजी पर बोहोत प्रसन्न होय मुख चुम्बन करिकें कहे जो तू भले ठौर लायों तब श्री ठाकुरजी, श्री नन्दरायजी सो कहे, जो तुमारो मन होय तो पौढे रहियो, उहाँ कोई जानत नाँही तुम निर्भयता सों बिराजो। मैं\अब होरी खेल में जात हो, तब श्री नन्दरायजी नें जान्यों, जो बालक को मन खेल में बोहोत है, यह जानिकें श्री नन्दरायजी, श्री ठाकुरजी सों कहे, जो बेटा तुम खेल में जाऊ। यह ठौर कोहूकों मति बतइयो।

या प्रकार तुरत ही श्री ठाकुरजी खेल में आए। काहे तें होरी के खेल मे मुख्य श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी है। जो दोऊन में तें कोउ एकहू ठौर पधारें, तो खेल में आछी भाँति बने नांही तातें श्री ठाकुरजी वेंगि ही खेल में पधारे, तब श्री ललिताजी नें जान्यो जो कुँज में श्रीठाकुरजी ने नन्दरायजी पधारें है। सो श्री ठाकुरजी तो इहाँ आए और श्री नन्दरायजी नहीं आए, सो कहा कारन है ? तब श्रीललिताजी अपनी निकुँज में फेरि चली, तब श्रीठाकुरजी नें नैनन ही में कह्यो जो तू अपनी निकुंज में फेरि क्यों जात हैं ? तहां जायके तू कहूँ मेरो खेल मति बिगारियो। तब ललितानें कह्यो जो मैं तुमारो खेल और सुधारि आऊँगी मैं तुम्हारी प्रसन्नता होइगी, सो मैं करूँगी, तुम्हारी आज्ञाकारनी हो, इहाँ श्री नन्दरायजी सामग्री आरोगि जलपान करि सैया के निकट जाय देखें जो इहाँ, कोई नांही है, रंचक में हूँ सैन करि लेहुँ पाछे श्री नन्दरायजी जहाँ श्री

कीरतिजी सैज्या ऊपर सैन कीए हते, तहाँ श्री यशोदाजी को जानिकें श्री नन्दरायजी हूँ एक ओर सैन किए, सो श्री नन्दरायजी श्रमित भये हते, तातें सेंन करत ही निद्रा आय गई, इतने में श्री ललिताजी ने तहाँ आइकें देखे तो श्री नन्दरायजी और श्री कीरतिजी एक सैज्या पर सैन करिकें पौढ़े है, तब ललिताजी नें श्री कीरतिजी कें केस को जूरो खोलि श्री नंदराइजी को चुटिया खोलि दोऊ मिलायकें आछी गाँठि मारिकें डारी सों बाँधि। पाछे कीरतिजी की साड़ी ले श्रीनन्दरायजी के उपरना सो गाँठि बाँधि। या प्रकार दोऊन को एक चादरि उड़ायकें आपु होरी के खेल में आई । तब श्री ठाकुरजी नें नेंनन ही में ललिताजी सों पूछे, जो मेरो खेल विगारो तो नांही ? तब ललिता ने श्री ठाकुरजी सों कह्यों। जो जब तुम जाइके देखोंगे तब बोहोत प्रसन्न होऊगे। दोऊन के बेनी बाँधी है, ऐसो कारज करि आई हूँ, तब श्रीठाकुरजी ललिता पर बहुत प्रसन्न भए। पाछें ललिता जी, श्रीचन्द्रवलीजी और बिसाखाजी जो श्री रोहिनीजी को घेरि रही हतीं। तहां आइके अबीर गुलाल उड़ाइ अन्ध्यारो करि श्री रोहिनीजी को पकरिकें कीरतिजी को भेष बनायो। इहाँ मधुमंगल सामग्री लाइकें कुँज कें भीतर आछी जतन सो धरिकें जहाँ कोई जाने नांही, इहाँ ललिता श्री बृषभानजी के निकट जाय हाथ जोरिकें कही, जो मैं तुम्हारें घर की हों तातें मै तुमसों एक बात कहत हों और या कारन आइ हों, जो तुमारी बहू कीरतिजी तुमारे आगे इतनो श्री नन्दरायजी पे कोप कियो, परि उनको श्री नन्दरायजी को घर बोहोत ही आछो लाग्यों हैं। सो श्री कीरतिजी,

श्री नन्दरायजी के घर जाय तो हमारी तुमरी लाज जाइ, तातें मै ओर श्रीचन्द्रावली और बिसाखाजी मिलिकें समुझाई, परन्तु मानत नाँही हैं, सो तहाँ श्री चन्द्रावलीजी ने और श्री बिसाखाजी ने घेरिकें राखी हैं, सो तुम वेगेही चलो, समुझाय के अपने घर ले चलियें, तब श्री वृषभानजी कहें, जो स्त्री के चरित्र जाने न जाँइ ? मेरे आगें तो श्री नन्दरायजी को हस्त छुड़ाई भाजी हैं मारें डरके काँपन लागी जो मैं तो नन्दरायजी को मुख कबहू न देखोगी, या भाँति मोकों झुँठैई सुनायों। अब देखि ललिता तू कहति हें जो श्री नन्दरायजी के घर जाति है, तब श्री ललिताजी सो कही जो तुम वेगि चलो यातें कोई जानें नांही समुझाय के घर ले चलियें, तब श्री वृषभानजी ललिता के संग ही चले, सो रोहिनीजी ने देख्यो जो यह तो होरी को दिन हैं सो मेरी हँसी करेंगे, और मधुमंगल हूँ मेरी हँसी करिवे झूँठै ही घरते ले आयो है, तब श्री रोहिनीजी फेरि अपने घर को चली, तब श्री चन्द्रावलीजी और बिसाखाजी अबीर गुलाल को अँधियारी करि, भुजा पकरिकें श्री रोहिनीजी ठाढ़ी करि राखी तब श्री वृषभानजी के निकट आइ श्री चन्द्रावलीजी और बिसाखाजी सों कहें जो वेटी हो तुमतो मेरे घरकी हो परम हितकरीनी हो जैसे मरी राधा बेटी प्रिय है तैसें तुमहू हो मेरे घरकी हो तोहू मोको तुम छिरकत हों ऐसो तुमकूँ न चाहिये। तब श्री चन्द्रावलीजी और बिसाखाजी नें कह्यों जो श्री वृषभानजी तुमतो चतुर प्रभु हो हमनें याकें लिए अबीर गुलाल उड़ायों, जो कोई ओर गोपी को यह तिहारे घर की बात जानि न परें ? और हमतो अनेक भाँति समुझाइ हाथ पकरिकें इनको राखी है, नाय तो कबकी

श्रीनंदरायजी के घर चली जातीं ताते तुम अब इनकों हाथ पकरिकें ले चलो, समुझाये ते कोटि उपाइ ते न समुझेंगी, मै और ललिता बिसाखा इनको बहुत समुझाई हैं, ताते अब तुम वेगिही घरकें ले चलो, इहाँ कोई जाने नांही । घरमें आछी भाँति समुझाईयों तब श्री वृषभानजी नें श्री रोहिनीजी की भुजा गाढ़ी करिकें पकरि लई, वृषभानजी देउ हस्तसों भुजा पकरिकें बहुतेरो बल कीयो, सो श्री वृषभानजी सों न उठी। काहेते श्री वृषभानजी तो देह करिकें अत्यन्त सूक्ष्म है श्री रोहिनीजी थोरीसी भारी है, तब श्री वृषभानजी कहें जो अब मैं कहा कारों ? हे ललिता विसाखा हे चन्द्रावली यह मेरी लाज खोवेगी तातें भई सोतो भई, परन्तु अपने घरतों बड़ी बात है। तब ललिता, बिसाखा श्रीचन्द्रावलीजी ने श्री वृषभानजी सों कह्यो जो एक जतन हैं जो तुम करो तों ! तब श्री वृषभानजी कहें जो ललिता वेंगि बताइ ज्यों घरले जाऊँ, पाछे मैं घरमें समुझाइ लेऊँगो। तब ललिताजी नें कही, जो तुम कहो तो तुमारे काँधे पर बैठाइ देइ। पाछे तुम ले चलो, तब श्री वृषभानजी कहें जो मोमें इतनों बल नांही है, जो काँधे पर इनको बैठारि के घर ताँइ ले जाऊँ, तब ललिता नें कही तुमको बोहोत श्रम न होइंगों मैं हूँ बिशाखा हैं, चन्द्रावलीजी हैं तुमारे संग पकरें चलेंगी, रंचक तुम बैठारि लेउ तब श्री वृषभानजी बैठै तब श्री रोहिनीजी को ललिता बिसाखा श्री चन्द्रावलीजी उठाय श्री वृषभानजी के काँधे पर बैठाय श्री रोहिनीजी की कटि श्री वृषभानजीकी फेंटिसों बाँधि एक ओर श्री चन्द्रावलीजी, विसाखाजी एक और ललिताजी,श्री वृषभानजी की भुजा पकरी के उठाय लीए। पाछें मधुमंगल दौरिकें श्री वृषभानजी की भुजा पकरिके उठाय लीए।

पाछे मधुमंगल चाल से चलों तब ललिता, बिसाखा चंद्रावली ते श्री वृषभानजी कहें, जो भार बोहोत है, तब ललिता नें कही जो अब या समय बोलो मती, कहा हम नांही जानत हैं तातें काहू भाँतिसों दुख सुखसों घर ले चलो, तब श्री वृषभानजी चुप रहें।

इहाँ श्री ठाकुरजी नें श्री बलदेवजी सों कह्यो जो दाऊजी तुमतो श्रीदामा की गोद में सोए हों, और इहाँतो श्री वृषभानजी ब्रजके राजा तुमारी माता श्री रोहिनीजी को काँधे पर धरिके अपने घरको लीए जात है सो ब्रज के राजा है मेरी तो कछु चलत नांही उनसों, तातें दऊजी तूमसों जतन बनें तो जतन कारो, श्री रोहिनीजी बहुत ही लाज मानकर दुःख पावति हैं। यह सुनिकें, श्रीबलदेवजी को एकतों पहले को क्रोध उपनन्द और श्री रेवतीजी को प्रसंग को भयो हतो और दूसरो श्री रोहिनीजी को सुन्यों सो तत्काल एक भारी लठा लैकें वेगि ही श्री वृषभानजी के सनमुख आय कहें, जो वृषभान तू राजा हैं, तो अपने घरको है इतनो तोकों कहा अभिमान है ? जो मेरी माता कों तू अपने घर ले जाइगो, तातें मै तोकों आज आछी भाँतिसों शिक्षा देऊँगो, जो तू राजा होइकें फेरि काहूकों दुख न देय, तू अपने मनमें यह जान्यो जो गरीब अहीर हैं ये हमारो कहा करेंगे ? सो मोकें तू नांहीं जानत हैं आज कोटि उपाय करो। परन्तु तोकू छोड़ो नांही । या प्रकार श्री बलदेवजी क्रोध होइ बचन कहे, ताही समय श्री बलदेवजी के अरून नेत्र होइ भृकुटी अत्यन्त टेढ़ी होइ ओष्ट फरकन लागे, सो यह छवि श्री बलदेवजी की देखि श्री. वृषभानजी तो मारे डरके काँपन लागे, जो अब मोकों श्री बलदेवजी निश्चेः मारेंगे। सो भयकें

मारे श्रीवृषभानजी की बानी बन्द होइ गई, कछु बोलि सके नांहीं ? और ललिता बिसाखा श्री बलदेवजी कों दूरि तें आवत देखि, ताही समें श्री चन्द्रावलीजी साहित श्री वृषभानजी को छोड़ि भाजि गई। और मधुमंगल हुतो सोऊ पीछे ते छोडिके भाजि गयो सब ब्रजवासी गाय गोपी डरन लागे, श्री बलदेवजी के डरकें मारे कोऊ निकट आवें नांहि यह संसार में भयानक रस को उदय भयो और श्रीयशोदाजी को वात्सल्य रस ऊपर कहि आए हैं और सब आगें कहें तब श्री बलदेवजी के डरके मारे श्रीवृषभानजी बैठ गये। तब श्रीरोहिनीजी, श्रीवृषभानजी के काँधे ते उतरिकें कहें, जो मोकों वृषभानजी ने बहुत दुःख दियो है। इतने में श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी, श्रीबलदेवजी कें निकट आए। तब श्री स्वामिनीजी नें श्री ठाकुरजी सो कही, जो तुम अपने दाऊ को वरजो मेरे पिता के ऊपर क्रोध काहे को करत हे ? खोटे तो सगरे घरके लोग है, श्री रेवतीजी ने तो बरो बाबरो उपनन्द हो ताको पकर्‌यो और श्री यशेदाजी मेरे पिता सों गाँठि जोरिकें कह्यो जो मैं तुम्हारे घर चलोंगी। और श्री रोहिनीजीकी यह प्रगट लीला देखत हों, जो मेरे पिता के संग चली है, सो होरी के दिन मे क्रोध चाहयें नांही, तब श्री ठाकुरजी, श्रीबलदेवजी सो कहें जो तुम ललिताजी के कुँज मे जाओ तो तुमारो क्रोध छिमा होइ जाइ। तब श्री वृषभानजी तो उठिके अपने गोपन के निकट आए और श्री ठाकुरजी हँसिके श्री बलदेवजी कों मिले। ताही समय श्री बलदेवजी को क्रोध सब मिटि गयो। पाछें सब साज समाज श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी, श्रीबलदेवजी, श्री वृषभानजी गोप सगरे

श्री ललिताजी की कुँज मे चले। तब श्री स्वामिनीजी ने श्री ललिताजी सों कही, जो आज हम तुमारें घरमें चलत हे, सो मोकों कहा भेट धरोगी ? तब श्री ललिताजी ने कही जो आज श्री वृषभानजी ने जो परम प्रिय वस्तु सोंपि दई है, सो श्री वृषभानजी को भेट धरोंगी। तामे तुमारोहु सनमान आइ गयो। और मैं तुमारी दासी हों सो सगरो घर तुमारो ही तो हैं, तुमारे पीछे मोको सगरोई सुख है, तब श्री ठाकुरजी हँसिके कहें, ललिता मे तुमारी कुँज मे चलत हों, सो मोकों कहा भेट धरोगी ? तब ललिताजी नें मुसिकाइकें कही, जो अनेक जतन करिकें नाना प्रकार की सामिग्री बहुत साल ते सैंन की सिद्व करीं हैं, सो तुमारे आगें भेंट धरोंगी, सो तुम कृपा करिकें अँगीकार करोगे। मेरो मनोरथ सदाँ ते तुम सिद्व करत आए हों, और तुमही सिद्व करोगे। सो आज मेरे घर पोहनाई है। या प्रकार परम सनेह की वार्ता परस्पर करत जात ललिताजी की कुँज में सब समाज सहित आए। तब श्री स्वामिनीजी, श्रीठाकुरजी, श्रीबलदेवजी, श्रीवृषभानजी, मधुमंगल सखा इत्यादिक सब सखी देखें तो सुन्दरि चादरि औढे सैज ऊपर कोउ पौढ़े है। तब श्री स्यामिनीजी ने श्री ललिताजी सों कही, जो तेनें अपनी सैज ऊपर कौनसे गोप गोपी को सुवाइ राख्यो है, तब ललिता ने कही, जो मैं तुमारे संगही खेल में हती। परि अब देखिये यह कौनके घर की बात है तब जाइकें तहाँ श्रीनन्दरायजी हते तहाँ मुख की और की चादरि उघारी । तब सबन नें श्री नन्दरायजी को मुख देखयों, पाछें ललिता श्री वृषभानजी सों कही जो तूम श्रीनंदरायजी को हाथ पकरिकें उठाइ लेउ। तब श्रीवृषभानजी कहें जो मोमें इतनो बल

नांहि, मैं श्रीनन्दराय को उठाय लावो, ताहूमें आज मे श्रमित बोहोत हों, तब श्री बलदेवजी नें श्रीनन्दरायजी की भुजा पकरिकें ऐसो खेच्यों सो श्री कीरतिजी साहित उठि आए, तब श्री नन्दरायजी आपु नींद मे कहें, जो मरी भूजा कौन ऐंचत है, सो यह शोभा देखिकें श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजी और सखा सब बहुत प्रसन्न होइके हँसे, और श्री वृषभानजी बहुत ही लज्जित भए। तब श्री स्वामिनीजी रंचक लज्जित होयकें कही, जो इहाँ श्री नन्दरायजी और श्री कीरतिजी कैसें आए ? फेरि श्री स्वामिनीजी ने ललिता जी सो कही, जो ललिता तेनें मेरी मैया की हँसी कराई, तब ललिता ने श्री स्वामिनीजी सो हाथ जोरिके बिनती करी जो मोसों ऐसो मति कहो, मै ते आपकी सखी हों और मैं तुमारे पास होरी खेल में हती, सो मैं या बातको भेद जानत नांही हों, तब ललिता सों श्री स्वामिनीजी ने कही, जो अब तू ऐसी हँसी श्री ठाकुरजी और श्रीबलदेवजी की करावे, सो सब ब्रजवासी हँसे तो जो तू मांगे सोइ तोकों देहुँगी। या प्रकार श्रीस्वामिनीजी ने कही तब ललिता हँसी। सो श्री स्वामिनीजी सो कही जो ऐसी हँसी श्री ठाकुरजी की अैर श्री बलदेवजी की करों, जो कबहू न भई होय, पनन्तु एक वस्तु मैं माँगत हों, सो तुम अपनी दासी जानिकें मोकें देहू, तब श्री स्वामिनीजी ने हँसिके कही जो ललिता तू ऐसी दीनता काहेको करत हैं ? ऐसी वस्तु कौनसी जगत में है, सो मै तुमसों छिपाइ राखी हों तू मेरी प्रान प्रिय अंतरंगिनी सखी है। तातें जो तेरो मनोरथ होय सो प्रीति सहित माँगि ले, तब बचन बंदन करिकें राखी है, सो तुम रूचिके श्री ठाकुरजी को देउ तो में पधरायकें ले जाउँ। तब श्री

स्वामिनीजी तो छल करिकें रहत हीं, भोरे ही सों कहे, हे ललिता तू इतनोई माँगत है औरहू कछु माँगले। तू अपनी निकुँज मे सामिग्री त्यार करि पाछेंश्री ठाकुरजी को पधराय ले जइयों।

तब श्री ललिताजी नें जितनों सखी हती, तिन सबन सों कह्यो जो आज मेरो काम पर्‌यो है तुमारी सब सेवा को फल है। तातें जितनों गोपी गोप सब ब्रज के श्रीकीरितीजी, श्री बृषभानजी, श्रीनन्दरायजी, श्रीयशेदाजी, श्रीरोहिनीजी, श्रीरेवतीजी, श्रीरेवतीजी, श्रीबलदेवजी आदि बालक तरून वृद्व इन सबन को ऐसी सेवा सुख देहु जो सब ऐ अपनों अपनो घर भूलि जाँइ। तब कोटानकोटि सखी एसी चतुर है। जो एक एक सखीन की दासी अनगिन है। तेसी कोटि निकुँट मन्दिर रतन जटित कीए, तहाँ नाना प्रकार के राग भोग और अष्ट सिद्व सहित, सो आगें हाथ जोरें कुँज प्रति ठाड़ी है।, सो एक निकुँज में कीरतिजी, श्रीवृषभानजी कों पधराये। एक निकुँज में श्री बलदेवजी को श्री रेवतीजी को पधराए। एक निकुँज में श्री नन्दरायजी श्री यशोदाजी को तथा रोहिनीजी को पधराए। और न्यारे न्यारे निकुँज में सखा गोपीजन कों तिनकें जो मनोरथ हो। बालक, वृद्व, तरून तिनकें ताही भाँति पधराये, नाना प्रकार की सिद्व हाथ जोरि न्यारे-न्यारे ठड़ी है। सो एसो सुख सगरे ब्रजवासीन नें पायो। जो अपने-अपने घरन की सुधि भूल गए, ललिताजी को वैभव देखिकें चकित होइ गए सो ललिताजी को कोटानिकोटि गुनीं अधिक वैभव, कोटिनिकोटि गुणयुक्त स्वामिनी है सो तिनके कोटानकोटि तिनकी निकुँज है, और स्वामिनीते कोंटान गुन अधिक श्री चन्द्रावली जी की निकुँज है। और श्री चन्द्रवली जी को बराबरि कुमारिका श्री

यमुनाजी को है। तिनहूते अधिक श्री स्वामिनीजी कौ है। ऐसी भांत बनी पदार्थ है। तहाँ सबके मध्य एकांन्त विषे श्री ठाकुरजी, श्री स्वामिनीजी, श्री ललिताजी न्यारी निकुँज मन्दिर में बिराजें । सो यह शोभा श्री ललिताजी को सौभाग्य देखिकें श्री चन्द्रावलीजी और बिसाखाजी को ब्रह्मघट भयो तब मिलिकें दोउ आपस में मतो करन लागीं।

सो निकुँज ते उठिकें बाहिर बनमें आई। सो यह रसशास्त्र में कहें। बिरहनि-बिरहनि दोऊ बार्ता करें। रस में अपनें प्रीतम की, तब बिसाखा सों श्री चन्द्रावलीज़ी नें कही जो हे बिसाखा आज ललिताके भाग्य को पारावार नांही है काहे तें जो श्री ठाकुरजी इनके वसमें है। और श्री स्वामिनीजी नें अपनें मुख तें कह्यो जो मैं तुमकों दए। तातें ललिताजी की बराबरि भाग्य काहूको नांही। तातें हे बिसाखा आपनो एसो कोन दिन आवेगो ? जो श्री ठाकुरजी सो एकान्त कुँज में मिलोंगी। या प्रकार श्री चन्द्रावलीजी, बिसाखाजी सों बिरह के बचन कहन लागीं। सो अपने को श्री ठाकुरजी मिलिकें सुख दीए हैं। सो सुख ये है, सुख को कहत-कहत स्मरण होइ आयो। सो प्रेमबस गद्-गद् कंठ होय आयो सो सरीर सो पुलिकावली छुटी, विरह प्रेम के बस होइ बिसाखाजी के कण्ठ में भुजा मिलिकें कहन लागीं, हे बिसाखाजी यह होरी को दिन रगमगो है। तातें नरनारी के हृदय तें, अनुराग बाहिर निकस्यों है ये सौभाग्यनी नाइका है। सो श्री नन्दनन्दन अपने प्रानपति रसरूप होरी खेलत है और देखि विसाखाजी ये बनकी जो सुन्दर वेली है। सो बड़े बड़े वृक्षन सों लपटिं रहीं हैं, मानो मनमेंइ हँसत है। ओर दखि मोसों

कहत हे, जो देखो हम अपने पतिसों चरन सो लेके सिखा पर्यन्त लटकि रही है। ओर तुम अपने पति कों छोड़ि अकेली फिरति हो, ताहू में एसी रसरूप होरी को दिनन में प्यारे सों बिछुरनों उचित नाँही। तातें हे बिसाखा मै बड़ी अभागिनी हों, रंचकहू श्री ठाकूरजी के चरणारबिंद मे मन नांही लगायों, अपने रूप जोबन, में चतुराई के देह सुखमें, खानपान, मित्या ध्यान मिथ्या भासन करन कों अपनें प्रभु सों न्यारी रही । तातें हे नाथ ! हे नन्दनन्दन ! हे चतुर सिरोमनि ! हे करूणासिंधु ! हमारे प्रीतम प्रानबल्लभ ! हे गिरिराज में धरनहारे ! हे मेरे हृदय के भूषन ! अब मोकों कब मिलोगे मो अभागिनी को कब वेणुनाद सुनाय हृदय सीतल करोगे, मोको अधरामृत दान कब करोगे। मै तुमारी सरनि हों। अनाथ हो अत्यन्त दीन हों, मै सब अंग करि हीन हों, अपनी दासी जानिकें मोपर अनुग्रह करो। या प्रकार के कोटानिकोटि बचन दैन्यता के कहे। सो श्री चंद्रावलीजी को विरह प्रगट भयो। सो अंग-अंग सब सिथल होइ गयो, सगरो श्री अंग पीरो होय गयों, हाथनकी चूरी सब आभूषन ढीलें होइ गए। तप्त बिरह तें स्याँसहू तप्त भयों।

यह दिसा श्री चन्द्रावलीजी की देखिकें श्री बिसाखाजी तो अपनों बिरह भूलि गई । कही मै कहा करों ? इनको कौन प्रकार समझाँऊ, या प्रकार बिसाखाजी विचार करन लागीं और एक ओरितों बिसाखाजी बिरह समुद्र में डूबिकें मगन ह्वे गईं। पाछें श्री ठाकुरजी की दयालता के गुन हृदय में स्फुरित होइ आए, तब बिरह के समुद्र ते निकसिकें श्री चन्द्रावलीजी सों कहें - हे

चन्द्रावलीजी मोकों श्री ठाकुरजी को बिसवास है, जब जब मोको बिरह में विकलता भई है, तब तब श्री ठाकुरजी नें मोपर रक्षा करी, यामें संदेह नांही हैं। कबहु मेरे मनमें विरोध लाए नांही है, तातें तुमकों दासी जानि रक्षा करि दरसन देहिंगे, या प्रकार धीरज के बचन कहत कहत फेरि विरह होय आयो, सो कबहू तो बिरह होइ कबहू धीरज होय, सो यह दिसा श्री चन्द्रावलीजी की श्री ठाकुरजी ने जानी है, तब एक दूसरो स्वरूप सखी भेष धरिकें श्री चन्द्रावलीजी के निकट पधारिकें कहे, जो तुम इतनों बिरह दुःख क्यो करत हो ? मैं अबही श्री ठाकुरजी के निकट तें आई हों। सो आप श्री ठाकुरजी मेरे आगें ऐसें कहें, जो श्रीललिताजी को मनोरथ पूर्ण करकें श्री चन्द्रावलीजी को मनोरथ पुरन करेंगे। तातें तुम विरह क्यों करत हो ? मै सोंह करिके कहति हों। जो तुमकों श्री ठाकुरजी मिलेंगे, इतनों सुनिकें श्री चन्द्रवलीजी आँखि खोलिके परम सुन्दर सखी को देखिकें अपनो परम प्रीतम जानिकें मिली, सो श्री चन्द्रावलीजी को अंग अंग सीतल होइ गयों, पाछें श्री चन्द्रावलीजी ने कही - जो हे प्रानप्रिय ? तू मोकों अमृतरूप बचन सुनायकें जिवाई और मेरो हृदय जैसें श्री ठाकुरजी मिले सो समझ सीतल होत हो, तेसे तुमारे मिले ते मेरे हृदय में सीतलता भई हैं तातें हे सखी ! जब ताँई मोकों श्री ठाकुरजी मिलें सब ताँई तू जाइ मती, तब सखी ने कही सुनो चन्द्रावलीजी तुम अपने निकुँज में प्रभुन के अर्थ नाना प्रकार की सामग्री त्यार करो, और मैं वेगिही श्री ठाकुरजी पधराई लाउँगी, यह सुनिकें श्री चन्द्रावलीजी अपने गरे में ते गजमोतिन की माला उतारि प्रिय सखी कों

पहरायकें कही हे सखी ! मेरे बिरह रूप समुद्र में मरें प्रान की रक्षा ते करी, अब जो तुम माँगोगी सोइ मै देहुँगी तुम श्री ठाकुरजी को वेगिही पधराइ लाऊँ, तब श्री ठाकुरजी उहाँ ते अर्न्तध्यान भए, तब श्री चन्द्रावलीजी बिसाखाजी को हस्त पकरिकें कंठ में भुजा मेलिके अपनी कुँज में पधराइ ले गई । ताको नाम चन्द्रावलीजी की कुँज है, तहाँ पधराय के अपनी कोटानिकोटि सखी हैं तिनसों आज्ञा करी, जो सुन्दर-सुन्दर होरी की सामिग्री सिद्व कारो,अनेक भोग राग कुँज की रचना जो आजु मेरो तुमारे भागि धन्य है। जो श्री ठाकुरजी मेरे घर पधारेंगे।

तब सखीन ने निकुँज मन्दिर परम सुन्दर है, तामें अरगजा सुगन्ध सों सीचें, धुजा, पताका, तोरन, माला अनेक रचना करी है। तब श्री चन्द्रावलीजी स्नान करि परम कोमल बस्त्र पहरिकें केलि सिज्या पास नव आवन बिछाइकें आइ बैठीं। तब अपनी निकुँज की रचना देखिकें सखीन के ऊपर वहुत प्रसन्न भई। ताही समय अमृत बचन बोली, हे लता द्रुमवेली तुम आज बहुत ही परम आनन्द में फले भये प्रसन्न हो, और पशु पक्षी अपने-अपने ठिकानें जहाँ जाकों सुख हतों, तहाँ बराजे लीला को स्मरन करत हैं सबन कें श्री ठाकुरजी की आरति लागि रही है। तिनकुँ देखिकें श्री चन्द्रावलीजी ने कही - जो तुमारी आरति तें श्री ठाकुरजी पधारेगें मै जानत हों, तुम मोंको परम सुखदाई हो मेरे दुःख ते दुःखी हों, मेरे सुख ते सुखी हों।

फेरि चंदौवा तनवाइ दीयो तकिया, सिज्या, माला, बीड़ा, जल की झारी, अरगजा, अबीर, गुलाल, चोबा, श्रृंगार करनके अनेक

आभूषण वस्त्र इत्यादिक सिद्ध कीए, देखिकें कह्यों, जो आज प्रभु पधारेंगे तब यह सामिग्री सुफल होइगीं, सब मनोरथ सुफज होइगो, श्री ठाकुरजी पूरन करेंगे । पाछें सिज्या के पास अनेक चित्र मनि माणिक सो जटित हास्य प्रसंग कें है, सो दखिकें लजाय मान भई, और हृदय ते अंग अंग में काम को उद्दीपन भयो। तब श्री चन्द्रावलीजी आभूषण की पेटी पास धरिकें दर्पन अपने हस्त कमल सों लए, एक एक आभूषन भाव सहित धराय दर्पन देखिकें भाव सहित विचारत है, जो श्री ठाकुरजी पधारिके मेरे आभूषन कों या प्रकार अंगीकार करेंगे, ता प्रकार कह्यो नांही जाय, श्री महाप्रभुजी की कृपा ते हृदय में स्फूर्ति होइंगी। या प्रकार श्री चन्द्रावलीजी अपनी कुँज में श्रृंगार करत है।

और उहाँ श्रीललिताजी, श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी को अनेंक भाँति को मेवा आदि सामिग्री अरोगाइ परम दैन्य होइकें श्री स्वामिनीजी की चरन सेवा करन लागीं। तब श्री स्वामिनीजी बोली जो ललिता मैं परम प्रसन्न हों, तातें तेरो मनोरथ होइ सोई माँग ले, तब ललिता नें कही - जो मैं नाना प्रकार की सामिग्री अनेक जतन सो सिद्धि करि रखी है, सो तुम श्री ठाकुरजी कूँ मेरे संग देऊँ तो अरोगायके अबही हाल आऊँ, यह सुनिके श्री स्वामिनीजी ने श्री ठाकुरजी सों कहो - यह ललिता अपनी परम प्रिय सखी हैं ताते याकें संग पधारि सामिग्री अंगीकार करिके वेगिही मेरे निकट आइयो, यह सुनिके श्री ठाकुरजी चुप होइ रहे। तब ललिताजी नें बिचारो जो कृपा करि श्री स्वामिनीजी ने आज्ञा दई हैं, और ये उठें नांही ? तब ललिताजी नें भुजा पकरिकें श्री ठाकुरजी की उठाय

लए, तब श्री ठाकुरजी ठाढ़े भए, तब श्रीस्वामिनीजी बिरह बस होइकें वेगिही उठिकें, श्री ठाकुरजी की भुजा पकरिकें अपने निकट बैठाय लीए। और ललिता सों कहो अरी ललिता ! तू मेरो प्रानही माँग्यो, अब मैं कहा करों ? तातें और जो फेरिकें माँगि, सोइ देऊँ, मेरे प्रानन कूँ मांगे तो याही छिन देहूँ। परि ये कैसे दीए जाँय ? यह सुनिकें ललिता चकित होइकें ठाढ़ी होइ रही, कछु बोली नांही, तब श्री स्वामिनीजी ने कही जो अरी ललिता और तू कछु न लेइगी, मै जानत हों, अब मै काहू को बिस्वास करि वरदान न देहुँगी।

या प्रकार बचन कहत कहत बिरह समुद्र मे मन जाइ पर्‌यो । तब कही - अरी ललिता ! तू मेरे प्राननाथ कों कहाँ लेगई ? आजु तें मोसों एसो क्यों कर्‌यो ? या प्रकार के विरह के बचन कहे। और हृदय के भीतर अंग अंग में बिरह छाय गयों और आभूषन हते सो सब आपुही ते सिथिल होइकें भूमि पर गिर परे। चूरी आदि सों श्री ठाकुरजी सब अपने उपरना में बाँधि लीए। मोतिन की माला तथा नकवेसरि, बेंदी, माँगगुही, हती सो सब बिरह आग ते कारे परि गए। श्रृंगार सब उलटे होइ गए। पाछें श्री स्वामिनीजी जो श्री ठाकुरजी के कंठ में भुजा मेलिके कही, जो सखी तू मोकें श्री ठाकुरजी सों मिलाइ, ललिता श्री ठाकुरजी कों ले गई हैं तहाँ तू मोहुको ले चलि-नेत्रन ते अश्रुधारा के संग काजल कुच कुम-कुम बह चले। तिलक बेंदी, सिंदूर पसीना ते बहि चल्यो। यह प्रति छवि बिरह ह्वे गई, ऐसो बिरह देखिकें श्री ठाकुरजी मनमे कहे, जो मेरे गए विना ही इतनों बिरह भयों। सो मेरे बिरह में इनकी कौन दिसा होत होइगी ? या प्रकार को बिरह ललिताजी तो

देखिकें चकित होय रही, मनमे कही जो इनसों श्री ठाकुरजी मोको कौन प्रकार मिलेगे तब श्री ठाकुरजी ने नैनन ही मे ललिता को धीरज दीयों। पाछें श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी के कंठ में भुजा मेलि उढायकें ठाढ़ी करी, तब श्री ठाकुरजी ललिता को आग्या दीये। जो अेक और मैं हूँ अेक और तुम पकरो, तब ललिता एक और जायकें पकरी, तब तीनों स्वरूप ललिता की कुँज मन्दिर परम सोभाग्यमान हतो, तहाँ संकेत स्थल सहित जहाँ कोकिलाबन हतो, तहाँ पधारें तहाँ मनिकी केलि सिज्या बिछी हती, तहाँ श्री ठकुरजी, श्रीस्वामिनीजी कुँ सेंन कराय श्रीस्वामिनीजी सों कहे, जो रंचक तुम उपरना सों मुख ढँपिं सैन करो, तो मैं अबही श्री ठाकुरजी को पधराय लाऊँ ।

तब श्री स्वामिनीजी नें श्री ठाकुरजी की भुजा पकरिकें कही। जो हे सखी तोकों तो मैं कबहु न छोड़ोगी, ठाकुरजी कहें, जो तुम मोकों छोड़ो मती परि मुखतो ढाँपो, तब श्री स्वामिनीजी एक हाथ सों तो श्री ठाकुरजी कों पकरें रही, और एक हाथसों मुख ढाँपो, तब श्री ठाकुरजी नेंनन में ही श्री ललिताजी सो कहें, जो तू अपनी निकुँज मे चलिके त्यारी करि, मै अबही याही छिन आवत हों, तब ललिता उठिकें अपनी निकुँज को चली, परि हृदय में धीरज रंचकहू न रह्यो, जो कौन प्रकार आवेगे ? तब श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी के कानमे कहें, जो श्री ठाकुरजी ललिताजी की कुंज में ते पधारे है सो इनको श्रवन में सुनत ही बिरह सब दूरि भयो है। तब मुख खोलि उठिकें देखें तो श्री ठाकुरजी सिज्या ऊपर विराजे सो देखिके परम प्रियसों मिली। जैसे प्रान गवाये पुनः चैतन्य होंय, ऐसे परम

आनन्द श्री स्वामिनीजी पाइ श्री ठाकुरजी के मुख कमल पर हाथ करि चुंबन करिकें कही, जो अब फेरि कहू मति जैयों पाछें नाना प्रकार की सामिग्री परस्पर आरोगि, आचमन करि, बीरा अरोगि परस्पर अधरामृत उगार, लीये, तब ताही समय श्री स्वामिनीजी के श्रीअंग श्रीठाकुरजी के अंग संजोगसों पुष्टि भए। तब श्रीठाकुरजी आभूषन राखे हते, सो पहराये। बाजूबन्द, पोहोंची, कंकन, चूरी वेसर, पछेली, फूल, मुन्दरी, नथुली आदि सब संग के नाना प्रकार के फूलन सों बेनी गुही, अंजन, सिंदूर, तिलक, चिबुक, बेंदी, महाबर, कुच, कुंमकुम अंगराग, सर्व श्रृंगार सिद्वि करि अनेक लीला करी सैन कीए।

श्री ठाकुरजी दूसरो स्वरूप करिकें ललिता को मारग में ही आइ मिलें, तब ललिता दूरिही सों देखि दोरि मिलि प्रसन्न होयकें कही, जो तुम कौन प्रकार सो आए, मैं तो आस छोड़ि चुकी हती, तब श्री ठाकुरजी कहें, जो समुझाइके आयो हूँ, एसें कहि ललिता के कुँजमें चले, इहाँ श्री चन्द्रावलीजी अपने भाव सहित श्रृंगार करत है, और श्री ठाकुरजी को मारग देखत है, बिसाखाजी पास बैठीं हैं, पाछें बिसाखाजी नें मनमे यह बिचारी, जो मैं यहाँ क्यों बैठी हों ! इनकें पास श्री ठाकुरजी पधारेंगे तो मोकौ कहा ? तब श्री चन्द्रावलीजी सों बिसाखाजी ने कही जो ललिताजी की कुंज मे श्री ठाकुरजी है सो मै जाइकें पधराइ लाऊँ। तब श्री चन्द्रावलीजी ने कही, जो प्यारी तू वेगि पधराइ लाऊँ, तब बिसाखाजी निकुंज मंते निकसी बाहिर बनमे आयों देखे तो श्री ठाकुरजी ललिता परस्पर गलबाँही दीए आबत है, सो बिसाखाजी

को देखिके नैनन मे कह्यो ,तब श्री ठाकुरजी कहें, जो तुम अपनी निकुँज में चलिके वेगि ही सब त्यारी करि, मोकें आयो जानियों तब बिसाखाजी अपने मनमे परम आनन्द पाय दोरिके अपनी निकुँज मे जाय नाना प्रकार के अनेक विधि के कुसमन की सैज्या अनेक रागभोग सिद्वि कीए। इहाँ श्री ठाकुरजी ललिता के संग ललिता की कुँज मे पधारि नाना प्रकार की सामिग्री अरोगिकें जो जो मनोरथ ललिता को हुतो सर्ब पूर्ण कीए।

इहाँ दूसरो स्वरूप धरि श्री चन्द्रावलीजी की कुँज में पहले ही पधारि सकल मनोरथ को पुर्ण कीए, पाछें ललिता के इहाँ ते बिसाखाजी कें कुँज में पधारि उनहूँ के मनोरथ पूर्ण कीए कुमारिका श्री यमुनाजी तो श्री स्वामिनीजी के प्रसंग मे जानियों, उनकी कुंज मे जाय उनहू के मनोरथ सिद्वि कीए। पाछें जितनीं स्वामिनी ब्रज में कोटानकोटि हीं तथा सखी सहचरी पुष्टिलीला संबंधिनी जितनीं हे तितने रूप धरिकें तिन सबन के निकुँज मंदिर में पधारिकें सबन के मनोरथ पूर्ण कीए, सो सगरी गोपी यह जाने जो हमारेई पास श्री ठाकुरजी है और काहुके निकट नांही है, तातें अत्यन्त प्रीति हृदय में उपजी, या प्रकार यह बिरह प्रेम को प्रसंग सर्वोपर है। सो या प्रकार सब ब्रजभक्त को सुख देकें पाछें प्रातः काल भयों, तब सबरी गोपीन के निकुँज प्रति श्री ठाकुरजी आधीन होय, एक श्री स्वामिनीजी, श्री कीरतिजी, श्री वृषभानजी हुते, तहाँ पधरीं।

और श्री ठाकुरजी परम आनन्द पाइ श्री यशोदाजी हुती तहाँ पधारे, पाछें सब मिलिकें होरी के डाँडें पास संकेत में आए, तहाँ श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी, श्री बलदेवजी सब मिलिकें स्नान करि

नाना प्रकार के श्रृंगार धराय सगरे भोग अरोगो, पाछें मधुमंगल श्री यशोदाजी के घर ते सामिग्री रोहिनीजी पे ते गाँठि बाँधिकें लायो हतो सो गाँठि श्रीयशोदाजी कें आगें धरें, तब श्री यशोदाजी नें कही, जो मधुमंगल तो ब्राह्मण है, हमतो कैसों लेंइ तब मधुमंगल नें कह्यों जो मेरे जो वस्तु हैं, सो सब तुमारी है, तुमारी दीनी हैं। तातें तुम क्यों संदेह करत हो ? मैं तो तुमारे घरको हों, तुमारे घरकी झूँठन सों मेरो देह प्रान पुष्टि भइ हैं, तब श्री रोहिनीजी ने श्री यशोदाजी सों कहीजो तुम आनन्द सों यह सामिग्री लेहु यह मधुमंगल मेरे पास सों छल करिकें लायों हें यह सामिग्री तुमारेई घर की हैं। यह मधुमंगल एसों हें सो यानें मेरी हूँ हँसी कराई तब श्रीयशोदाजी हँसिकें सामिग्री की गाँठि खुलाइकें मधुमंगल सों कही, जो तुम ब्राह्मण सो अपनी पातरि पहले लेहु पाछें औरन को देइंगे। तब मधुमंगल नें कही जो मेरो ब्राह्मणपनों तो तुमारें पुत्र श्री कृष्ण है, तिनने सब खोयों। उह मोकों सब अपनें झूँठो खवायों तातें तुम मोकों कौनसे दिन ब्राह्मण के कर्म करत देखत हों मैं तो और कछु जानत नांही, तुमारे पुत्र की झूँठी छाक मैं नित्य खात हों। और नित्य ही श्री कृष्ण के संग खेलत हों, मोकों यही आछी लागत हें। तब श्री यशोदाजी ने कही - जो तुम अपनी झूँठन मधुमंगल को मति खबायों करों मधुमंगल ब्राह्मण हैं आपुन अहीर है, तब श्री ठाकुरजी कहें, जो मैं तो मधुमंगल को झूँठन नांही देत यह मधुमंगल मेरे हस्त में ते, थारी में ते, पातर मेते जोरावरी खावत है, सो मैं कहा करों ? और तुमहूँ कछु कहो तो हमतों अपने जान नांही देत हे, तब श्री यशोदाजी मुसिकायकें चुप होइ रही ।

प्रथम श्री ठाकुरजी कों श्रीस्वामिनीजी को अरोगाय श्री बलदेवजी, श्री रेवतीजी, को अरोगाय पाछें सब सखा गोप उपनन्द आदि बैठे हैं और श्री वृषभानजी के घर तें नाना प्रकार की सामिग्री आइ, सो सब मिलिकें अरोगे, नन्द यशोदा सगरे गोप गोपी वृषभानजी, कीरतिजी आदि सब भोजन करि आचमन करि बीरी सबन आरोगी, पाछें श्री ठाकुरजी की स्वामिनीजी की आरति करि, श्री बलदेवजी की श्री रेवतीजी की आरती करि पाछें श्री वृषभानजी कीरतिजी, श्रीनन्दरायजी बिदा होयकें श्रीस्वामिनीजी को ललितादिक सखीन कों संग लैकें अपने घर पधारे। और श्री नन्दरायजी हू श्रीठाकुरजी कों श्रीबलदेवजी कों श्रीरेवतीजी कों मधुमंगल आदि और सखा गोपन सहित उपनन्द सखा गोप वृद्ध बालक सबनकूँ संग लेंकें पधारे, सो सब पाछें अपने-अपने घर गए।

तब ललितादिक सखीन सो श्रीस्वामिनीजी नें कही जो आज होरी श्री ठाकुरजी के संग खेलनो है। इहाँ श्री नन्दरायजी, श्री यशोदाजी पधारे उहाँ श्रीवृषभानजी, श्रीकीरतिजी पधारी। तातें लाज करिकें में होरी नांही खेली। तातें लाज आज सबन को जितनों, तातें मेरो केसरी पीत धुजा लैके श्री ठाकुरजी के सनमुख रोपो। सो श्रीस्वामिनीजी की केसरी पीत धुजा करि ललितादिक सखीन नें श्री ठाकुरजी के सनमुख रोपी । श्री चन्द्रावलीजी स्वेत धुजा सखीन सों कहिकें कीए। ललिताजी लाल धुजा कीए, श्री यमुनाजी के भाव सों स्याम धुजा सखीन ने लीयो। बिसाखाजी भाव सों गुलाबी धुजा। और सखीन के भाव अनेक धुजा, वेजनी, लहरिया की करंजी

पिस्तई आदि कोटानिकोटि धुजा श्रीस्वामिनीजी की धुजा के पीछे रोपें, श्री स्वामिनीजी की धुजा के पाछें श्री चन्द्रावलीजी के पाछें श्री यमुनाजी की पाछें कुमारिका पाछें, सब स्वामिनीजी कीसखीन को सहचरी के हती, या क्रमसों यामें यह जताए। जो श्री स्वामिनीजी के रसकें पाछें सबन को रस की प्राप्ति हैं।

या प्रकार श्री स्वामिनीजी के आदि सबन की धुजा की शोभा अनेक प्रकार बनीं। सो श्री ठाकुरजी या प्रकार धुजान को देखिकें मधुमंगल सों कहें, जो भैया ! मेरो हर्‌यों धुजा हैं, सो पीत धुजा के सनमुख रोपि देहुँ। तब तत्काल मधुमंगल उठिकें श्री ठाकुरजी को हर्‌यो धुजा ले श्रीस्वामिनीजी के पीत धुजा के सनमुख रोपि दीयों, ताको भाव यह है, जो पीत रंग श्री स्वामिनी आदि सर्व गोपी ब्रज की और स्याम रंग श्री ठाकुरजी को सो दोऊ मिलिकें हर्‌यो होत है। तब श्री स्वामिनीजी नें मधुमंगल सों कही, जो तू मेरे धुजा के सनमुख कहा कारन सों धुजा रोप्यों ? तब मधुमंगल नें कही जो पीत धुजा के मुखिया सों हरे धुजा के मुखिया को आज मै ब्याह करोगों। काहे ते मैं ब्राह्मण हों, मेरो भैया कुँवारो हैं, सो आज ब्याह होई तो आछो, यह सुनिके सखा गोप गोपी श्री ठाकुरजी हँसे, तब ललितादिक सखी बोलीं। जो मधुमंगल तू बडो ढीट है, तातें सबते पहले तोही को छिरकोंगी, तेरी सोभा पहलें करावनी हे। यह सुनिकें मधुमंगल तत्कोल नित्य करन लाग्यो, और कह्यों जो बड़ें बाप की बेटी तबही जानों जो जब मेरे सोभा करोगी।

या प्रकारसों अनेक चटक-मटक सों नित्य करन लाग्यों, इतने मे चारि पाँच सखी दौरिकें मधुमंगल कों पकरिकें ले गई तब

मधुमंगल श्रीठाकुरजी कों श्रीवलदेवजी को पुकार्‌यो, जो मोकों वेगि छुड़ावों इहाँ सखान सहित श्री ठाकुरजी, श्रीबलदेवजी सब हँसे बोले कोई नांही, तब मधुमंगल नें जान्यों, जो मोको कोई छुड़ावेगो नांही, तब श्रीस्वामिनीजी आदि सबन सों कह्यो जो मोकों तुम छेड़ि देऊँ, तो मै श्री ठाकुरजी को पकराइ देऊँ। तब श्री स्वामिनीजी हँसकें मधुमंगल को छोडिके कही, जो तू श्री ठाकुरजी को पकरावें, तो तोकें इच्छा भोजन कराउँ, जो माँगो सोई देहुँगी, तब मधुमंगल नें कही, जो अबही तुरन्तही ले आउँगों, परि मेरे संग कोई को करि देहु, तब श्री स्वामिनीजी नें ललिता सों कही, जो तू थोरी सो दूरि मधुमंगल के संग जा, छल करिकें श्री ठाकुरजी को पकरिकें इहाँ ले आऊ। तब ललिता थोरी सो दूरि गई तब मधुमंगल नें ललिता सो कह्यो, जो तू रंचक अपने नेत्र मूंदे, इतने में मधुमंगल पीछे ते आई ललिता को गोद मे उठाइके श्री ठाकुरजी के निकट ले गयों, तब हँसिकें श्री ठाकुरजी कहे जो भले मैया तू अकेलो गोपीन को जीति आपु बचिकें ललिता के लैके आयो, तेरी बराबरी चतुराई कोई में नांही है। तब सखी गोपी सब हँसे और मधुमंगल ते ललिता नें कहो, जो मोसों छल कीयो हैं भली बात है, पाछें मधुमंगल तो श्री स्वामिनीजी नें कही, जो यह तो आछी नांही कीयों ? जो मेरी सखी की हँसी कराई। तब मधुमंगल नें कह्यो , जो कहा करों ! तुमारे पास ते कबहुँ कछु खाइवे को पहरिवे की तो मिलत नांही ! और कृष्ण के पास तो मैं नाना प्रकार के भोजन करत हों, सो मैं तुम्हारी जीत कैसें कराउँ। तब श्री स्वामिनीजी नें हँसिकें कही, जो यह जाति को ब्राह्मण है।

सो याकों खानपान बहुत प्रिय है। पाछें मधुमंगल सों कही, जो तू एक वार श्री ठाकुरजी कों हमकों पकराइ देह तो हम तोकों नाना प्रकार की सामिग्री वस्त्र आभूषन देंहि। तब ललिताहु नें मधुमंगल सों कही, जो तू मोंको छुड़ावे, और श्री ठाकुरजी को पकरावें तो मैं हूँ, तोको नाना प्रकार की सामिग्री वस्त्र आभूषन देऊँ। तब मधुमंगल नें कह्यो जो एसोई कौतुक करिकें अब देखो छुडावत हों। तब श्री ठाकुरजी ललिता को पकरिकें मुख में गुलाल माँडिकें केसरि अरगजा सों छिरकि कें सर्वांग भाव सहित परस कीए। तब ललिता भीतर ते तो बहुत ही प्रसन्न भई जो भली भई मैं पकरि गई, श्री ठाकुरजी के अंग को परस तो भयों, और ऊपर मनसों कही जो यह कहा कीयों ? मधुमंगल मेरी लाज गमाई , पाछें मधुमंगल नें श्री ठाकुरजी सों कह्यो, जो भैया तू मेरो मनोरथ पूरन करि एक काँधे पर ललिता को बैठाइ, मै दौरिके धुजा की फेरी देकें तेरो ब्याह करों, तब श्री ठाकुरजी नें कह्यो, जो फेरी देत, मै गोपी सब दैरिकें पकरें तो मेरी तेरी दोउन की हाँसी होइ। तब मधुमंगल ने कही जो भैया मेरे संग तुमको कोउ पकरेगो तो मेरो चाहे सो करियो।

देखों मैं अकेलो ही जीति सब गोपीन में सों ललिता को उठाई लायों, तातें मेरे आगें कोइ गोपी तेरे निकट आवें नांही। जो कदाचित कोई गोपी आवे तो चिन्ताहूँ नांही। तोकों छल करिकें बचाई देहुँगों। जामैं तू प्रसन्न होइंगो सोइ मैं करूँगो, तब श्री ठाकुरजी मधुमंगल के काँधे ऊपर विराजे। पाछे एक ओर ललिताहूँ बैठी तब मधुमंगल धुजा के नीचे जाइ सात फेरी फिरकें पाछें

गोपीन की दिसा कों दोर्‌यो। आछी भाँति श्री ठाकुरजी कें चरणाबिन्द पकरें तब श्री ठाकुरजी कहें, जो भैया मधुमंगल तू मोही सों छल करेगों, यह बात आछी नाहीं, तब मधुमंगल नें कह्यो, जो भैया मैं तोकों जानत हों, तू मेरी जीव लेइगो भार क्यों वढ़ाबत है। तब श्री ठाकुरजी कहें, पाछे को फिरि नाँहीं तो और दावूँगो। तब मधुमंगल नें कह्यो पाछें को तो सर्वथा ना फिरोंगों, तिहारें मनमें आवें इतनों भार करिके मेरो जीव लेऊँ। तब श्री ठाकुरजी नें औरहू भार बढ़ाइकें दाव्यों, तब मधुमंगल सों चल्यों न गयों, तब गोपीन को पुकार्‌यों जो वेगिही आयकें श्री ठाकुरजी को पकारो। उततें गोपी सब कोपिकें दैरी तब श्री ठाकुरजी ने औरहू भार करिके दाव्यो सो मधुमंगल को दरद होय आयो, धोवती विगरि गई। परन्तु श्रीठाकुरजी को पकरिकें बैठि गयो, छोड़्यों नांही। इतने में ही सब गोपी आइकें श्री ठाकुरजी को पकरि लीयों, तब मधुमंगल नें कह्यो जो मोको बोहोत दुःख भयो।

तब सब गोपीन ने कही जो भले मधुमंगल तू बड़ो सामर्थवान है। तोकों दुख कहा भयो ? तब मधुमंगल नें कह्यो जो श्री कृष्ण नें एसो भार मेरे ऊपर कीयो, जो मोंको वमन भयो, धोवती सगरी बिगरि गई। तब सगरे ब्रजवासी ब्रजभक्तन सखन सहित श्री ठाकुरजी हँसे, तब गोपीन ने कही जो मधुमंगल तू बड़ो निर्ल्लज्य हैं, अब वेगि जायकें स्नान करि आवो। जो तुमकों सामिग्री, आभूषन वस्त्र देई, तब मधुमंगल नें कह्यो जो मोकों अब कछु नांही चाहियें, बिनही लीये मेरी यह दिसा भई है, और जो लेउँगो, तव कहा जाने मेरी कौन दिसा होइंगी ? ता उपरान्त तुम मोको निर्लज्ज

कहत हो, तब श्रीठाकुरजी ने श्री चन्द्रावलीजी सो और ललिताजी सों कह्यो जो यह मधुमंगल झूँठो है, खर चूनों ही यानें गेर्‌यो खरचू के नाम लेकें, खेल मे ते भाजिवे कों यह कर्‌यो है सो मैं कहि दीयों अब तुम मधुमंगल को गयो ही जानियो। तब श्री चन्द्रावलीजी और श्री ललिताजी नें मधुमंगल कों पुकार्‌यों तब मधुमंगल को रीस आई, सो धोवती खेलिकें दूरि डारि दीनीं, तब ललिता,श्री चन्द्रावलीजी के सनमुख दौरिकें कह्यो जो तुम श्री कृष्ण के बचन मानिकें मोकों झूँठो कीयो, सो तुमही मोकों आछी नई धोवती देऊँ, तब ललिता श्री चन्द्रावलीजी लाज पाइके भाजि गई। कही जो यह निगोड़ो कहूँ पकरि लेइ तो हमारी हँसी होइगी। तब मधुमंगल निर्लज्य होइकें होरी की गारी अनेक प्रकार की गान लाग्यों। तब श्री चन्द्रावलीजी और ललिता नें अपनी सखीन सो कह्यो, जो या मधुमंगल को पकरिकें कछु सिक्षा दई चाहियें, तब सखीन नें छिपकें पीछें ते आय मधुमंगल को पकरिकें गरे में बड़ी एक दुन्दभी डारिकें पाग उतारिकें पेट और पीठ सों बाँधी, तेल की अनेक गागरि ले नख सिख ते सखीन नें न्हावायो , तब सगरो सरीर स्याम रंग होय गयो, पाछें अबीर गुलाल छिरकिकें अनेक प्रकार के चित्र अंग मे वनाय अनेक झकझोरनि कीयो। सो झक झोरनि मै मधुमंगल को जनेउ टूटिके पाइन में जाइ उरझो। तब मधुमंगल नें रिस करिकें कह्यों जो आजु मैं तुम्हारो पिता जैसो लाग्यो। सो देखो तुम अपने पिता को कैसो श्रृंगार करत हो, तब यह बांनी गर्व सहित मधुमंगल की सुनिकें गोपी सब अत्यन्त कोपिकें परस्पर कहन लागी, जो आजु या मधुमंगल को एसो करो। जो फेंरि हमारे सनमुख निर्लज्ज होयकें कबहूँ न बोले।

सो सखीन नें उरद के चून मे गुड़ को पानी डारिके तामें गोद डारिकें सगरे केस में लगाइ ओर सब अंग में लगायों गोछन में तुमकरिहा लगाय कानन सों दोऊ ओर दोइ टूटी चलनी बाँधि माथे पर एक टूटो सूप बाँधिकें, एक मरकट बैठारि, गरे में थपेमा अपरान की माला पहराई, तब मधुमंगल ने अपने गरे में दुन्दभी हती, सो होलें बजाइकें निर्त करत पुकारिकें सगरे ब्रजबासीन कों सुनायकें कह्यों जो आजु मेरे भैया श्री कृष्ण को सगरी गोपीन सो ब्याह होइ गयो है, सो मोकों यह सब पहरावनी दई हैं और काहूकों चाहिये तो लेऊ फेरि ऐसो कबहु न पावोगे।

या प्रकार मधुमंगल को देखिकें माथे को मरकट हतो सोऊ अनेक भाँति करि निर्त्य करन लाग्यो। ताकों देखिकें सब ब्रजवासी बहुत हँसे, तब श्री बलदेवजी नें मधुमंगल सों कह्यो जो भैया यह पहराबनी तुमको ही चाहियें तुम ब्राह्मण हो, तुमकों सोहियत हैं। यह मधुमंगल के ख्याल में सबही मस्त होइ गए। तब श्री ललिताजी सखींन सहित छिपकें श्रीठाकुरजी को श्रीबलदेवजी कों पकरिकें मुरली पीताम्बर छीन लीयो सो मुरली पीताम्बर को भाव कहा ? जो मुरली सगरे ब्रभक्तन को परबस करि लिए, तातें छीनी, और पीताम्बर माया रूप अछादन करत है। सोउ दूरि कीयो। और ललिताजी नें श्री बलदेवजी की आँखन में अंजन दीयो, काहे तें, श्रीबलदेवजी को देवरूप मर्यादा सहित है। जों अंजन दीए ते यह रहस्य लीला को ध्यान न होइ, जैसें निकुँज भाव होय तो इनकों दीसे नांहीं, तब श्री ठाकुरजी, श्रीबलदेवजी पकरें गए, तब ललिता श्री चन्द्रावलीजी ने श्रीबलदेवजी कों पीताम्बर छीन लीयों

तब मधुमंगल ने श्री स्वामिनीजी सो कह्यो जो श्री ठाकुरजी की और श्री बलदेवजी की मेरी सी दिसा करो। तब श्री ठाकुरजी कहे, जो मधमंगल अबही ताँई तेने नांही मानीं ? तब एक सखी अपनें मुख मूँदि पनारें की एक गागरि भरि लायके मधुमंगल के ऊपर डारी। सो कछुक तो मधुमंगल के ऊपर परी । और कछुक मधुमंगल छींन छींन सखीन कें ऊपर डारिके गागर फोरी नांही अपने पास राखी ।

तब श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी सों विनती करिकें कहे जो मै तुम्हारो हो मोको कछु पहरिवे को देऊ। मेरी हँसी होइगी। तब श्री स्वामिनीजी अपनी चूनरी में ते एक टूक फारिकें दीयो। सो तनिया करिकें श्री ठाकुरजी नें पहर्‌यों, सो इहां यह भाव हैं, जो पीताम्बर माया रूप है। तहाँ दूरि करि श्री स्वामिनीजी नें अपनो गोप्य करि राख्यों। तब श्री ठाकुरजी ने नेंनन ही में मधुमंगल सों कह्यो । जो कीच गागरि में बची हे। सो दाऊजी पर डारो। तब मधुमंगल पीछे ते आयी कें कीच की गागरि श्रीबलदेवजी पद ढोरी। तब श्रीबलदेवजी रिसाइकें मधुमंगल को पकरिवें को दौरे । तब मधुमंगल रिसायकें भाजिकें कह्यो जो मेरे ऊपर क्रोध क्यों करत हों ? मोसों तो श्री कृष्ण ने कही, तब मैं कीच तुमारे ऊपर डारी हैं सो मधुमंगल तो भाजि गयों पकरन न पाए। तब श्री बलदेवजी श्री ठाकुरजी के निकट आए कें कहे, जो तू तो चूनरी को टूक पहरें है। और लाज रहित बैठयों हैं और मैं नागों डोलत हों, तापे मधुमंगल कों सिखाय कें मोको कीच सो न्हवायो। तब श्रीठाकुरजी ने श्रीबलदेवजी सों कही। जो सुनो दाऊजी ! गोपिन को सनेह मोपे बहुत है। काहे तें

मेरी मुरली पीताम्बर सब छींन लेय है, परन्तु मैं उनसों कछु कहत नांही, तुम काहूके ऊपर क्रोध करत हो, काहूको मारिवे को दौरत हो, तातें गोपी तुमको वस्त्र नांही देइंगी। जैसो गोपीन को सनेह हमारे ऊपर है, तैसो सनेह श्री रेवतीजी को तुमारे ऊपर है, तातें तुम उनके पास जाइके बिनती करो, तथा चरनन परो, तब वे दरद विचारि देइँगी। तब ललिता नें कही, जो मोकों तो श्री रेवतीजी नें सिखाई हती, तब मैं श्री बलदेवजी कें बस्त्र छीने है। नातर मोमें इतनो कहा सामर्थ हती ?

ताही समय मधुमंगल नें कह्यो जो मोहूकों श्री रेवतीजी नें सिखायो तब मैं कीच डारी है। और भैया श्री कृष्ण तू साँच कहत है। देखो में कबको नागो डोलत हों। सो यह राजा की बेटी दूरि ठाढ़ी हँसत है, मोकों वस्त्र का टूक नांही देत, जो एसो याके पिता के घरकों अभिमान है, सो भैया आजु याको अभिमान दूरि करूँगों। तब श्री बलदेवजी, श्री रेवतीजी कें सनमुख गए, सो श्री रेबतीजी, श्री बलदेवजी को देखि बोहोत लाज पाइकें कही-जो तुम मेरे निकट मति आवो तुम नागें हो, सो मेरी हँसी होइंगी, तब श्री बलदेवजी क्रोध करिकें बोले जो आज मैं तेरो सब अभिमान देरि करोंगों। राजा की बेटी है सो तेरे मनमें बहुत अभिमान है। तामें तू मोंकों वस्त्र नांही देत है। यह कहिकें श्री बलदेवजी आइकें श्री रेवतीजी कूँ पकरे। तब श्री रेवतीजी बहुत लाजमान होइ नेंनन में जल भरिकें श्री ठाकुरजी सों नेंनन हो में कही, जो अब मेरी लाज तुमारें हाथ है। तातें तुम वेगि मेरी लाज राखो, मैं तुमारे सरन हो। तब श्री ठाकुरजी दौरि श्री बलदेवजी की भुजा पकरिकें कहें, जो दाऊजी तुम

तो परम चतुर हो। मर्यादा के रक्षक होइ सब गोपीं गोपन कें आगें स्त्रीजन को पकरत हों, या बात में तुम्हारी बढ़ाई नांही है ! तुमनें ही तो मोकों पठायों हो। नांहि तों अब तुमही मोंकों कछु पहरिवे को देहु। तब श्रीठाकुरजी, श्रीरेवतीजी सों कहें जो भाभीजी दाऊजी तुमसों विनती करत हैं सा तुम इनको कछु पहरिवें को देऊँ। तातें दाऊजी की लाज रहें, तब श्री रेवतीजी ने अपनी साड़ी फारिकें टूक दियो। सो लेकें श्री ठाकुरजी श्री बलदेवजी सों कहे, जो दाऊ यह टूक वेगि पहरि लेहु, तब श्री बलदेवजी तनिया करिकें पहरन लागे। सो ओछो भयों आगें ते खेचें तो पाछे ते छूटि जाय तब श्रीबलदेवजी, श्रीठाकुरजी सों कहें, जो भैया श्री कृष्ण ! यह साड़ी को टूँक तो ओछो भयो। तब श्रीठाकुरजी कहें, जो दाऊजी बोलो मति यह इतनोहू टूक तो बड़ें भागिन ते मिल्यों है। ताते एक हाथ तें आगे दावे रहो, एक हाथ सों पीछे दावे रहो। तब श्री बलदेवजी ऐसे ही कीए, दोऊ हाथसो दोऊ ओर दावें रहे, तब सगरे ब्रजवासी गोप गोपी सब हँसे, पाछें श्रीठाकुरजी ललिता के पास तें अनेक भाँति की सामिग्री लेकें कहें जो दाऊजी अरोगोगे ? तब श्री बलदेवजी कहें, जो भैया भूख तो बोहोत लागी हैं परन्तु मेरे दोऊ हाथ तो आगे पाछें लगे है। तब श्री ठाकुरजी कहें, जो दाऊजी तुम चिन्ता मति करो, तुम दोउ हाथ तो थामें रहों मैं तुमकों अपने हाथ सों अरोगाई देहुँगो। तब श्री बलदेवजी को अरोगावन लागे। सो यह सोभा देखिकें श्रीस्वामिनीजी सखीन सहित बोहोत हँसी और गोप-गोपी सखा सहित श्रीठाकुरजीहु हँसे, सो श्री बलदेवजी को लाज लागी।

सो खेलमें ते भाजिकें श्री यशोदाजी के पास घर में आए। तब

श्री ठाकुरजी मनमें कहें, जो दाऊजी घरमें गए है, सो श्री यशोदाजी सों झूँठी साँची लगावेगे तो मोकों श्री यशोदाजी बहिरे निकसन न देइंगी। तातें मैं हू घरकों चलों, तब श्रीठाकुरजी हू मधुमंगल को समझायकें घरकों चले। सो श्री यशोदाजी के पास आयें, सों श्रीयशोदाजी तीनों को स्वरूप देखिकें हँसि कें कही, जो हे श्रीबलदेवजी वस्त्र तुमारें और मेरे कन्हैयाँ के हतें सो कहा कीए ? मैं तो तुमारेई भरोसे से अपनें वारे कन्हैयाँ कों पठाबति हों। सो तुमही अपनी यह सोभा कराए, तें मेरे कन्हैयाँ को कैसो आछे राखोगे। तब श्री बलदेवजी कहें, जो मैयाजी यह सब सोभा भई हे, सो तेरे कन्हैयाँ के गुन है। इननें गोपीन कों सिखाइ दीए, सो सब गोपी मिलिकें मेरे वस्त्र छीन लीए। पाछे तें कन्हैयाँहू के वस्त्र छीन लिए। तब श्री ठाकुरजी, श्री यशोदाजी सों कहें जो अरी मैया दाऊजी तो झूँठ बोलत हैं। सो दाऊजी आजु होरी खेलत में बड़े बाबरे ह्वे गए, सो पाहले तो अपनों आभूषन वस्त्र डारि दीए। पाछें मोहूँ को पकरिकें मेरें हूं आभूषन वस्त्र सब डारि दीए।

ताही समय श्री स्वामिनीजी अपनी सखी ललिता, बिसाखाजी को संग लैकें श्री यशोदाजी के पास आइकें असीस दई, जो अखन्ड सुहाग तुमारो होइ, तब श्री यशोदाजी ललिताजी सों कहें जो हे ललिताजी तेने मेरें कन्हैयाँ की ऐसी सोभा करी, अब मेरे कन्हैयाँ कों तेरे संग कबहु न जान देउँगी। तब ललिता नें कही, जो भलें श्री यशोदाजी अपने श्री बलदेवजी कों तों मनें नांही करति हों ? मेरे ऊपर रिस करत हेां, मैं तो अपनी चूनरी की नई साड़ी तामें ते दोऊन कों टूकि फारि दीयों है। सो दोऊ जने

पहिरें हैं। तब मधुमंगल ने श्री यशोदाजी सों कह्यों ,जो तुम ललिता के ऊपर क्यों खीजत हो, यह तुमारे पुत्र की और मेरी अपनी हूँ सोभा.तुमारे श्री बलदेवजी ने करी है, और काहू की सामर्थ है सो करि सकें तब श्री यशोदाजी नें कही जो भले श्रीबलदेवजी होरी में बावरे होइ गए हैं। अब मैं तुमसों कहा कहों। और होइ तासों कहों। तू नित्त ई की भंग पान करिकें मस्त रहत हैं। देह की सुधि नांही रहत है, तातें मन मे जो तरंग उठी तेंसे ही कियो।

तब यह सुनिकें श्री बलदेवजी कहें रिस करिकें जो हे श्री यशोदाजी तुमारो पुत्र बडो साँचो है। और ललिता मधुमंगल आदि बड़े साँचे हैं। एक मैं ही झूठो हो, तातें अब तुम बोलो मती, तुम आपुस में झूँठ बोलत हों। मोकों सुनि-सुनि कें अंग में रिस उपजत हैं। तब श्री यसोदाजी नें हँसिकें श्री कृष्ण को आछी भाँति स्नान कराय वस्त्र आभूषन पहराए। पाछें श्री बलदेवजी को स्नान कराय वस्त्र आभूषन पहरायें, पाछे मधुमंगल कों गोपनकों स्नान कराइ वस्त्र आभूषन पहराए। पाछें नाना भाँति की सामग्री सैंन भोग की श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी, श्रीबलदेवजी और श्रीरेवतीजी कों अरोगाई गोप गोप सगरे बृजबासीन कों अरोगाई वीरा देकें मेवा मिठाई वस्त्र आभूषन श्री स्वामिनीजी ललितादिक सब सखीन कों देकें भली भाँति बिदा करिके कही जो भोर ही बेगि पधारियों, तब सब सखीन सहित श्री स्वामिनीजी श्रीकीरतिजी कें पास पधारी, इहाँ श्रीयसोदाजी सबन को बिदा करिके श्री ठाकुरजी श्री बलदेवजी को न्यारे-न्यारे सैन मन्दिर ते सैज्यो पर सैन कराये, उहाँ श्री कीरतिजी श्री स्वामिनीजी की आरती करि गोद में ले नाना प्रकार

की सामग्री सखीन सहित अरोगाइ पाछें आपु अरोगी, सुन्दर सैज्या बिछाइ, श्री स्वामिनीजी कों लेकें संग ही सैन कीए। ताही समय अर्द्धरात्रि कों श्री स्वामिनीजी कों श्री ठाकुरजी नें होरी खेल कों रंगमंग स्वरूप कों स्मर्ण आयो। सो तत्काल तीव्र महा बिरह प्रगट भयो। तब सगरो अंग-अंग तातो होइकें अग्नि की सी ज्वाला बढ़न लागी। सो सैज्यो पर ते उतरिकें कीरतिजी नें कही। जो हाइ दैव मेरी प्रानप्रिय बेटी कों काह भयो ? जो मैं पास सोबत हती, सो याकों एसी बिरह की आँच लागी, ताही समय ललिता विसाखा आदि सखी वुलाइकें कीरति जी नें कही जो अब मेरी बेटी कों होरी के खेलन में मति ले जैयो ! काहे तें काहू की दृष्टि खोटी लागी हैं, अब मैं कहा करों ? कोनको दिखाऊँ कहाँ जाऊँ, कोन -कोन रोग याकों प्रकट भये है।

तब ललिता ने कीरतिजी सों कही जो तुम नेंक दूरि होय जाओ तो मैं इनको अंग देखिकें पूछि लेऊँ। तब श्री कीरतिजी चोवारे ते ऊतरि कें नीचे आई। तब ललिता बिसाखा निकट जायकें श्री स्वामिनीजी के कान में कही। जो श्री ठाकुरजी तुमारे पास पधारत हे, मोसों सत्य बचन कहें हैं, यह सुनत ही विरह सब दुरि होइ अंग-अंग सीतल होइ गयो। मुख उघारिकें देखें तो ललिता विसाखा ठाढ़ी हैं, तिनसों कही जो अब श्रीठाकुरजी मोकू कब मिलेंगे ? तब ललिता नें कही जो अबही तुमारे पास पधराइ लावति हों, पाछें श्री कीरतिजी कुँ बुलाइके ललिता नें कही, जो तुमही कों भ्रम भयों है, तुम अब देखो तो सही, तब कीरतिजी आइकें देखें, तो श्री स्वामिनीजी को अंग सब सीतल है, परम सुख

रूप है। तब ललिता सों कीरतिजी नें कही जो यह कहा अब ही को अंग एसो तातो भयों, और अबही सीतल भयो। तब कीरतिजी सों ललिता ने कही, जो तुमतो भोरी हों, यह तिहारी बेटी कों दुःख तो सपने हू मे नांही हैं, सदा एक रस आनन्दमय हैं। और तुमकों घर की नाना प्रकार की चिन्ता फिकर रहत है। सो रोग तो तुमारी देह में है। तातें तुम अज्ञानता करि यामें देखत हों और तुमसों कहि नांही सकत हों, तुमारे सरीर में मन में रोग है, तातें तुम इनकों संग लेके सैन मति करो। कहूँ तुमारो रोग इनकों लगेगो तो केसी होइगी। और सास्त्र में एसे कहें हैं, जो पाँच वर्ष ते बेटी तथा बेटा होय तो ताकों पास ले सैंन करें, तो महादोष है। सो तुम्हारी बेटी तों आठ बरस की होन आईं तुम पास लैकें सैन कीयो, सो दोष परत हैं, तब यह सुनिकें कीरतिजी ललिता कें पाइन परन लागी, कही ललिता तु सगरी बातन में चतुर है, मेरे रोग निश्चय है, सो मैं यामें देखत हो। और पास लेकें सोई सो सास्त्र उलंघन हू महादोष रूप हें । तातें मोकों यह दुःख भयो, अब ललिता बिसाखा तुम मेरी बेटी कों अपनें पास ही नित्य सैन करावो, तामें मेरी बेटी सुख पावे सोई तुम करियों । तब चित्रसारी में ललिता बिसाखा श्रीस्वामिनीजी को सैन कराए, और कीरतिजी अपनी सैज्या मन्दिर में जहाँ श्री वृषभानजी सहित सैंन कीए। इहाँ श्रीस्वामिनीजी ललिता जी ऊपर बहुत प्रसन्न होइ कही, जो ललिता भली चतुराई करी, नित्य कौ दुख दूर कियो। पाछें ललिता कों अपने कंठ की माला मोतिन की पहराईकें कही, जो अब श्री ठाकुरजी मिलें तो सगरे सुखरूप होंइ। तब श्री ललिता बिसाखा खिरकी में मारग

ऊतरिकें श्री ठाकुरजी कों पधराइ लाई, पाछें बन में पधारि नाना प्रकार कें रास बिलास करिकें पिछलें पहर अपने -अपने घरन में पधारे, पाछें भोर भयो तब श्रीस्वामिनीजी स्नान करिकें भोजन करि, सब सखीन सहित श्रीनन्दरायजी के घर आईं। इहाँ भली भाँति पधराय पाछें श्री ठाकुरजी कों श्री स्वामिनीजी कों स्नान कराई, नाना प्रकार कें श्रृंगार करि श्रृंगार भोग अपने मुख्य गोपी सखन कों अरोगायो पाछें श्री यसोदाजी नें राजभोग अरोगायों। ताऊ कें पाछें सखा ग्वाल गोपी सखी श्री बलदेवजी आदि सब वृजवासीन कों आछी भाँति भोजन कराए।

पाछें दोऊ स्वरूप समाज सहित होरी कें डाँडें पास आएं। तब दोऊ दिसा सों पिचकारी चलीं, अबीर अनेक रंग के दोऊ दिस ते उड़े, सो आकास सब छायकें अंधेरो होय गयो। तब सब सखी दोऊ दिसा ते दौरिकें सगरे सखन कों गोपन कों श्री बलदेवजी को भिजोइ श्री ठाकुरजी को अकेलो करिकें पकरि लाई। तब ललिता बिसाखा आदि सब सखी गुलाल छिरकन लागी कोऊ अनेक रंग के अबीर छिरकत है, कोऊ कुमकुमा मारत है, कोऊ गेंदुक, कोऊ पिचकारी, कोऊ अरगजा, कोऊ फुलेल, कोऊ चोबा, कोऊ के कुसुम को रंग कोऊ तेल या प्रकार छिरकिकें श्री ठाकुरजी घबराय लीए। परन्तु कोऊ सखी मानत नांही, तब श्रीठाकुरजी बहुत अकुलानें, सो श्रीस्वामिनीजी देखिकें तत्काल श्री हस्त अपने हस्तकमल में डारिकें श्री ठाकुरजी के निकट आयकें अपने हृदय सों लगाइ जल लैकें, अपने हस्तकमल सों श्री ठाकुरजी को मुखारबिन्द धोइ अपने कोमल अंचल सों पोंछि कंठ में भुजा मेलिकें अपनी छतरी

पर बैठारिकें मधुरी वानी बोलति भई हैं, प्राननाथ आजु आपनें बहुत श्रम पायों ये सखीजन सगरी अज्ञानता सों भरी है, गमारि हैं ! कछु सनेह को लेस हूँ नांही हैं ? तातें एसी निरद ह्वेंके या भाँति तुमकों छिरक्यों हैं। पाछें सखी सब सकुचि पाइकें आगें ठाढ़ी हैं, तिनसों श्री स्वामिनीजी नें कही जो मेरे प्राननाथ श्री ठाकुरजी परम सुन्दर ! सुकुमार ! तिनसों तुम सगरो होरी के खेलन जोग्य नांहीं हो ? केवल गवारि सर्वथा हो तातें आजु श्री बलदेवजी आदि सखा गोप है। तिनसों होरी खेल्यो करो मन आवे तैसेई उनको छिरको। मैं अकेली ही श्री ठाकुरजी सों खेलोगी, तब श्री ठाकुरजी, श्री स्वामिनीजी सों कहें, जो आजु सखींन मोको बहुत ही अकुलायो, परन्तु तुमनें दोरिकें मेरी रक्षा करिकें मोकों बचायों, तातें तुमारो एक उपकार है। ताकों मैं फलतों देवे में मेरी सामर्थ नांही है। तातें आगे ते ये तुमारे संग ही होरी खेलूँगों। सदा सर्वदा या प्रकार परस्पर सनेह की वार्ता गलवाँही दीए करत हैं, यह कारन रस भाव जान्यो।

अब सखींन नें जानी जो श्री स्वामिनीजी हम पर अप्रसन्न भई है। सो हमारों अबकहूँ ठिकानों नांही । ताते अव एसों उपाइ होइ, जो अब वेगि प्रसन्न होंइ तो हमारो जीवन सुफल होइ। पाछें ललितादिक सखी नाना प्रकार की सामिग्री थारमें धरि लाई सो दोऊ स्वरूप प्रीति पूर्वक आरोगि अचमन करि, वीरी आरोगे, पाछें श्री स्वामिनीजी नें सखीन को आज्ञा दीनीं जे तुम श्री बलदेवजी को ओर सगरे सखन कों पकरिकें लाओं तब सखी प्रसन्न होइकें क्रोध करकें सखान सहित श्री बलदेवजी को पकरे।

सो ललितादिक सखी श्री बलदेवजी कोप करिकें श्री ठाकुरजी और श्री स्वामिनीजी के आगें ले आई तब श्री बलदेवजी ने श्री स्वामिनीजी सो कह्यो - जो तू कृपा करिकें मोकों छुड़ाइकें श्री ठाकुरजी कें पास बैठाएं पाछें अष्टसखा आदि ग्वाल मधुमंगल आदि सखा सबन को सखी पकरिकें श्री स्वामिनीजी के आगे ले आई, तब सबन ने कही, अब हमकों छुडावों, तब आपुनी सखींन सो श्री स्वामिनीजी ने कही, जो ये सगरे सखा मधुमंगल आदि सब ढीठ हैं ताते इन सबन को आछें बाँधो, सो श्री स्वामिनीजी तो सखान के बँधाइवे मे लगीं। और उहाँ श्री ठाकुरजी, श्री बलदेवजी कों संग में लैके भाजे, सो एक महा सघन निकुंज कोकिलाबन होय पधारे। तब ललिता, बिसाखा, श्री चन्द्रावलीजी आदि अपनी सखी तहाँ राखिकें, श्री स्वामिनीजी सों नजर बचाइकें सब श्री ठाकुरजी पास आइ नैंनन ही में श्री ठाकुरजी सों विनती करी। जो हम पर कृपा करिकें बलदेवजी कों इहाँ ते टारिकें हमारे मनोरथ पूरन करो ऐसो समय हमकों फेरि न मिलेगो।

तब श्रीठाकुरजी, श्रीबलदेवजी सों कहें - जो एक सखा श्री रेवतीजी की साड़ी खेचत हैं, तब ललिता नें कही, मैं अबही देखिकें आई हों, एक ग्वाल श्री रेवतीजी की साड़ी खेंचत हैं, अनेक भाँति की हँसी मसकरी करत हैं, सो श्रीरेवतीजी बहुत लाज करि दुःखी है, सो मोसों कहों, जो श्री बलदेवजी आवें तो मोकों छुड़ावें, तातें तुमकों सुनाय दीयो है, तब श्रीठाकुरजी कहें जो दाऊजी वेगि जायकें श्री रेवती को छुड़ाय लेहु, तब श्रीबलदेवजी श्रीरेवतीजी को छुड़ावन गए, इहाँ श्री चन्द्रावलीजी ललिता बिसाखा

स्यामला आदि परम आतुर होइ श्री ठाकुरजी सों कहें, हस्त पकरिकें विनती करी, जो आज हमारो समय आयो है, तातें हमारो मनोरथ पूरन करौ, तब श्रीठाकुरजी सब सखी श्रीस्वामिनीजी प्रतिरूप धरिकें सबन के मनोरथ पूरन करन लागे, इहाँ मधुमंगल ने श्रीस्वामिनीजी सों कही, जो तुमतो सबन कें बाँधिवे में लागी हों, परन्तु श्री ठाकुरजी कहाँ गए ? तातें मोकों छोड़ो तो में तुमकों श्री ठकुरजी कों मिलाऊँ, यह सुनिकें पाछें कूँ श्री स्वामिनीजी देखें, तो श्रीठाकुरजी, श्रीबलदेवजी दोऊ नांही है, और श्री चन्द्रावलीजी ललिता, बिसाखा की सखी हतीं तिनसों पूछी जो तुम्हारी स्वामिनीजी कहाँ गई है ? तब उनने कहों हमकों तो ठीक नांही है, हम इहाँ तुमारे पास हैं तब श्री स्वामिनीजी नें मधुमंगल आदि सब सखान कों छोड़िकें अनेक सामिग्री भूषन बसन देकें कही, जो वह कपटी बड़ो छैला है, ताको तुम वेगि ही बतावों, सखीन सहित कहाँ गयो है वह ?

तब मधुमंगल श्री स्वामिनीजी को पघरायकें जहाँ सखींन सहित श्री ठाकुरजी हते, तहाँ ले जाइ ता कुंज की आढ़ में ठाढ़ी करि आपु सरकि आयों। यह लीला देखन की मेरी सामर्थ्य नांही है। सो श्री स्वामिनीजी देंखे तो श्री ठाकुरजी गलबाँही दीये सखींन संग परस्पर नाना प्रकार रहस्य बिनोद करत है, तब यह देखिकें श्री स्वामिनीजी सों रह्यो न गयो, सो ललिता की आड़ मे मध्य के पाछे ते दोरिकें जाइकें श्री ठाकुरजी की फेंट पकरिकें क्रोध सहित अनेक बचन कहें जो अरे कपटी तू याही लाइके है ? तू मेरे आगें नित्य ही झूँठी सोंह खात है, आजु तुमारी सबन की चोरी बोहोत दिनमें

पकरी है। यह सुनत ही सखी सब सोच करिकें न्यारी ढ़ाडी होइ रहीं और श्री ठाकुरजी लाज पाइ नीची दृष्टि करि सब सखींन की सोभा देखिकें, न्यारी ढ़ाड़ी सेंन ही मे कहें, जो बिना बिचारे तुम्हारो कह्यो कर्‌यो, तातें हमकों तुमको दोनोंन को कठिन परी, पाछें श्री स्वामिनीजी अनेक प्रकार के उराहनें के बचन कहिकें क्रोध करि मान कीयों, जो अब तुमसों कबहू ने बोलोंगी, एसे कहिकें मान मंदिर में पधारीं, तब श्री ठाकुरजी ललिता बिसाखा सों कहें, जो तुम कछु एसो विचार करों तासों मान छूटें, तब ललिता बिसाखा आपु नाना प्रकार कें कोटि उपाइ कीए, परन्तु रंचक हू मान न छूटे, तब ललिता बिसाखा हारिकें श्री ठाकुरजी के पास आइकें कही जो हमतो आपुनी बुद्धि अनुसार अनेक उपाइ कीए, परन्तु श्री स्वामिनीज आजु मान गाढ़ो कीयो हैं। सो क्यों हू छूटत नांही है ताते आपु पधारिके कोऊ जतन करो तो मान छूटे, तब श्री ठाकुरजी सुन्दर सखी कों भेष धरि विजना हाथ में ले श्री स्वामिनीजी के पाछें जायके बैठे, तब ललिता श्री स्वामिनीजी के पाछें जाइकें बैठी, फिर ठाढ़ी होइ सनमुख जाइकें विनती करो जो हे प्यारीजू तुम्हारे दरसन बिना गिरधरलाल बहुत दुःखी है। यातें तुम चलिके अपने प्राननाथ कों सुख देहूँ, तब श्री स्वामिनीजी ने कही, जो अरी ललिता तू मेरे आगें उह स्याम कपटी को नाम मति लेइ मैं स्याम रंग हू आजु ते नीलाम्बर छोड़यो, और अंजन हू न देउंगी, स्याम कंचुकी हू न पहरोंगी, वन के भमर को न देखोंगी, कोकिला के सब्द को श्रवन न सुनोंगी, मृगमद कबहू न लगाऊँगी, मरकतमनि कंठ में कबहूँ न पहरोंगी। नीलमल कबहूँ करसों न

छूबोंगी, तातें तुम स्याम को नाम मेरे आगे मति लेहु, तब श्री ललिता ने कही, तुम कहाँ स्याम रंगते न्यारी हो ? नक वेसरि करत हो परन्तु उह स्याम रंग एसो है, ताको लागत है ताको छोड़त नांही हैं, अजहूँ तुमारे पीछें लगि रह्यो हैं। यह सुनिकें श्री स्वामिनीजी चकित होइ पीछे को देख्यो, सो ताही समय श्री ठाकुरजी नें हँसि दीयो तब तत्काल श्री स्वामिनीजी को मान छूटि गयो, सो आपुहू हँसि दीए, तब श्री ठाकुरजी अपनें हृदय में अलिंगन दे अपने अंक मे लेके बिराजे, तब ललिता आदि नाना प्रकार की सामिग्री दोऊ स्वरूप कों आरोगाय पाछें कोकिलाबन में नाना प्रकार के बिलास करिकें रीति विपरीति रमन कीए। सखीजन जाल रन्ध्र मे होइकें नाना प्रकार की लीला कों अबलोकन करत है, यह लीला अत्यन्त गोप्य हैं, तातें रसात्मक जन बिचारि-बिचारि कें हृदय में अनुभव करिकें रस कों पान करत है। तातें या बन को नाम कोकिलाबन हैं।

नाथजी को पाटोत्सव

अब फागुन वदी ७ को श्री नाथजी को पाटोत्सव, ताको भाव यह है, प्रथम लीला जहाँ नित्य हैं, तहाँ प्रथम श्री चन्द्रावलीजी के घर फागुन अदी ७ कों श्रीजी पधारे हैं, ताही भाव सों श्री गुसाँईजी की अवतार लीला हैं, तहाँ श्री गुसाँईजी, श्री चन्द्रावलीजी को स्वरूप हैं, परन्तु अब जगत में प्रगट विप्ररूप हैं। तातें यहाँ भाव भीतर कों गोप्य करनार्थ हैं, मलेच्च को भय परवत पर करायकें फागुन बदी ७ के दिन श्री नाथजी, श्रीगुसाँईजी के घर मथुरा पधारें, ताकों यह कीर्तन हैं।

"रह्यो मोहि श्री बल्लभ ग्रह भावें"

ताको अभिप्राय यह है, जो घर धनी घर न होइ और जहाँ जाइकें रहनों भोजन करनों यह अत्यन्त स्नेह को लक्षण हैं, तातें श्री गुसाँईजी को बुलाइवे की अपेक्षा न राखी, अपनों घर जानिकें पधारे अथवा दूसरो भाव कहत हैं, जो श्री गुसाँईजी घर होइ तो श्री गोवर्द्धनधर घर पधारे जानिकें, महा प्रेम आनन्द सों विप्र भेष को भाव छूटि जाय, श्री चन्द्रावलीजी रूप प्रगट सबके आगे होइ यह रस काहूकों जतायवे जोग्य नांही हैं ताके लीए श्री गुसाँईजी प्रदेस में हुते, तब पधारे और भावात्मक श्री चन्द्रावलीजी को रसरूप तो श्री गोवर्द्धनधर पास अहर्निस लीला करत हैं, सो श्रीजी के संग घर पधारिकें, नाना प्रकार की सामिग्री आरोगाई मुख्य सामग्री ता दिन जलेबी है, श्रीचन्द्रावलीजी को अधरामृत रूप ताते श्री गुसाँई के उत्सब में मुख्य हैं, ता दिन केसरी कुलह केसरी बागा धारन करें, याको यह अभिप्राय जाननों, श्री चन्द्रावलीजी अपनी कुँज में जुगल स्वरूपसों पधारे है, चार्‌यो जूथपति श्रीस्वामिनीजी साज सहित, ताते सब छाछ कें बड़ा मीठो साक तोन कूढ़ा आदि धरत हैं और अनसखड़ी में मेवावाटी सेव के लड्डू विसेष कर धराए। चार्‌यो ही भावात्मक है जैसे डांडो रोपनी पून्यो के दिन मीठी कचोरी श्री स्वामिनीजी के कपोल के भाव ते हैं, पून्यो को चन्द्रमा आकरा हैं और फागुन बदी ७ दिन श्री गुसाँईजी, श्री गोकुलवास कीए और ताही दिन श्री नबनीत प्रियाजी के मन्दिर की नीम रात्रि को खोदी है। यादवेद्रदास ने ओर ताही दिन श्री गोकुलचन्द्रमाजी, श्रीगुसाँईजी के घर पधारे

है। श्री रघुनाथजी के लीए श्रीगोवर्द्धनधर श्रीगुसाँई के पास श्री नवनीतप्रियाजी श्रीआचार्यजी रूप इत्यादि भावसों परव तथा उत्सवन के दिन घर में रहत हैं।

या प्रकार अनेक भाव पूर्वक अपने मनोरथ करत है। सप्तमी के दिन पधारे ताकों भाव यह हैं, खटगुन धर्म संयुक्त धर्मी सर्वलीला बिसिष्ट इतने में अर्पे पुष्टिमार्ग में यह हैं, जो उत्सव की सामिग्री बाजींत्र गानादिक अनेक कोतूहल वीर्य यह है। जो या कलिकाल में सर्वदोष को दाविकें पुष्टिमार्ग द्वार पर प्रगट लीला कीए। एसे माया अनेक या मायावादीन के मत को खण्डन करि भक्तिमार्ग को स्थापन कीए, यह श्रीजी श्रीगोवर्द्धनधन सात स्वरूप आदि पुष्टिमार्ग की सब रीत साक्षात् कोटिकंदर्प ते सुन्दर दरसन , ज्ञान यह जूंठनि सखड़ी प्रसादी अनसखड़ी खासा मार्यादा की सेवकी आदि को ज्ञान विचारि भगवद् स्वरूप ब्रजभक्त के भावात्मक सारखी कलपित पुष्टि पुरूषोतम रूप श्री कृष्ण तिनके स्वरूप को ज्ञान वैराग्य यह जो भगवद् सेवा के आगे और घर्म जपतप संजम नबधा भक्ति हुती। इन सर्व सेवा के पाछें मनमें सगरी सेवा को भाव ताकी भावना कारे रस को अनुभव मानसी करनी, या भाव ते सप्तमी के दिन श्री नाथजी को उत्सव हैं ता दिन राजभोग में यह धमारि गावत है।

"धनि धनि नन्द जसोमति धन्य श्री गोकुल गांम
धन्य कुँवेर दोऊ लाडिलें बलि मोहन जाकें नाम।।
भेख विचित्र बनाईयों यह भूषन बसन सिंगार।
निज मन्दिर ते सजि चले बालक तरूण वृद्ध और नार।।
गिरवरधर इत रस भरेहों मुरली मधुर बजाइ।"

इत्यादिक भाव पूर्वक सिंगार करि निज मन्दिर गिरिराज ते श्री गुसाँईजी के घर पधारिकें अनेक बिहार आदिक श्री चन्द्रावलीजी की कुँजमें करि रससों भरिकें मुरली बजाय सगरे ब्रज की बधू बुलाइ पाछें होरी खेले। तातें पुष्टिमार्ग में यह रीति है, जब श्री ठाकुरजी को राजभोग आवे तब श्रीजी होरी खेलें, श्री स्वामिनीजी, श्रीचन्द्रावलीजी सहित होरी खेलें, ताते दोई खेल होत हैं, गोविन्दस्वामी जी धमारि यातें पहले गावत हैं। श्री दामा सखा कों प्रागट्य प्रिय हैं, श्री स्वामिनीजी.कें भाइ रहस्यलीला के अहर्निस अनुभवकर्ता पुष्टिरस लीला को अनुकूल वृषभानजी के घर ते पधराय लावनों, इहाँ उहाँ के समाचार प्रीत के बढ़ावन हारे तातें इनके कीर्तन ते श्री गोवर्द्धनधर और श्रीस्वामिनीजी बोहोत प्रसन्न होत है। ता दिन न्योछावर होत हैं, सो श्री चन्द्रावलीजी थारमें मोती की आरती दीवडा धरिकें कीए, बिरह न्योछावरि कीए, अपनों सर्बांग प्रभु को समर्पण कीऐ। ता भावसों आरती न्योछावर होत हैं, और अनेक भाव है, मनमें भक्तजन अनुभव करत है, फागुन सुदी ८ कों होलाष्टक लगत है, ता दिन ते गारी भाषा भारी खेल होत है, ताको अभिप्राय यह हैं, एतन्यमार्गी भावना अनुसार यह होरी हैं, सो श्री स्वामिनीजी की हास्य रूपा अन्तरंगी सखी हैं, सो श्री स्वामिनीजी की आज्ञा पाइ बसन्त ऋतु में कामकों जन्म हैं, तब यह होरी तकहू भीतर प्रगट होइ सगरे लोगन को उन्मत्त रसरूप करत हैं। जामें रात्रि दिन कामसात्र युक्त यह लीला है। तातें होलाष्टक कों कछु नौतन सामिग्री अरोगाइयें, राजभोग में उत्सव मानिये और फागुन सुदी १० के दिन कुँज ता दिन अभ्यंग और खेल भारी, ताको भाव

यह है ग्यारस, बारस, तेरस, चौदस, चार्यों, दिन में चार्यो जूंथपति को मनोरथ है। तामें प्रथम कुँज की ग्याऱस ता दिन श्री स्वामिनीजी को खेल अभ्यंग श्री स्वामिनीजी करत हैं, मुकट काछनी धारन करत हैं, सो जैसें मोरकला करि रसदान करत है, तैसें व्रजभक्तन कों जतावत हें, निकुंज के भाव ते मानादिक बिहार है, तातें यह कीर्तन गोविन्द स्वामी कों।

"ते मोहन को मन हर्‌यो तो बिन रह्यो न जायरी प्यारी"

पाछें ता दिन सैंन में गुलाल यातें उड़ावत हैं, जो श्री स्वामिनीजी की कुंज में सगरी रात्रि होरी रसरूप श्रीजी खेलत हैं, या भाव ते कुँज हैं, ता दिन ते डोल के कीर्तन गावत हैं सो यातें जो डोल अत्यन्त रहस्य लीला हिंडोरा की नांही हैं, तातें कुँज की ग्यारस ते अत्यन्त रहस्य लीला हैं, तातें डोल गावत हैं, और फागुन सुदी १२ के दिन श्रीयमुनाजी के भाव सों भारी खेल हैं सैंन में गुलाल उडें डोल तक गवे तेरस के दिन श्रुतिरूपा श्री चन्द्रावलीजी के मनोरथ ते खेलत हैं, सैंन में भारी गुलाल उड़ें डोल गवें, कबहू चोदसि के दिन होरी होइ, चोदसि के दिन कुमारिका आदि सब सखीन के भाब ते खेलें, भारी सो भारी गुलाल उड़ें, डोल गवें, कबहू चोदसि के दिन होरी होइ चोदसि के दिन कुमारिका आदि सब सखींन के भाव त खेलें। भारी सो भारी गुलाल उड़ें डोल गवें कबहू चोदसि की होरी होइ, तब यह भावना है, कुँज की ग्यारस के दिन श्री स्वामिनीजी और श्रीयमुनाजी मिलिकें खेलें। एक ओर द्वे द्वादसी कों श्री चन्द्रावलीजी को खेल सामिग्री श्रीयमुनाजी के भाव की बारस को राजभोग मे आरोगें । तेरसि में कुमारिका आदि सर्व स्वामिनी के भाव, यह भाव

विचारिकें चौदस की होरी होत हैं, अब होरी के दिन बड़ो पर्व मानि श्री स्वामिनीजी अभ्यंग श्रीजी कों करावत हैं ता दिन उरद के बरा छाछ के और सेव तीन कूढ़ा मीठी साक मेवाबाटी, गूंझा सेव के लडुवा, सकरपारा आदि सामिग्री खेल बड़ो सगरे दिन ब्रज में खेलें गोपी ग्वाल सखा श्री बलदेवजी ब्रजभक्त संयुक्त मातो खेल गारी निर्ल्लजता को अंगीकार कीए। पाछें सैन में मातो खेल खेलिवेमें लकुटी ठाढ़ी धरायें है। डागकों खेल तामें यह जताई जो लकुटी पिस्टका ब्रह्मारूप हैं, ताकी बेद मर्यादा उलंघन करि अपनी पुष्टि ब्रज में बिहार लीला को स्थापन किए। होरी के चार पहर रात्रि में चार्‌यो जूथपति स्वामिनीजी सों क्रीड़ा विहार, तातें सैंन में गुलाल उड़े, और डोल के कीर्तन गवें। होरी की रात्रि को होरी को मंगल तरंग आदि डारिकें गुलाल अबीर सों पुजन करत हैं ताको भाव यह है, श्री स्वामिनजी श्री ठाकुरजी को ब्याह हैं सो सखी जन करत हैं। तातें गारी ब्याह की साखोचार भावात्मक श्रुति की रूचा श्रुतिरूपा कहत है, कुँज मंडप सोइ ब्याह को मंडप गांठि दोऊन की ललिताजी जोरे है, ब्याह मे होम, अग्यारी, सो होरी की पूजा जताए। सो गोप्य अग्नि पूर्ण पुरूषोत्तम को ब्याह जानिके आए, लोय में प्रगट होत हैं या भावते सगरी कुँज में खेलें, ताते मातो खेल कहत है। पाछें दूसरे दिन डोल। सोउ अत्यन्त गोप्यलीला हैं। और महाभावना जो परिबा दोऊ ताको श्री वृषभानजी, श्री ठाकुरजी को न्योतो करत हैं। अबही ब्याह प्रसिध् ा नांही भयो। परन्तु मनमें श्री स्वामिनीजी को वर श्री ठाकुरजी कों निश्चय करि राख्यों हैं, तातें भाव करिकें अपनें जमाई जानिके

घर बुलाइ नाना प्रकार की सामिग्री अरोगावत हैं, गुलाल अबीर छिरकि कें तिलक आरती भेट करि नन्दालय मे पाछें प्रभु पधारत है, यह भावना करनी। अथवा होरी के दिन कीरतिजी, वृषभानजी अपनें भावात्मक सम्बन्धी यशोदाजी, श्रीनन्दरायजी को जानिके श्री ठाकुरजी के होरी खेलन की सामिग्री गुलाल, अबीर, केसरि चोबा पिचकारी तथा आभूषण वस्त्र सखीनके हाथ तवकड़ी टोकरी साजिकें अनेक बाजे सहित ब्राह्मण वेद धुनि करत तब नन्दालय में पठावत हैं। सो श्री यशोदाजी द्वार पर आय सर्खीन सहित प्रीति पूर्वक पधरावत हैं। तहाँ नन्दालय में होरी खेलत हैं, ब्राह्मण की सूचन करत है, बरसाने ते नंदगाँम वृषभानजी को प्रोहित आयो, इत्यादिक भाव विचारनो। अब याही भाव सों श्री यशोदाजी हू मनमें विचारि नित्य करत हैं, जो मेरे पुत्र की सगाई कीरतिजी की बेटी सों होइ, यह भाव जानिकें होरी के दिन लहंगा सारी, चोली, काजर, बेंदी, सिन्दूर, आभूषन-वस्त्र अनेक प्रकार के गुलाल अबीर नाना प्रकार की सामिग्री मेवा मिठाई सखीन संग अनेक वाजिंत्र ब्राह्मण वेद धुनि करत वृषभानजी के घर में पठावत हैं। सो जब समाज सहित वृषभानपुरा में आवें है।

तब कीरतिजी द्वार पे सर्खीन सहित आइके भाव पूर्वक अपने घर मे पधरायके सब मिलिकें होरी खेलत हैं, तहाँ श्री नन्दरायजी के ब्राह्मण को अनेक भाँतिसो छिरकिकें नाचत गावत हैं या पद के भाव ते विचारनों। *"नंदगाँम को पाँड़े ब्रज बरसाने आयों"* इत्यादिक भावना के अनेक प्रकार है, यह होरी हास्य रूपासक्त हैं, ताको यह भाव है, जो चारो बरन आश्रम सबके छूटि गए। ब्राह्मण, क्षत्री

वैस्य, सूद्र, गृहस्थ, वानप्रस्त, सन्यासौ, ब्रह्मचारी, तपेश्वरी, जती, मुनी, ज्ञानी, पण्डित सबके ज्ञान को हू हरि लीयो। तातें ब्रज को होरी सर्वोपरि रहें। भावात्मक रहस्य लीला रसिकजन हैं, तिनको जान परत है। तातें ब्रजचौरसी कोस में कामसास्त्र युक्त लीला रस सास्त्र में चौरसी आसन है, या भाव ते ब्रज सगरो रसरूप हैं, तातें देवता आदिक या ब्रज की रज की कनिका को वाँछना करत हैं, तोऊ श्री आचार्यजी की श्री गुसाँईजी की कृपा बिना ब्रजलीला को अनुभव रस को ज्ञान न होय। और होरी में अनेक स्वांग काम कामिनी, डिगंगर, जोगी के स्वाँग बनावत है, सोऊ भावत्मक लीला है, कबहू श्री ठाकुरजी बनत है, कबहू सखन को बनावत हैं, कबहू श्रीस्वामिनीजी की सखी बनत हैं,लीला दोऊन के मिलाप सिद्ध करनार्थ तथा होरी मे राख उड़ावत हैं, तातें यह है अलौकिक जोगिनी अग्नि उछारत हैं,भयानक रूप हास्यरूपासक्त अलौकिक दोऊ स्वरूप कुंजन कें क्रीड़ा कीए तातें प्रतिबन्ध रूप मर्यादा गोप गुरूजन को भयानक रूप अग्नि दिखाय रस को गोपन करावत है, इत्यादिक रास मे मसाल रूप है।

।। इति श्री हरिरायजी कृत बसन्त होरी की भावना संपूर्ण।।

अथ डोल उत्सव की भावना

सो डोल में दोय प्रकार के भाव हैं, एक श्री याशोदाजी श्री नन्दरायजी अपने वात्सल्य भावासों अपने पुत्रको डोल झुलावत है, और एक निकुँज में तहाँ आदि श्रीवृन्दावन, श्रीगोवर्द्धन, की तरेहटी में सदां ही बसन्त रितु रहे है। सुन्दर झरना श्रीगिरिराज

ते झरत हैं, अमृतहू ते आम जल सीतल मधुरता करि लता द्रमबेली अनेक बन सब हरित पुष्प फल सयुक्त भार करिकें धरती सों नविकें अपने जो भगवान हैं, तिनकों नमस्कार कर कहत है, या ब्रज में श्रीवृन्दाबन, श्री गोवर्द्धन, श्रीयमुनाजी, श्रीगोकुलजी सम्बन्धी जितनी वस्तु है, तिन सबके भोक्ता आपही हो, आपके ही योग्य या सर्व पदार्थ हैं, अति अलौकिक पदार्थ जो हमारे पुष्प, फल है, आप पधारिकें अंगीकार करो हमारी सर्व देहको अंगीकार करो, तो हम अपने बड़े भाग्य समझें। तब श्री ठाकुरजी ने श्रीवृन्दावन श्रीगोवर्द्धन के अभिप्राय ते श्रीजी डोल उत्सव के मिस करिकें सबन कों अंगीकार कीए। ते बृक्षादिक जो वनस्पति हैं, सो सब ठोरके परम भगवदीय हैं, ताहू में वे श्री गिरिराज के हैं, सो पुष्टिमार्गीय भगवदीय हैं। केवल श्री पूर्ण पुरूषोत्तम की लीला सम्बन्धी,ताते श्री पूर्ण पुरूषोत्तम को यह नाम है, *"सक्त मनोरथ पूरकायनमः"* सो ऐसो भगवदीय को जानें, श्री गिरि गोवर्द्धन के ऊपर श्री गोवर्द्धनधर डोलको उत्सव करत है। तहाँ यह आसंका होय जो भागवदीय होइकें श्री ठाकुरजी सो कछु मनोरथ की प्रार्थना करे नांही अपने सुखके लीये श्री पूर्णपुरूषोत्तम सों प्रार्थना करें, सो मुख्य पुष्टिमार्गीय भगवदीय नांही, जो इहां कहें, जो श्रीवृन्दावन गिरिराज के भगवदीय वृक्षनकें, आपु सार्वांग अंगीकार करिकें लीए, श्री पूर्णपुरूषोत्तम ते प्रार्थना कीए। यह मुख्य मार्ग में कैसें संभव हैं ? यह संदेह होय तहाँ कहत है, जो ब्रजभक्त है तथा ब्रज सम्बन्धी वृक्षादिक भगवदीय हैं, सो प्रार्थना अपने सुखार्थ नांही करत है, काहे ते गोपीजन श्रीपूर्णपुरूषोत्तम को नाना प्रकार की

सामिग्री आभूषन, वस्त्र अनेक प्रकार के विनती प्रार्थना करिकें अंगीकार करावत हैं। सो केवल प्रभु के सुखके उनर्थ अपनें सुख के अर्थ नांही। तेसें ही ब्रज के श्रीगोकुल के, श्रीगिरिराज के वृक्षादिक है, सो पुष्टिमार्गी में भगवदीय हैं। श्री पूर्ण पुरूषोत्तम की लीला तादृस्य को वृक्ष करन हारे है, उद्दीपन नाना प्रकार क्रीडा रसमें सम्बन्धी हैं। दोय प्रकार की लीला ब्रज में हैं उद्दीपन भाव दूसरी आलंबन भाव। तामें रसक्रीड़ा में जितनों उद्दीपन भाव विसेष नित नई-नई रचना होइ, त्यों-त्यों आलंबन क्रीड़ा रसकी सृष्टी होय जैसें दोय रस हैं। हास्यरस, बिरहरस, हास्यरस तें विरहरस की वृद्धि होय, विरहरस सो लज्जा की वृद्धि होय। ताते उद्दीपन के भाव के अर्थ ब्रज के वृक्षन के मनोरथ श्री पूर्णपुरूषोत्तम के अभिप्राय हृदय पूर्वक सगरे बृज भक्तन के अभिप्राय पुर्वक मनोरथ पूर्ण कीए।

तातें श्री पूर्णपुरूषोत्तम प्रसन्न होंय डोल उत्सव श्री गिरिराज पर कीए। तहाँ यह संदेह होय, जो श्री गोकुल में बाललीला हैं सो डोल को उत्सव कैंसे संभव हैं ? किसोर लीला में प्रसिद्धि ही हैं, तातें ठोल की रचना में तो केवल रहस्यलीला हैं, जहाँ जामें श्रीबलदेवजी सखी मोदन कों निकट संभव हैं नांही तातें श्री गोकुल में डोल को प्रभाव कैसे संभव है ? और श्री गिरिराज में कौन प्रकार है ? यह संदेह होय तहाँ कहत है, डोल की लीला है, सो परम रहस्य है, जैसे हिंडोरा हू में श्री बलदेवजी सखा गोपन सो छिपाइकें हैं, तहाँ श्री गोकुल में या प्रकार है, श्रीयशोदाजी अपने मनोरथ के वात्सल्य रससों डोल रचना अपनें घरमें भीतर

जहाँ काहूकी गम्य नांही, सो सोरह हजार अग्निकुमारिमा है, तिनसों सिद्ध कराइ तथा बृज सम्बन्धी श्रीस्वामिनीजी श्री चन्द्रावलीजी ललिता प्रभृति इनहू कों मुग्ध भाव देखिकें श्री यशोदाजी नें कही तुमहू मिलिकें डोल की रचना करो। ऐसो खेल करो जो होरी खेल के जो दस दिन पाछें आवेंगे सो मेरे पुत्र को होरी की लीला सों मन भरि जाय। कुमारिका श्रीस्वामिनीजी ललिताजी प्रभृति सब बोहोत प्रसन्न होइ मनमें कही, जो नित्य होरी के खेल में गोप सखा गुरूजन के आगें हमारो मनोरथ पूर्ण होत नांही हैं। आज बड़ी बात भई, सो श्री यशोदाजी मनमें एकाँत खिलाइवे को आई। तातें आज हमारो मनोरथ पूर्ण होइंगो ? तब ब्रज की सकल स्वामिनी कुमारिका ललिता बिसाखा प्रभृति सब सामिग्री सिद्ध करी, केला के खम्ब आम की डार माधुरी की लता अनेक वृक्ष पल्लव आदि और अनेक फूल फल सुन्दर नन्दालय में कुंज की रचना करत भई। तब श्री यशोदाजी बड़े-बड़े मुनिन सों मुहुर्त पूछे। सो उत्तरा फाल्गुनी के नक्षत्र में डोल ठहराए, तातें याको आसय यह है, जो उतरा याते कहें जो फाल्गुन उतर्‌यो। चैत्र को आगमन लग्यो। और सगरे फाल्गुन फलरूप यह उत्सव है, उत्तराते फाल्गुनी कहत हैं, और रात्रि में बसन्त रितुके दोय महीना कहे है। फाल्गुन चैत्र सो फाल्गुन में उद्‌दीपन अनेक खेल रहस्य विनोदी, और चैत्र में आलम्बन कुँज रचना तातें फूल मंडली पुष्टिमार्ग में होत हैं।

या भाव ते उतरा नक्षत्र को डोल को अंगीकार कीए। श्री नन्दालय में जैसें हिंडोरा रोप्यो, तैसें डोल रचना कीए है।

"हिंडोरा नांही रोप्यो नन्द अवास

हरि को डोल देखि ब्रजवासी फुले यह नन्दालय को डोल।"

सो मुग्ध भावसों श्री यशोदाजी श्री ठाकुरजी को अपने बालक जानि ! और श्री स्वामिनीजी हू को कुमारी बालक जांनि डोल झुलावत है तथा बाल भावसों श्री ठाकुरजी हठ करिकें मुग्ध भावसों कहत है- हे मैया ! मैं यह वृषभानकी बेटी के संग डोल झूलोंगो। और मैं खेलूंगों तब श्रीयशोदाजी अत्यन्त मुग्ध बालक जांनि मनमें प्रसन्न होइकें दोऊ स्वरूप कों सिंगार करिकें डोल उत्सव रचना करत है। तहाँ गोपभार्या श्री चन्द्रावलीजी और ललितादिक सखी हैं, सो अपनें अपनें गृह ते श्रृंगार करि श्री यशोदाजी पास आइकें प्रार्थना करत हैं, जो हे श्रीयशोदाजी ! तुम अपने पत्र को दरसन करावो, तब श्रीयशोदाजी बृजक्तन को निरविकार स्नेह जानि सबन पर प्रसन्न होय अपने पुत्र को बृजभक्तन कों सोंपत है, जो हे ललिता ! तुम मेरे पुत्र को डोल आदि झुलायकें, नाना प्रकार की सामिग्री अरोगाइकें रक्षा कीजो।

या प्रकार सगरे बृजभक्तन को मनोरथ सिद्धि होत है। अपने-अपने गृह की अनेक प्रकार की सामिग्री मिलाय, प्रभु को अंगीकार करावत है। अथवा सोरह हजार अग्निकुमारिका है। तिनमें मुख्य भक्ति है, तिनमें श्री स्वामिनीजी को आवेस है, तातें इनहू को नाम श्री राधाजी और मुख्य सहचरी श्रीस्वामिनीजी की है, इनकें हृदय में बैठिकें श्रीस्वामिनीजी सर्व पदार्थ को भोग करत हैं, जैसे मथुरा के स्वरूप के भीतर बृजभक्तन के भावात्मक स्वरूप हैं, सो मथुरा के क्रियात्मक स्वरूप के भीतर होइ सर्व भोग बृजभक्तन को सामिग्री करत हैं, और दुष्ट कंस संबंधी

राक्षसगन को मारन आदि अनेक मर्यादा संयुक्त लीला, सर्व मथुरा के सम्बन्धी क्रियात्मक सो स्वरूप वेद मर्यादा लीला करत है। यह भाव बिचारनों । तातें नन्दालय में अग्निकुमारिका सोरह हजार में मुखिया सो श्री ठाकुरजी के संग डोल झूलत हैं सो श्री यशोदाजी को या भाव की खबरि नांही हैं, श्रीयशोदाजी यह जानत है, जो मेरे सोरह हजार बालक कन्या है, सो मरे पुत्र कों खिलाइकें नीके राखति हैं, काहे तो कुमारिका श्री ठाकुरजी सों दोय वर्ष बड़ी हैं, तातें श्री यशोदाजी अपने पुत्र के रक्षार्थ उन कुमारिकान को बोहोत ही आछी भाँतिसों राखत है। तेसें ही प्रीत सहित कुमारिका श्री ठाकुरजी की रक्षा करत है, काहे ते कुमारिका सर्व भगवद् भाव सामर्थ है। तातें श्री नन्दरायजी गोडदेस पूर्व दिसा ते सोरह हजार कुमारिका कन्या लाए हैं। जो कंस राजा कों देकें प्रसन्न राखेंगे। सो वे तो सगरी भगवद्भोग्ता सामिग्री हैं। तातें श्री नन्दरायजी के गृह विषे रहि गईं। सो नित्य विहार श्री ठाकुरजी सों और कुमारिकान सों होत हैं, सो यह रहस्य लीला को पान श्री नन्दरायजी श्री यशोदाजी को नांहीं है, काहे ते वे तो वात्सल्य रस में मग्न हैं। तातें कुमारिका हूँ श्री ठाकुरजी के संग डोल झूलत हैं। तातें राजभोग सहित चार भोग और चार खेल सो चार्‌यो स्वामिनीन के जूथ के मनोरथ ते नित्यलीला में तो कोटानिकोटि भोग अनेक स्वामिनीन को अनेक प्रकार के भाव ते श्री ठाकुरजी अरोगत हैं, ताको पार नांही। तातें श्री आचार्यजी महाप्रभु के पुष्टिमार्ग मे सर्व ब्रजभक्तन की रीति की सेवा है। तातें पुष्टिमार्ग में कहत हैं। तामें कोटानिकाटि जूथपति स्वामिनी बृज में तिनहूँ में चार्‌यो ,जूथपति मुख्य हैं, सो

चार्‌यो के भाव ते सब रीति उत्सव कों प्रगट प्रकार कीए। जामें बृज सम्बन्धी सर्व स्वामिनीजी को भाव सिद्ध हैं ताते राजभोग सहित चार भोग और चार्‌यो खेल चार्‌यो के भाव ते होत है। या प्रकार श्री गोकुल को डोल सातो स्वरूप को नन्दालय में है।

अथवा दूसरो भाव यह है, जो श्री ठाकुरजी होरी की रात्रि श्री स्वामिनीजी सों होरी खलिकें रस वस भऐ, देहानुसंधान भूलि गऐ, तातें भोर भये श्री यशोदाजी श्री ठाकुरजी को मुख चुंबन करिकें पूछें, तब श्री ठाकुरजी कहें, मैया होरी यही वगर निकसी, तब श्री यशोदाजी श्रीनन्दरायजी सों कहें जो पुत्र होरी में बावरो भयो अब कहा करिये ? तब ललिता आदि श्री स्वामिनीजी सों पूछें, तब यह विचार कीयो जो इनसों होरी को खेल करि इनको मन बाहिर निकासिये।

तब डोल उत्सव को आरम्भ करि डोल पर पधराए। तातें अभ्यंग भाव सों नांही है। जो प्रभुन को देह की सुधि तो नांही, अभ्यंग केसो ? तब प्रथम खेलमें थोरो सो चित्त ठिकाने आयो। तब श्रीयशोदाजी कहें, जो कछु अरोगो, तो फेरि खिलाऊँ। या प्रकार तीन बार खिलाए, तीन्यो बार अरोगायकें कहें, अब आछी भांति अरोगों तो भले खिलावें, तब बड़े भोग में सर्व भक्तन को मनोरथ सहित प्रभु को अरोगाऐ। पाछें भारी खेल कीऐ, एसो होरी में कबहू नांही भयों हैं, तब श्रीं ठाकुरजी बोहोत प्रसन्न भए। सो श्री यशोदाजी अपने पुत्र को प्रसन्न देखिकें सबन कों मेवा मिठाई वस्त्र आभूषन दे बिदा कीऐ, आरति न्योछाबरि कीऐ, पाछें अपनें नित्य के मन्दिर में पधराय स्नान कराय दूसरे श्रृंगार कीयो, इहाँ

गोपन कों बुलाइकें यह कहें, जो अबीर गुलाल धोयकें सब स्वच्छ करो कहूँ मेरे पुत्र होरी की सामिग्री देखेगो तो फेरिं हठ करेगो। अनेक जतन ते याको आछी कीयो है। यह भाव है, सो अपनें मनमें विचारनो और श्री गोवर्धन वृन्दावन इहाँ श्री गिरिराज में श्री गोवर्द्धननाथजी को डोल मुख्य है। काहे ते जहाँ रहस्य लीला या तरहसू सदां अष्टप्रहर है, श्री स्वामिनीजी के संग सगरी लीला करत है, तहाँ श्री स्वामिनीजी सों और कुमारिका को देकै लीला सम्बन्धी या प्रकार सों होत है, श्री यशोदाजी अनेक प्रकार की सामिग्री सिद्ध करिकें अपने पुत्र अर्थ कुमारिका को देकें पठावत हैं। छिन-छिन में नौतन वस्त्र श्री यशोदाजी देकें पुत्र को पठाए, सो कुमारिका सब लेकें वृन्दावन गोवर्द्धन पर आयकें प्रभु कों श्री स्वामिनीजी संयुक्त अंगीकार करत हैं।

या प्रकार कुमारिका हू अनेक प्रकार की रहस्य लीला श्री चन्द्रावलीजी अनेक गृह कारज गोरस बेचन फूल बीनन आदि मिस करिकें याही प्रकार श्रीस्वामिनीजी हू गिरिराज पर जाइ श्रीजी के संग नित्यलीला विहार करत है। और रात्रि को सदां विहारदिक लीला गिरिराज पर करत हैं। या प्रकार तो श्री वृन्दावन में लीला पुष्टि है, और श्रीयमुनाजी तो चौरासी कोस तो सर्व ठिकाने सब में व्यापक हैं। जहाँ जैसो कार्य होइ, लीला सम्बन्धी तहाँ ताही रूप बिराजत हैं, इनका अंतराय नांही हैं, सदा श्री ठाकुरजी के निकट ही रहत हैं, ताते श्री बृन्दावन में हू राजभोग सहित चार भोग और चार खेल की रीति हैं। सो यह सगरे बृज में सगरे स्थल मुख्य हैं, और महाअंतरंग हैं। श्री गोकुल और श्री बृन्दावन तहाँ कोई

आसंका करै, जो ब्रज तो सबई भगवद् सरूप हैं। तुम दोई अस्थल मुख्य क्यों कहें ? तहाँ कहत हैं, जो ब्रज तो सबही परम उत्तम श्रेष्ठ हैं, तामें श्री गोकुल, श्री बृन्दाबन, गोवर्द्धन मुख्य हैं। ताको प्रमान कहत हैं।

"बृन्दाबनने गोकुलेवा तथायेमनसि कचित् इतिवाक्यात्।
बृह्मधन महर्स्यो वृन्दाबन गतःप्रितः इति वचनातः।।
बृन्दाबनें चारू बृहद्वनेमन्मनोरथ पूरयेसूरसूते।"

इत्यादिक अनेक बचन हैं, नंदालय की लीला श्री गोकुल निकुंज लीला गोवर्द्धन, श्री बृन्दाबन तातें, यह श्री आचार्यजी महाप्रभु को नाम है। *'श्रीगोवर्द्धनस्थित्युत्साह' 'श्री गोकुलकृतावास'* यह श्री गुसाँईजी को नाम । याते दोऊ अस्थल मुख्य हैं, श्री यमुनाजी के संग ते कुमारिकान कों अगीकार भयो काहे ते कात्यायनीदेवी के मिस करिके, श्री यमुनाजी को संग पूजन कीऐ। तब हृदय में भगवद् भाव बढ्यो। तातें ब्रज में श्री यमुनाजी बड़ी है, सो मुक्य हैं ! इनके सम्बन्ध इनकी कृपा बिना कबहू पूष्टिमार्ग मे प्रवेस न होइ । तातें श्री यमुनाजी के तीर पुलिन में डोल झूलत है, श्री यमुनाजी के भाव ते यह मुख्य है, सगरे बृजभक्त सुन्दर पुलिन में डोल बाँधत हैं। श्री स्वामिनीजी श्री यमुनाजी आदि सर्व भक्त प्रभू सहित अपने-अपने मनोरथ पूरन करत हैं, काहे ते श्री यमुनाजी हैं, सो अलौकिक देह सिद्धिकर्ता है। *'तदुनवत्वमेतबिता नदुर्लभतमा रतिर्मुरिपो इति वाक्यात'*, तामें ! श्रीयमुनाजी को डोल मुख्य है, और श्री गिरिराज के सम्बन्ध ते भीलनी पुलिंदी हू भक्ति उत्पति भई, काहे ते निकुँज में श्री स्वामिनीजी सहित लीला करत

हैं। ता लीला सम्बन्धी कुमकुमा अगर श्री ठाकुरजी के चरणकमल को प्रसादी लीयो। गुल्मलता पत्रन में लागि रहत हैं, सो पुलिंदी भाव पूर्वक अपने स्तन में मुख में लगाइकें अपनो विरह ताप निवारन करत ही पुलिंदी कों श्री ठाकुरजी के चरन कमल को कुमकुम द्वारा सगरी लीला को अनुभव परम आनन्द भयो, सो उनका मन प्रभु की सेवा में लाग्यो।

तातें सुन्दर कंदमूल फल डबरा में सिद्धि करिकें दूरिते धरि देत हैं, सो ब्रजभक्तन सहित प्रभु अरोगिकें पुलिंदी कों गिरिराज के सम्बन्ध ते पुष्टिलीला कीनी, रस को दान कर्‌यो, तातें यह श्री आचार्यजी महाप्रभुन के पुष्टिमार्ग में श्री गोकुल, श्रीगोवर्द्धन पर श्रींजी को डोल मुख्य है। और सगरे वृक्षहू में डोल उत्सव को प्रकार प्रसिद्ध है। काहे ते सगरे ब्रज में श्रीठाकुरजी विहार लीला सम्बन्धी स्वामिनीजी हैं अनेक गोपन के घरमें प्रगटी है, कोई को ब्याह हू भयो हैं, कोउ कुँबारी है, सो जिनको ब्याह भयो है, तिनको पति हू जैसे भूजा अन्न होय और फेरि बीज बोवें तो खेत में उपजे नांही है।

या प्रकार सों नाम मात्र श्री ठाकुरजी के परकिया भावसों रस सास्त्र में मुख्य कहें हैं, सोऊ लीला करनी है, ताकें अर्थ ब्रज भक्तन को ब्याह भयों है, जितनें ब्रजभक्तन को ब्याह भयो है, जितने ब्रजभक्त हतें सो सब भगवद् भोग सामिग्री है, महा अलौकिक अग्निरूप कोई इनकी ओर दृष्टि कीनी, और भस्म भयों, तहाँ कोई कहें, यह संदेह होइ जो तुम भगवद्‌भोग कहें, गोपीन को सम्बन्ध नांही है, सो उनके पुत्रादिक वरन कीऐ कैसे बनें ? यह संदेह होइ,

तहाँ श्री आचार्यजी महाप्रभु दसम स्कंध की सुबोधिनी में बरनन कीए हैं, भ्रमर गीतादिक अनेक ठिकानें ब्रजभक्तन के पुत्रादिक हैं, सो लौकिक विषें करिकें नांही है, श्री ठाकुरजी को परकिया रस प्रगट करिबे की इच्छा भई तब गोपन सों ब्याह माया करिकें भयों, बिना विषे माया ते पुत्रादिक हूं प्रगट कीए।

यामें संदेह न करनों, काहे तें भगवद् इच्छा ते माया को यह सामर्थ है, जो कोटानिकोटि ब्रह्माण्ड अेक छिनमें प्रगट कर सके, और देवकीजी कों गर्भ आकर्षण करि रोहिनीजी में धर्‌यो, सो श्री बलदेवजी प्रगटे। एक जोगी जोग साधिकें अनेक स्वरूप करि अनेक देही में बैठिजात है, तो प्रभु की लीला को कौन पार पावें, "कर्तु अकर्तु अन्यथाकर्तुं सर्वसामर्थ्यवान है, तातें या करिके प्राकृत प्रसिद्ध करनार्थ ब्रजभक्तन के पुत्रादिक हैं, और सिद्धान्त करिकें देखिये तो वेद की रिचा सर्व ब्रजभक्त हैं, तातें श्रुतिरूपा इनको कहत हैं, तामें दोई प्रकार की श्रुतिरूपा एक पुष्टि श्रुत एक मर्यादा श्रुत। सो सब ब्रजभक्त श्रीठाकुरजी के भोग युक्त हैं, तिनसों नित्य नौतन रासबिलास लीला है। और मर्यादा श्रुति ब्रज मे प्रगटी तिनसों श्री बलदेवजी रासबिलास करत है। या प्रकार ब्रजभक्तन कों सरूप महा अलौकिक जानिये, सो ब्रजभक्त अनेक गोपन के घर प्रगट होइकें श्री ठाकुरजी में मन लगायो। सो होरी मे तो भली भाँति सों अनेक प्रकार की लीला हैं, सो करीं, तामें ब्रजभक्तन को पूरन मनोरथ भयो नांहीं सगरे ग्वाल गोप गुरूजनकें आगें, सो नन्दालय में कुमारिका संग डोल की रचना सब देखिके श्री ठाकुरजी के संग नाना प्रकार की लीला करिकें सगरे ब्रजभक्तन नें अपने - अपने मनमें यह मनोरथ

कीयो, जो अपने निकुंज में डोल की रचना करिये, परन्तु श्री स्वामिनीजी सहित श्री ठाकुरजी पधारें तो हमारो सगरो मनोरथ पूरन होय, या प्रकार सगरे ब्रजभक्तन को मनोरथ जानिकें श्री स्वामिनीजी सहित प्रभु प्रसन्न होइकें सगरे ब्रजभक्तन सों कहें जो तुम जाइकें अपने-अपने निकुंज में डोल की रचना करो। तुम्हारे मनोरथ पूरे करेंगे।

यह सुनिकें सगरे ब्रजभक्त प्रसन्न होइकें सगरे ब्रज में अपने अपने निकुंज में डोल बाँधे सगरी होरी को साज सिद्धि करिकें प्रभु के पधराइवे को स्मरण करत हैं, तब श्री स्वामिनीजी सहित श्री ठाकुरजी सगरे ब्रजभक्तन के निकुँज में अनेक रूप करिकें पधारे। सबन के मनोरथ पूर्ण कीऐ, सर्व की सामिग्री अरोगे। अनेक प्रकार के बिहार रीति विपरीति रमन कीए, कबहुँ या प्रकार भावना करिये अथवा यह भाव विचारियें, सो श्री स्वामिनीजी आदि श्री चन्द्रावलीजी आदि सब अपने-अपने निकुंज में डोल उत्सव कीए, सो प्रभु मुख्य तो श्री स्वामिनीजी के निकुंज में पधारे, पाछें अनेक रूप धरिकें सगरे ब्रज में सगरी स्बामिनीन के निकुंज में पध ारे। सबन के मनोरथ पूरण कीऐ सगरी स्वामिनी अपने मनमें यह जाने जो श्री ठाकुरजी में सगरे ब्रजभक्तन कों होत भऐ पधारे यह भाव विचारनों, डोलको भाव अत्यन्त गोप्य निकुंज की लीला है। ताते इतने मारग डोल पर लता माधुरी आम की डार आस पास पल्लव केला सों निकुंज को भाव है, फल फूल लगे है, डोल के गादी के रत्न सैज्या रूप झारी श्री यमुनाजी रूप। चार भोग चार खेल है, कहूँ तीन भोग तीन खेल, सो यातें जो प्रथम खेल श्री

स्वामिनीजी को दूसरो श्री यमुनाजी को हैं। सो कहूँ न्यारो खेलत हैं, कहूं श्री स्वामिनीजी सों मिल्यो खेलत हैं, तातें तीन में दूसरो खेल कुमारिकान को तीसरो खेल श्रुतिरूपा श्री चन्द्रावलीजी को है। सगरे ब्रज की स्वामिनी तातें भारी खेल हैं झोटा देत हैं, सो रमनादिक हैं, बीच -बीच भोग अनूपान रमन में असमर्थ न होइ, खेल सों रसकी वृद्धि होय, उद्दीपन होइ श्री स्वामिनीजी के तीन रूप ब्रजमें मुख्य है, विहार समय प्रगटी हैं कुमारिका कुच मर्दन प्रभु कीए तहाँ ते प्रगटी हैं, तातें छोटी हैं श्री यमुनाजी श्रुति सुमृत ते प्रगटीं तातें तीन्योन को विहार प्रिय हैं, और या भावतें डोल को खेल हैं।

राग सारंग

झूलत डोल राधिका संग।
गोवर्द्धन पर्वत के उपर खेलत अति रस रंग।। १ ।।
प्रथम खेल राधे संगहु रच्यो सरल परत अंगरंग।
दूज्यो खेल रच्यो चन्द्रावलि अबीर गुलाल सुरंग।। २ ।।
तीजो खेल कीयो ललितादिक अग्नि कुमारी संग।
चौथो खेल कियो वृन्दाबन पिय मोहे रसिक अनंग।। ३।।

यह भाव है, तीन खेल भक्तन की रीति रमण एक खेल प्रभु को विपरीत रमन, डोल के दिन बसन्त पंचमी के सो सिंगार, सो याते जैसे काम को चढ़ान उतरान रसरीत में है। ता भाव ते है और डोल उत्सव में कांजी मुख्य हैं। ताको भाव यह है और उरद के बड़ा चन्द्रमा आकार श्री चन्द्रावलीजी को भाव श्री स्वामिनीजी तिनकें भाव में परपक भरो सनेंहरूप तिनकें मिरच आदि लोन

आद्रा सलोनी कुमारिका ऐ तीन्यो मिलिकें तिनमें जल श्री यमुनाजी, तिनकें भाव में मग्न भऐ। काहे ते डोल उत्सव श्री स्वामिनीजी श्री यमुनाजी के उपकंठ में मुख्य है, जैसे पूर्ण श्री यमुनाअष्टक में श्री गोकुल ही मुख्य हैं, तैसें ही डोल उत्सव श्री यमुनाजी के उपकंठ चार्‌यौ दिसा बीच पुलिंन मे यातें जो रहस्यलीला को ग्यान और कौ न होइ ? तातें जल कांजी मे विसेष करिकें श्री यमुनाजी के मनोरथ को यह डोल उत्सव है, और कांजी को सामिग्री है, और डोल झूले पीत गुलाल केसरि के छींटा सब बाही घरी धोइ डारत हे, ताको भाव यह हैं जो सगरे ब्रजभक्तन कों मनोरथ चार्‌यो जूथपति स्वामिनी तिन सबन के संग रीति विपरीति विहार, सगरो होरी के रस अनुरूप अनिर्वचनीय सगरी लीला रात्रि दिन कीए। तातें यह लीला में श्री बलदेवजी सखा ग्वाल सबन सों गोप्य है, तातें डोल झूलें पाछे श्री स्वामिनीजी ने आज्ञा दई, जो होरी सम्बन्धी सामिग्री सगरी गोप्य करि देऊ।

रंचक हू ऊपर न होय तब सखी सब मिलिकें तथा श्रीदामा आदि एकादश सखा श्री ठाकुरजी के एकादश इंद्री रूप और पुष्टि लीला के सहायक गोप मिलिकें गुलाल केसरि अरगजा चोबा के दाग सब धोइकें सुकाइ डोल सामिग्री केला के खम्ब आंबन की डार आसा पल्लव की डार बन्दनबार माला सर्व श्री यमुनाजी अपने भीतर धरि लीऐ। तातें श्री यमुनाजी में पधरावत हैं। इत्यादिक डोल उत्सव के अनेक भाव हैं, तामें कछु एक कहे है। जासू श्री आचार्यजी श्री गुसाँईजी की कृपाते हृदय में भाव भावना की वृद्धि होत हैं।

।। श्री हरिरायजी कृत बसन्त होरी डोल उत्सव की भावना सम्पूर्ण।।

◆